दो शब्द

प्राणाधार श्री सुंदरसाथजी ,

युगों–युगों से मनीषियों के मस्तिष्क में यह बात कौंधती रही है कि प्रकृति से परे ऐसा भी धाम अवश्य होना चाहिए, जो सत्व, रज और तम से पूर्णतया रहित हो। जहाँ जन्म–मरण, सुख–दुःख, काम, क्रोध, लोभ आदि षड् विकारों की कल्पना भी न हो। जहाँ केवल हो प्रेम, शान्ति, आनन्द और सच्चिदानन्द परब्रह्म से अभिन्न एकरूपता।

वेदों, उपनिषदों और अन्य धर्मग्रन्थों में इस आशय से सम्बन्धित संक्षिप्त कथन तो हैं किन्तु तारतम ज्ञान से रहित होने के कारण संसार के लोग उसे समझ नहीं पाये।

अनहोनी घटना के रूप में ब्रह्मात्माओं के चरण कमल इस मायावी जगत में पड़े जिसके कारण सच्चिदानन्द परब्रह्म को आवेश स्वरूप में आना पड़ा। श्रीप्राणनाथजी के स्वरूप में प्रकट होकर उन्होंने जो ब्रह्मवाणी कही, उसमें परमधाम का वर्णन पढ़ते ही अंतरात्मा यह पुकार उठती है कि युगों युगों से मनीषियों, साधकों एवं भक्तों ने जो कल्पना की थी, वह साकार रूप ले चुकी है।

स्वलीला अद्वैत परमधाम, अनादि, अनंत, अखण्ड और सच्चिदानन्दमयी है। मन, वाणी से परे होने के कारण यहाँ के भावों के अनुसार ही उसे अति सीमित रूप में उसी प्रकार वर्णित किया गया है, जैसे पृथ्वी को सूक्ष्म बिन्दु के रूप में दर्शाना। अपनी आत्म जागृति के लिए परमधाम का ध्यान अनिवार्य है।

ज्यों ज्यों होवे अर्स नजीक , खेल त्यों त्यों होवे दूर ।
यों करते खेल छूट्या नजरों, तो रूहें कदमों तले हजूर।। सिन. 24/13

महात्मा सुशान्त जी परमधाम की चर्चनी के स्वाध्याय में निरंतर लगे रहते हैं। यह ग्रन्थ उनके कठोर परिश्रम का फल है। धाम धनी के चरणों में प्रार्थना है कि उन पर हमेशा मेहर की वर्षा होती रहे, जिससे सुंदरसाथ को और अधिक ज्ञानामृत का लाभ मिल सके। आशा है कि यह लघु ग्रन्थ आपको अवश्य ही रूचिकर लगेगा।

आपका
राजन स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ , सरसावा

भूमिका

वंदौ सत्गुरू चरण को , करूँ सप्रेम प्रणाम ।
अशुभ हरण मंगल करण , श्री देवचंद्र जी नाम ।।
श्री प्राणनाथ निजमूलपति , श्री मेहराज सुनाम ।
तेज कुंवरि श्यामा युगल को, पल पल करूँ प्रणाम।।

प्यारे सुंदरसाथजी, ये परमधाम कोई काल्पनिक जगत नहीं है, यह सच्चिदानंद परब्रह्म का दिव्य अनादि परमधाम है, जिसे ग्रंथों में दिव्य ब्रह्मपुर धाम, अर्शे अजीम आदि कहा गया है। इसका ज्ञान स्वयं परब्रह्म ने इस 28 वे कलियुग में विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक स्वरूप में आकर दिया है। इसी ज्ञान को जानने के लिए अनेक ऋषि–मुनि, तपस्वी, तीर्थंकर, अवतार, यहाँ तक कि त्रिदेवा ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी तपस्या कर कर के हार गये परंतु इस ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सके।

इस परमधाम का कण–कण सच्चिदानंद स्वरूप है। महल, वृक्ष, नदियाँ, जड़, चेतन सभी इश्क के स्वरूप हैं। यहाँ पर कभी कोई वस्तु पुरानी नहीं होती है तथा कोई वस्तु नयी नहीं बनती है। ये अनादि, अखण्ड, अविनाशी हैं तथा परब्रह्म के ही स्वरूप हैं। यहाँ की प्रत्येक वस्तु में मुख्य रूप से चार गुण पाये जाते हैं। (1) स्वप्रकाशित (2) चेतनता (3) सुगंधि (4) कोमलता। इस दिव्य परमधाम में परब्रह्म युगल किशोर स्वरूप में विराजमान हैं, जिन्हें हम प्रेम

से श्रीराजश्यामाजी कहते हैं। इनके साथ सागर की लहरों तथा सूर्य की किरणों के समान परब्रह्म की ही अंगरूपा ब्रह्मात्माएँ रहती हैं, जिनके द्वारा परब्रह्म अनन्य प्रेम की लीला संपादित करते हैं।

इत खेलत जुत्थ सैंयन , सदा आनंद इन वतन ।
मिने राजश्यामाजी दोए, सुख याही आतम सब कोए।। परि.3/30

परमधाम से वे आत्माएँ दुख का खेल देखने की चाहना करके इस स्वप्नवत् जगत् में सुरता स्वरूप से आ गयीं एवं निजघर, निजस्वरूप को भूल गयीं। उनको निजघर की याद दिलाकर, जागृत करने हेतु यह तारतम ज्ञान लेकर पूर्णब्रह्म इस जगत् में आवेश स्वरूप से आये। साथ ही समस्त जीवों के लिए भी जन्म–मरण के चक्र से छूटने का यह सुनहरा अवसर है। अतः जो भी अपना कल्याण चाहते हैं, उन्हें एक क्षण के लिए भी परमधाम के इन सुखों को भूलना नहीं चाहिए। आत्म कल्याण हेतु यही एक मात्र साधन है।

श्री महामत् कहे ए मोमिनो, ऐ सुख अपने अर्श के।
एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे ।। परि. 16/12
एह साधन साधना होवहीं , और न कोई उपाय ।
सुपन आकार बैठ के , नूर पार विहार देखाए ।।

महामति की बड़ी वृत्त 3/8

सुंदरसाथ व समस्त धर्म प्रेमी सज्जनों को परमधाम के सुखों की लज्जत मिले, इस उद्देश्य से प. पू. श्री राजन स्वामी जी की प्रेरणा से मैंने इस ग्रंथ की रचना की है। यह कार्य परमहंस महाराज श्रीरामरतनदासजी एवं सदगुरू महाराज धर्मवीर जागनीरत्न सरकारश्री जी के आशीर्वाद से ही संभव हो सका है। इस ग्रंथ की रचना में मैंने श्रीमुखवाणी, महामतिजी की बड़ी वृत्त तथा श्रीजवाहरदासजी महाराज की बड़ी वृत्त का आधार लिया है। फिर भी कहीं त्रुटि होने की संभावना है, अतः त्रुटि मिलने पर अवश्य सूचित करें एवं अपनी चरणरज जानकर क्षमा करें ।

समस्त सुंदरसाथ की चरणरज
महात्मा सुशांत निजानंदी

<u>अनुक्रमणिका</u>

क्रमाँक	नक्शा नं.	नक्शे का नाम	पेज नं
01	108	परमधाम के 25 पक्ष	07
02	01	रंगमहल, चाँदनी चौक एवं 100 सीढ़ियाँ........	09
03	02	रंगमहल के एक भोम की शोभा........	10
04	03	दस मंदिरों के हांस की बाहरी शोभा........	12
05	04	धाम दरवाजा एवं दस मंदिरों के हांस की भीतरी शोभा........	13
06	05	बाहरी हार मंदिरों के बाहरी दीवालों की शोभा........	14

07	06	गुर्जों के बाहरी दीवालों की शोभा..	15
08	07	बाहरी हार मंदिरों के भीतरी दीवालों की शोभा.......................	15
09	08	चाँदनी चौक से मूल मिलावे तक का दृश्य..............................	16
10	09	मूल मिलावा..	18
11	10	गोल हवेलियों के चार हारों की शोभा......................................	23
12	11	पंचमहलों की शोभा..	23
13	12	दूसरी भोम के दस मंदिरों की हांस...	24
14	13	दूसरी भोम : भूल भुलवनी..	24
15	14	दूसरी भोम : खड़ोकली...	25
16	15	तीजी भोम की पड़साल...	26
17	16	चौथी भोम : नृत्य की हवेली..	30
18	17	पाँचवीं भोम के नौ चौक..	31
19	18	रंगप्रवाली मंदिर	32
20	19	छठी भोम : सुखपाल...	33
21	20	सातवीं भोम : दो ताली के हिण्डोले...	35
22	21	आठवीं भोम : चार ताली के हिण्डोले.......................................	35
23	22	नवमीं भोम : दूरदर्शिका..	36
24	23	दसवीं चाँदनी में बाग बगीचे...	37
25	24,25	दसवीं चाँदनी में देहेलान तथा गुम्मट......................................	38
26	28	सोलह हांस का चेहेबच्चा..	40
27	27	रंगमहल के चारों तरफ की शोभा	40
28	26	सात वन : अमृत वन की शोभा...	41
29	29	बट पीपल की चौकी...	44
30	30	फूल बाग...	46
31	31,32	फूल बाग के एक बगीचे की शोभा...	47
32	33	नूर बाग...	48
33	34	नूरबाग के एक बगीचे की शोभा..	49
34	35	अन्नवन...	49
क्रमाँक	नक्शा नं.	नक्शे का नाम	पेज नं
35	36	दूब–दुलीचा..	49
36	37	पश्चिम की चौगान तथा कुंज–निकुंज वन...................................	50
37	38	लाल चबूतरा और बड़ोवन..	55
38	39	ताड़वन..	57
39	40	ताड़वन के एक बगीचे की शोभा..	57
40	41	बड़ोवन, मधुवन तथा महावन..	58
41	42	पुखराज पहाड़..	59
42	43	पुखराज तथा बंगले की तरहटी..	60
43	44	अधबीच के कुण्ड, ढ़पो चबूतरा तथा मूलकुण्ड की तरहटी....	61
44	45	पुखराज तथा बंगले का चबूतरा..	63
45	46	अधबीच के कुण्ड का चबूतरा, ढ़पो चबूतरा तथा मूलकुण्ड का चबूतरा..	64
46	47	पुखराज की 14 मेहराबें, बंगले की तथा अधबीच के कुण्ड की छठी भोम..	66
47	48	हजार हांस के महल, जवेरों के महल तथा खास महल.........	69
48	49	हजार हांस के महलों की छठी चाँदनी....................................	73
49	50	चारों दिशा के बड़े दरवाजे..	73
50	51	आकाशी महल..	74
51	52,53	मध्य की एवं दिशा की बड़ी हवेलियाँ......................................	75
52	54	आकाशी महल की चाँदनी..	76
53	55	घाटी की तरहटी, महल एवं सीढ़ियाँ..	77
54	56	बंगले एवं चेहेबच्चे..	78

55	57	एक बंगला..	79
56	58	पुखराज पहाड़ का खड़ा दृश्य..	81
57	59	श्रीयमुनाजी, सात घाट, केल व बट का पुल............................	82
58	60	बट का घाट..	87
59	61	हौज कौसर तालाब...	88
60	62	पाल अंदर के महल...	89
61	63	16 देहुरी का घाट..	90
62	64	झुण्ड का घाट, 9 एवं 13 देहुरी के घाट....................................	91
63	65	128 बड़ी देहुरियाँ, कटी पाल एवं 124 छोटी देहुरियाँ............	93
64	66	टापू महल...	95
65	67	टापू महल की चाँदनी..	96
66	68	24 हांस के महल..	97
67	69	बड़ा दरवाजा व जमीन पर बगीचों के दृश्य..............................	98
क्रमाँक	नक्शा नं.	नक्शे का नाम	पेज नं
68	70	छठी चाँदनी..	99
69	71	24 हांस के महल का खड़ा दृश्य..	99
70	72	जवेरों के महल के नौ फिरावे..	99
71	73	चार पहल की हवेली..	100
72	74	एक महल की शोभा..	101
73	75	आठ पहल की हवेली..	101
74	79	आठ पहल के हवेली की चाँदनी...	102
75	76	सोलह पहल की हवेली..	102
76	77	बत्तीस पहल की हवेली...	103
77	78	चौंसठ पहल की हवेली...	103
78	80,81	माणिक पहाड़ : बड़ा दरवाजा तथा हवेलियाँ...........................	103
79	82	एक हवेली की शोभा..	105
80	83	एक महल की शोभा..	106
81	84,85	मंदिर एवं कोठरियों की शोभा...	106
82	86	एक हवेली के बाहरी दीवाल का दृश्य..	107
83	87	माणिक महल एवं मध्य का चबूतरा...	107
84	88	माणिक पहाड़ की चाँदनी पर टापू महल, ताल व देहेलान.....	108
85	89	टापूमहल की चाँदनी	109
86	90	माणिक पहाड़ की चाँदनी..	109
87	91,92	माणिक पहाड़ के चारों तरफ बगीचें, नहरें तथा महानद..........	110
88	93	माणिक पहाड़ के चारों तरफ ताल के महलों की चाँदनी, महाबिलंद हिण्डोले तथा झरनें...	111
89	94	माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य...	112
90	95	बड़ोवन, मधुवन, महावन तथा वन की नहरें..............................	113
91	96,97	छोटी रांग : चार हार हवेली..	115
92	98	बड़ी रांग की महाहवेलियाँ..	116
93	99	एक हवेली की शोभा..	117
94	100	मध्य के त्रिपोलियों के मध्य की हवेली...	118
95	101	एक महाहवेली की चाँदनी पर टापूमहल, ताल एवं देहेलान.....	118
96	102	टापूमहल की चाँदनी..	119
97	104,105	एक महाहवेली की चाँदनी..	119
98	103	एक सागर के चारों तरफ का दृश्य तथा सागरों में टापूमहल..	120
99	106	एक जिमी की शोभा...	123
100	107	बड़ी रांग की चाँदनी पर गुम्मटों, कमानों व कांगरियों की शोभा...	124

नक्शा नं. 108 परमधाम के पच्चीस पक्ष

धाम तालाब कुंजवन सोहे , मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के ।।

परमधाम के ठीक मध्य में अनेक रंगों की तेजोमयी झलकार से युक्त नौ भोम ऊँचा रंगमहल विद्यमान है। जिसके प्रत्येक भोम, अनेक प्रकार के सुख विलास के साधनों से भरपूर हैं। रंगमहल की दक्षिण दिशा में बट पीपल की चौकी के चार भोम ऊँचे वृक्ष शोभायमान हैं। इनकी दक्षिण दिशा में बेलों, फूलों, पत्तों, लताओं से सुशोभित कुंज–निकुंज वन विद्यमान हैं। कुंज वन चौरस हैं, तथा निकुंज वन गोल हैं। इनकी दक्षिण दिशा में एक हीरे की जगमगाहट से युक्त हौज कौसर ताल शोभायमान है। श्री यमुना जी का जल इसी में समाता है। कुंज निकुंज वन हौजकौसर ताल को घेरकर अक्षरधाम के पूर्व तक विद्यमान हैं। हौज कौसर तालाब के दक्षिण में फव्वारों व झरनों से ढ़का 24 हांस का महल अलग ही शोभा ले रहा है। रंगमहल की पश्चिम दिशा में रंगबिरंगे खुशबूदार फूलों के बगीचे फूलबाग व नूरबाग हैं। जिनमें नहरों, चेहेबच्चों व फव्वारों की अद्भुत शोभा है। फूलबाग के पश्चिम में अन्नवन, दूब–दुलीचा (रंगबिरंगे घास का मैदान) व पश्चिम चौगान (विशाल रेती का मैदान) शोभायमान हैं। यहाँ सखियाँ अनेक प्रकार के जानवरों पर सवारी का आनंद लेती हैं।

रंगमहल की उत्तर दिशा में लाल चबूतरा, बड़ोवन, ताड़वन, मधुवन तथा महावन के ऊँचे–ऊँचे सुंदर वृक्ष शोभायमान हैं। महावन के उत्तर में एक पुखराज के नंग के अंदर अनेक रंगों की झलकार से युक्त 1000 भोम ऊँचा पुखराज पहाड़ शोभायमान है। श्री यमुनाजी पुखराज पहाड़ से ही प्रगट होती हैं।

रंगमहल की पूर्व दिशा में सात वन, यमुनाजी, केल व बट का पुल तथा अक्षरधाम विद्यमान हैं। श्री यमुनाजी का जल दूध से भी अधिक उज्जवल रंग का, स्वाद में मिश्री से भी मीठा, सुगंधी से भरपूर तथा अत्यंत निर्मल है।

यहाँ तक वर्णित सम्पूर्ण शोभा को चारों तरफ से घेरकर स्टेडियम की सीढ़ियों की भांति जवेरों की नहरों (महलों) के नौ फिरावे हैं। जवेरों के महलों के बाहरी तरफ, रंगमहल की दक्षिण दिशा में एक माणिक नंग की लालिमा से युक्त 12000 भोम ऊँचा माणिक पहाड़ शोभायमान है। माणिक पहाड़ की सीमा में, जवेरों के महलों को चारों तरफ से घेरकर बड़ोवन, मधुवन, महावन शोभायमान हैं। इन सबको चारों तरफ से घेरकर वन की नहरें (महल) विद्यमान हैं, जहाँ वृक्षों, फूलों, पत्तों के ही महल बने हुए हैं। वन की नहरों को चारों तरफ से घेरकर छोटी रांग की हवेलियों की चार हारें हैं, जो 60,000 भोम ऊँची हैं।

छोटी रांग को चारों तरफ से घेरकर अनेक रंगों की जगमगाहट से युक्त 14 करोड़ 40 लाख भोम ऊँची आकाश को छूती हुई बड़ी रांग है, जिसके अंतर्गत कुल 80 महाहवेलियाँ (दीवाल), आठ सागर तथा आठ जिमी विद्यमान हैं। चौड़ाई में इसके तीन भाग किए। छोटी रांग की तरफ प्रथम भाग में 32 हांस में 32 महाहवेलियाँ हैं। जिनकी सन्धि में छोटी रांग की तरफ 32 गोल गुर्ज हैं। बाहरी तरफ के तीसरे भाग में भी इसी प्रकार (32 हांस में) 32 महाहवेलियाँ हैं, जिनकी संधि में बाहरी तरफ 32 गोल गुर्ज हैं। इन गोल गुर्जों के भीतर, दो महाहवेलियों के मध्य बड़े त्रिपोलियें (दो थंभों की हार व तीन गलियाँ) हैं। मध्य के द्वितीय भाग में चारों दिशाओं तथा चारों कोनों में आठ सागर हैं। प्रत्येक दो सागरों के मध्य एक जिमी है, इस प्रकार आठ सागरों के मध्य आठ जिमी हैं। तथा इन सागरों व जिमी की संधियों में 16 महाहवेलियाँ हैं। इस प्रकार प्रत्येक सागर व जिमी आठ महाहवेलियों के बीच में हैं।

दो दरिया बीच एक जिमी , दो जिमी बीच दरिया एक ।
यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक।।परि. 3/61

अगिन कोने (पूर्व–दक्षिण) में श्वेत रंग का **नूर सागर** है। यहाँ की जमीन, महल, वृक्ष, पशु–पक्षी, एवं आकाश सब सफेद रंग के हैं। दक्षिण दिशा में **नीर सागर** है, जहाँ की सारी शोभा लाल रंग की है। नैऋत्य कोने (दक्षिण–पश्चिम) में **खीर सागर** है। यहाँ की सारी शोभा महल, वृक्ष, पशु–पक्षी, जल के जीव, टापू महल आदि पीले रंग के हैं। पश्चिम दिशा में **दधि सागर** है, जहाँ की सारी शोभा हरे रंग की है। वायब्य कोने (पश्चिम–उत्तर) में **घृत सागर** है। यहाँ की सारी शोभा वृक्ष, महल, पशु–पक्षी, धरती, आकाश सब आसमानी रंग के हैं। उत्तर दिशा में **मधुसागर** है, जहाँ की सर्व शोभा श्याम रंग की है। ईशान कोने (उत्तर–पूर्व) में **रस सागर** है, जहाँ की सारी शोभा दस रंग की है। पूर्व दिशा में **सर्वरस सागर** है, जहाँ की

सारी शोभा अनंत रंगों की है। दो सागरों के मध्य जो जिमी है। उसमें दोनों तरफ के सागरों के रंगों की आधी–आधी शोभा है।

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।। परि. 43/60

नक्शा नं. 1 रंगमहल, चाँदनी चौक एवं 100 सीढ़ियाँ

अनेक रंगों की चित्रकारी एवं नंगों की नक्शकारी से युक्त तथा गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताकाओं से सुशोभित, नौ भोम दसवीं आकाशी (छत) वाला यह रंगमहल, 201 हांस के एक भोम भर ऊँचे चबूतरे पर शोभायमान है। इस चबूतरे की वजह से तथा दसवीं चाँदनी की किनार पर देहेलान आने की वजह से यह 11 भोम ऊँचा दिखाई देता है। इसका मुख्य द्वार पूर्व दिशा में है। मुख्य द्वार के सामने 166 मंदिर (1 मंदिर=100 हाथ) का लंबा–चौड़ा रेती का मैदान है, इस चौक में खुली चाँदनी (आकाश) होने की वजह से इसे चाँदनी चौक कहा जाता है। चाँदनी चौक में द्विकोनी, त्रिकोनी, चौकोनी, गोल आदि अनेकों आकारों की नूरमयी उज्जवल रेती बिछी है, जिसकी बेशुमार किरणें बिजली के समान चमकती प्रतीत हो रही हैं, जिसे देखने पर ऐसा लगता है, जैसे हीरे, मोती, जवाहरात बिछे हों । ऐसा प्रतीत होता है मानो करोड़ों सूर्य निकल आयें हों, जो शीतलता से युक्त हैं।

इन चौक खुली जो चाँदनी , आगूं बड़े दरबार ।
उज्जल रेती झलकत , जोत को नाहीं पार ।। परि. 30/23

चाँदनी चौक की तीन दिशाओं में अमृत वन की शोभा है। चौथी दिशा में रंगमहल का चबूतरा, मंदिर, द्वार, झरोखे शोभायमान हैं। चाँदनी चौक में उत्तर एवं दक्षिण दिशा में 33–33 मंदिर के लंबे–चौड़े दो कमर भर ऊँचे चौरस चबूतरे विद्यमान हैं, जिनके चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर रत्नजड़ित कठेड़ा (रेलिंग) सुशोभित है। सीढ़ियों तथा चबूतरों पर अनेक रंगों व नंगों की, बेल–बूटों, फूल–पत्तों की चित्रकारी व नक्शकारी शोभायमान है। इन दोनों चबूतरों में मध्य में एक–एक वृक्ष शोभायमान हैं। उत्तर दिशा के चबूतरे पर लाल रंग का वृक्ष है तथा दक्षिण दिशा के चबूतरे पर हरे रंग का वृक्ष है, जिनकी लाल व हरी किरणें निकल कर आसमान की तरफ जाती दिख रहीं हैं। इनके आसपास की रेती भी क्रमशः लाल व हरे रंग की दिख रही है। वृक्षों की लंबाई चौड़ाई इतनी है कि उनकी छाया संपूर्ण चबूतरे पर हो रही है। इन चबूतरों पर सिंहासन, गद्देदार कुर्सियाँ आदि सुशोभित हो रही हैं।

इत तखत कदेले कुरसियाँ , बैठें रूहें बारे हजार ।
सुख इतके हमारे कहाँ गये , मोर नचावनहार ।। परि. 20/16

श्री राजश्यामा जी एवं सखियाँ जब इन चबूतरों पर विराजमान होते हैं, तब सामने चाँदनी चौक में अनेक प्रकार के, अनेक रंगों के सुंदर पशु–पक्षी, बंदर, खरगोश, बिल्ली, मोर आदि कई प्रकार से नाच–गाकर, खेल–कूदकर श्री राजश्यामा जी एवं सखियों को रिझाते हैं। कभी पशु एक–एक करके खेलते हैं, कभी सब मिलकर करतब दिखाते हैं (सर्कस के समान)। हम सखियाँ देखकर आनंद में विभोर हो जाती हैं। बहुत हाँस विनोद होता है।

आगूं इन चबूतरों , खेलावत जानवर ।
नए नए रूप रंग ल्यावहीं , अनेक विध हुनर ।। परि. 30/21

रंगमहल के मुख्य द्वार पर जाने के लिए, चाँदनी चौक से 100 सीढ़ियाँ चढ़ी हैं। प्रत्येक पाँचवी सीढ़ी के बाद एक चाँदा (लंबी सीढ़ी) है जो पाँचवी सीढ़ी के बराबर है। इस प्रकार कुल 100 सीढ़ियाँ एवं 20 चाँदे शोभायमान हैं। इन सीढ़ियों पर अनेक प्रकार की चित्रकारी से युक्त सुंदर पशमी गिलम बिछी है। सीढ़ियों व चाँदों पर अलग–अलग रंग की गिलम बिछी है। सीढ़ियों के दोनों किनार पर अनेक रत्नों से जड़ित कमर भर ऊँची दीवाल है, जिसके ऊपर सुंदर लाल कांगरी बनी है। सौ सीढ़ियों के बाद मुख्य दरवाजे के सामने 2 मंदिर का लंबा–चौड़ा चौक है। जिसके दायें–बायें 4 मंदिर के लंबे व 2 मंदिर के चौड़े दो चबूतरे शोभायमान हैं, जो चौक से एक हाथ ऊँचें हैं।

नक्शा नं. 2 रंगमहल के एक भोम की शोभा

रंगमहल 201 हांस (पहल) का है। उत्तर, दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में 50–50 हांस हैं। किंतु पूर्व दिशा में 51 हांस हैं क्योंकि पूर्व दिशा के मध्य में 10 मंदिर का लंबा एक अतिरिक्त हांस दरवाजे के लिए विशेष रूप से बना है। इसके दायें–बायें के हांस 25–25 मंदिर के लंबे हैं। शेष सभी हांस 30–30 मंदिर के लंबे हैं। दरवाजे के हांस में, मध्य में 2 मंदिर का लंबा व 1 मंदिर का चौड़ा दरवाजे का मंदिर है, जिसके दायें–बायें 4–4 मंदिर हैं। दरवाजे के मंदिर के सामने 2 मंदिर का लंबा–चौड़ा चौक है, जिसके सामने भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। इस चौक के दायें–बायें, 4–4 मंदिरों के सामने, 4 मंदिर के लंबे व 2 मंदिर के चौड़े दो चबूतरे हैं। इन चबूतरों के बाहरी तथा भीतरी किनार पर 5–5 थंभ सुशोभित हैं। चौक से लगता हुआ पहला थंभ हीरे का (सफेद रंग का), दूसरा थंभ माणिक का (लाल रंग का), तीसरा थंभ पुखराज का (पीले रंग का), चौथा थंभ पाच का (हरे रंग का) तथा पाँचवां थंभ नीलवी का (आसमानी रंग का) है। दोनों चबूतरों के मिलाकर कुल 20 थंभ हैं। जिन पर सुंदर चित्रकारी से युक्त व अनेक रत्नों से जड़ित 22 मेहराबें हैं। प्रत्येक मेहराब दो–दो रंगों की हैं। भीतरी तरफ के थंभ व मेहराबें अक्सी (आधी दीवाल के अंदर व आधी दीवाल के बाहर) है। चबूतरों के बाहरी किनार पर, थंभों के मध्य सुंदर रत्नजड़ित कठेड़ा शोभायमान है। चबूतरों पर कई रंगों की चित्रकारी से युक्त सुंदर पशमी गिलम बिछी है। जिस पर सिंहासन व कुर्सियों की अपरम्पार शोभा है। इन चबूतरों पर जब श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ विराजमान होते हैं तो सामने चाँदनी चौक में अनेक प्रकार के सुंदर पशु–पक्षी अपनी मधुर वाणी से बोलकर, गाकर, खेलकर, नाचकर धनी को रिझाते हैं, सखियों को हँसाते हैं। इसलिए इन्हें सखियों के प्यारे खिलौने कहा गया है।

आगूं अर्श चबूतरे , हम सखियाँ बैठत मिलकर ।
ऐ सुख हमारे कहाँ गये , खेलत नाचत बांदर ।। परि. 20/15
कई मिलावे सोहने , धनी सैंयों के खिलौने ।
पशु पंखी जुत्थ मिलत , आगुं बड़े दरवाजे खेलत।। परि. 3/59

रंगमहल के 201 हांस के चबूतरे की किनार पर सुंदर कठेड़ा शोभायमान है। कठेड़े के भीतरी तरफ 1 मंदिर की चौड़ी परिक्रमा की रौंस है, जिसके भीतरी तरफ 6,000 मंदिरों (कमरों) की एक हार सुशोभित है। इन मंदिरों में दिखने में 5–5 किंतु गिनती के 4–4 दरवाजे हैं। इन मंदिरों से लगकर, बाहरी तरफ रौंस पर 201 हांस की संधि में 201 चौरस गुर्ज हैं। इन गुर्जों में भी दिखने में 5–5 किंतु गिनती के 4–4 दरवाजे हैं। इन मंदिरों के भीतरी तरफ 1–1 मंदिर की दूरी पर 6–6 हजार थंभों की दो हारें हैं। इनके भीतरी तरफ 1 मंदिर की दूरी पर 6 हजार मंदिरों की दूसरी हार है। जिसमें दिखने में 4–4 किंतु गिनती के 3–3 दरवाजे हैं। इनके भीतरी तरफ 1–1 मंदिर की दूरी पर 6–6 हजार थंभों की दो हारें पुनः शोभायमान हैं।

मुख्य द्वार के सामने (भीतरी तरफ) 28 थंभ का चौक है, जिसके कारण दूसरी हार मंदिरों के 12 मंदिर कम हो गये हैं। यह चौक 10 मंदिर का लंबा व 5 मंदिर का चौड़ा है। इसमें पूर्व व पश्चिम में 10–10 थंभ हैं तथा उत्तर व दक्षिण में 4–4 थंभ हैं। इस चौक में कुल 28 थंभ होने से इसे 28 थंभ का चौक कहा जाता है। इस चौक में सुंदर पशमी गिलम बिछी है जिस पर बैठने हेतु अनेक प्रकार के सिंहासन, कुर्सियाँ, सोफासेट आदि शोभायमान हैं। छत पर सुंदर चित्रकारी से युक्त चंद्रवा तना है। श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ रंगमहल से आते जाते समय यहाँ कई बार बैठ जाते हैं तथा हाँस विनोद करते हैं।

बड़ा चौक शोभा लेत है , बड़े दरवाजे अंदर ।
बड़ी बैठक इत गिरोह की , आगूं रसोई के मंदिर ।। परि. 31/1

इन सबके भीतरी तरफ चौरस हवेलियों की चार हारें हैं। प्रत्येक हार में 231 हवेलियाँ हैं। ये चार हारें मिलकर पहला फिरावा कहलाती हैं। इनके भीतरी तरफ गोल हवेलियों की चार हारें हैं, जिसे दूसरा फिरावा कहते हैं। इसी प्रकार चौरस तथा गोल हवेलियों के क्रमशः 4–4 फिरावे (कुल 8) हैं। नवां फिरावा पंचमहलों का है, जिसमें 231 पंचमहलों की 4 हारें हैं। इन सबके मध्य में नौ चौक (महाहवेलियाँ) विद्यमान हैं, जिनके चारों कोनों में चार स्तून (पानी के पाईप) हैं, जो दसवीं चाँदनी में जाकर चेहेबच्चा बन जाते हैं। नौ चौक

की चारों दिशाओं में पंचमहलों तक की जगह में फुलवाड़ी, नहरें, चेहेबच्चें शोभायमान हैं। इसी प्रकार रंगमहल के प्रत्येक भोम की शोभा है। मंदिरों के ऊपर मंदिर, थंभों के ऊपर थंभ नवों भोमों में हैं। कुछ कुछ विशेष शोभा प्रत्येक भोम में है, जिसका वर्णन आगे किया जायेगा। इस प्रकार रंगमहल के प्रत्येक भोम में बेशुमार मंदिर, चौक, चबूतरे, गलियाँ हैं। मंदिरों की दीवालों तथा थंभों में अनेक रंगों व नंगों की चित्रकारी व नक्शकारी है जिनसे बेशुमार नूरमयी किरणें निकल रहीं हैं। कई प्रकार के पशु पक्षियों की तथा वृक्षों, फूलों, फलों, पत्तों की चित्रकारी है। इन चित्रों के वृक्षों से सखियाँ इच्छानुसार फल, फूल आदि तोड़कर खाती हैं। चित्रों के पशु पक्षी, श्रीराजश्यामाजी व सखियों को आते देखकर मधुर वाणी सुनाने लगते हैं। चित्रों के शेर, हाथी, घोड़े आदि सखियों के इच्छानुसार प्रकट हो जाते हैं और सखियों को अपनी पीठ पर बैठाकर मनमाफक सैर का आनंद कराते हैं। इस प्रकार रंगमहल के नवों भोमों के इन मंदिरों, गलियों में घूमते फिरते हुए श्री राजश्यामाजी व सखियाँ बेशुमार हांस विलास करते हैं।

इत युगल सरूप विहरत , नौमी भोम सब ठौर ।
इत फिरते खेलते देखिए, तित पल पल नया सुख और।। बड़ी वृत्त 8/38
सुंदर छबि मुख शोभित, साम सामे खड़े द्वार ।
रस भीगे बातां करें, निरखत छबि सुखकार।।महामति की बड़ी वृत्त 10/23

नक्शा नं. 3 दस मंदिर के हांस की बाहरी शोभा

रंगमहल के 10 मंदिर के हांस में, प्रथम भोम में 4 मंदिर के लंबे व 2 मंदिर के चौड़े 2 चबूतरे हैं, जिनके मध्य में 2 मंदिर का लं.–चौ. चौक है, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है। चौक पर मेहराबें व छत 2 भोम ऊपर हैं, जबकि चबूतरों पर छत एक भोम पर ही है। इन चबूतरों के ऊपर दूजी भोम में 4 मंदिर के लं. व 2 मंदिर के चौ. दो झरोखे (छज्जे) सुशोभित हैं, जिनकी बाहरी व भीतरी किनार पर नीचे के चबूतरे के समान ही थंभ शोभायमान हैं। झरोखों की बाहरी किनार पर तीन दिशा में थंभों के मध्य कठेड़ा है। दोनों झरोखों व बीच के चौक के ऊपर तीजी भोम में 10 मंदिर की लंबी व 2 मंदिर की चौड़ी पड़साल है। जिसके बाहरी व भीतरी किनार पर नीचे के चबूतरे के समान ही (उन्हीं नंगों) के थंभ हैं। पड़साल की बाहरी किनार पर तीन दिशा में थंभों के मध्य कठेड़ा शोभायमान है। तीजी भोम से दसवीं भोम तक इसी प्रकार दस मंदिरों के हांस की बाहरी शोभा है।

नक्शा नं. 4 धाम दरवाजा एवं दस मंदिर के हांस की भीतरी शोभा

दो मंदिर के लं.–चौ. चौक के सामने, दो मंदिर की चौड़ी तथा दो भोम (1 भोम = 100 हाथ) की ऊँची मुख्य दरवाजे की मेहराब है। इसके नीचे 88 हाथ का लं–चौ. मुख्य दरवाजा है। दरवाजे की चौखट सिंदूरिया रंग की है, जिसमें अनेक प्रकार के नंग जड़े हैं। दरवाजे का किवाड़ दर्पण रंग का है, जिसमें सामने के वनों के सुंदर प्रतिबिंब झलक रहे हैं। किवाड़ का किनारा (बेनी) हरे रंग की है। इस प्रकार दरवाजे से रंगबिरंगी किरणें निकलती दिख रही हैं। दरवाजे के दायें–बायें 56–56 हाथ की लाल रंग की दिवाल है, जिसमें अनेक रंगों की चित्रकारी सुशोभित है।

दोऊ कमाड़ रंग दरपन , माहें झलकत सामी बन ।
नंग बेनी पर देत देखाई , ये शोभा कही ना जाई ।। परि. 3/60

मुख्य दरवाजे के ऊपर चौखट से लगकर एक छोटी मेहराब सुशोभित है। दरवाजे के भीतर 2 मंदिर का लं.,1 मंदिर का चौ. तथा 1 भोम ऊँचा दरवाजे का मंदिर है। इसके दायें–बायें 4–4 मंदिर हैं। दरवाजे के ऊपर दूसरी भोम के हिस्से में बड़ी मेहराब के नीचे 8 अक्सी थंभों पर 9 छोटी मेहराबें हैं। मध्य की मेहराब में एक झरोखा निकला है, जिसके दायें–बायें 2–2 जालीदार दीवाल हैं। इसके दायें–बायें 1–1 छोटे

दरवाजे हैं व इसके भी दायें–बायें 1–1 जालीदार दीवाल हैं। ये दरवाजे व झरोखा, दरवाजे के मंदिर की दूसरी भोम में हैं। दरवाजों व झरोखे के सामने कठेड़ा शोभायमान है। दरवाजे के मंदिर और दायें–बायें के 1–1 मंदिर की जगह में तीजी भोम में 4 मंदिर की लंबी व 1 मंदिर की चौड़ी देहलान है, जिसके दायें–बायें 3–3 मंदिर हैं। चौथी भोम में दरवाजे के मंदिर की जगह में उसी प्रकार दरवाजे का ही मंदिर है, जिसके दायें–बायें 4–4 मंदिर हैं। चौथी भोम से आठवीं भोम तक की शोभा इसी प्रकार है।

नक्शा नं. 5 बाहरी हार मंदिरों की बाहरी दीवालों की शोभा

बाहरी हार मंदिरों में से एक मंदिर की बाहरी दीवाल में दो बड़े अक्सी थंभों पर एक बड़ी अक्शी मेहराब है। मेहराब की नोंक पर तथा दायें–बायें तीन फूल लाल माणिक के जगमगा रहे हैं। इन सबके ऊपर अनेक प्रकार की चित्रकारी व कांगरी की शोभा है। इस बड़ी मेहराब के नीचे दो छोटे अक्सी थंभों पर तीन छोटे अक्शी मेहराबें हैं। इनके भी नीचे और छोटी 9 अक्सी मेहराबें हैं। इनमें से मध्य की मेहराब में एक झरोखा निकला है। इस झरोखे के दायें–बायें की 2–2 मेहराबों के नीचे जालीदार दीवालें हैं। इनके दायें–बायें की 1–1 मेहराबों में 1–1 दरवाजे हैं। इनके भी दायें–बायें की 1–1 मेहराबों में जालीदार दीवालें हैं, जिनसे वनों की शीतल सुगंधित वायु रंगमहल में प्रवेश करती है।

हर मंदिर एक झरोखा , याकी शोभा किन मुख होए।
आए लग्या वन दीवालें , देत मीठी खुसबोए।। परि. 34/9

इस प्रकार बाहरी हार मंदिरों की आठों भोमों की बाहरी दीवाल में 2–2 दरवाजे तथा 1–1 झरोखे हैं। इन झरोखों में आकर सखियाँ रंगमहल के चारों तरफ के वनों, नहरों, बगीचों, चेहेबच्चों, फव्वारों की बेशुमार शोभा को निहारती हैं। रंगमहल के चारों तरफ इन झरोखों से सखियाँ जब झाँकती हैं, उस समय रंगमहल की शोभा बहुत सुंदर दिखती है।

कई मिलावे साथ के , सुंदर झरोखे झांकत ।
सोभा देखत वन की , मोहल इन समें सोभित।। परि. 38/65

दूसरी भोम से आठवीं भोम तक बाहरी हार मंदिरों के सामने चारों तरफ घेरकर 33 हाथ का चौड़ा छज्जा (बाल्कनी) निकला है। जिसकी बाहरी किनार पर सुंदर कठेड़ा शोभायमान है। दरवाजे के हांस के मंदिरों की बाहरी दीवाल में 1–1 झरोखा नहीं है, क्योंकि यहाँ प्रत्येक भोमों में बड़े झरोखे (पड़शाल) हैं।

नक्शा नं. 6 चौरस गुर्जों के बाहरी दीवालों की शोभा

एक चौरस गुर्ज 66 हाथ का लंबा–चौड़ा है। इसके तीन दीवाल परिक्रमा की रौंस पर हैं। चौथी दीवाल के रूप में प्रत्येक दो हांस की संधि के दोनों मदिरों की 33–33 हाथ की दीवाल है, जिसमें दोनों मंदिरों के एक एक दरवाजे हैं। जिनके द्वारा गुर्जों से मंदिरों में आ–जा सकते हैं। परिक्रमा की रौंस पर जो तीन दीवालें हैं, उनमें से एक दीवाल का वर्णन इस प्रकार है। दीवाल के दोनों किनार पर दो बड़े अक्सी थंभ हैं, जिन पर एक बड़ी अक्सी मेहराब है। मेहराब की नोंक पर व दायें–बायें माणिक के लाल रंग के तीन फूल हैं। इनके ऊपर अनेक प्रकार की कांगरी, चित्रकारी सुशोभित हैं। इस बड़ी मेहराब के नीचे दो छोटे अक्सी थंभों पर तीन छोटे मेहराब हैं। मध्य की मेहराब के नीचे दरवाजा है तथा दायें–बायें की मेहराब के नीचे जालीदार दीवालें हैं। इसी प्रकार की शोभा नवों भोमों के गुर्जों की है।

नक्शा नं. 7 बाहरी हार मंदिरों के भीतरी दीवालों की शोभा

रंगमहल के बाहरी हार मंदिरों की संधि की व भीतरी दीवालों की, भीतरी हार मंदिरों, चौरस व गोल हवेलियों की, पंचमोहलों व नौ चौक के प्रत्येक मंदिरों के सभी दीवालों की शोभा इस प्रकार है। दो बड़े अक्सी थंभों पर एक बड़ी अक्सी मेहराब है। इस बड़ी मेहराब के नीचे दो छोटे अक्शी थंभों पर तीन छोटी अक्शी मेहराबें हैं। मध्य की मेहराब के नीचे दरवाजा है, जिसके ऊपर एक छोटी मेहराब और है। दायें–बायें की मेहराबों के नीचे 2–2 छोटे अक्सी थंभों पर 3–3 छोटी अक्सी मेहराबें हैं। इन मंदिरों के दीवालों में

बनी चित्रकारी एवं नक्शकारी से बेशुमार किरणें निकल रहीं हैं। नवों भोमों में इन मंदिरों के अंदर बेशुमार सुख सामग्री, सेज्या, सिंहासन, चौकी, कंचन जड़ित जंजीर युक्त हिंडोले, श्रृंगार के वस्त्राभूषणों से भरे संदूक, अलमारी, ड्रेसिंग टेबल, डायनिंग टेबल, मेवे, फल, मिठाई आदि व्यवस्थित रूप से रखे हैं। इन मंदिरों में होने वाली लीला का बड़ा सुंदर चित्रण महामतिजी के बड़ी वृत्त में किया गया है।

हक हादी रमते रहें , रहें रूहें संग सुभान ।
इत पैठते मंदिरों देखिये , भूखन सुर सुनो कान ।। बड़ी वृत्त 4/22
जब चौकी ऊपर कदम देय के , बैठत इन पलंग ।
करें बातें अति सोहावनी , मिल अपनी अरधांग ।। बड़ी वृत्त 4/24
कहूँ हिण्डोले हींचत , कहूँ मचियाँ बैठक ।
कहूँ हांसी हेत उपजावत , रूहें हादी मिल हक ।। बड़ी वृत्त 10/40

नक्शा नं. 8 चाँदनी चौक से मूल मिलावे तक की शोभा

चाँदनी चौक से 100 सीढ़ियाँ चढ़कर धाम दरवाजे से अंदर प्रवेश किया। 28 थंभ के चौक की शोभा देखते हुए प्रथम चौरस हवेली में आ गयी। यह रसोई की हवेली है। इसके पूर्व दिशा में 11 मंदिर की लंबी देहलान है, जिसमें 10–10 थंभों की दो हारें हैं। देहलान के दायें–बायें 5–5 मंदिर हैं। हवेली के उत्तर दिशा में मध्य में एक मंदिर का चौड़ा बड़ा दरवाजा है, जिसके पूर्व में 10 मंदिर हैं तथा पश्चिम में 10 मंदिर की देहलान है। इस देहलान में भीतरी तरफ 9 थंभ हैं व बाहरी तरफ दीवाल है, जिसमें दस दरवाजें हैं। हवेली के दक्षिण में भी इसी प्रकार मध्य में बड़ा दरवाजा है, जिसके पूर्व में 10 मंदिर व पश्चिम में 10 मंदिर की देहलान उसी प्रकार है। हवेली के पश्चिम में मध्य में बड़ा दरवाजा है, जिसके दायें–बायें 10–10 मंदिर हैं। हवेली के चारों कोनों के मंदिर मिलाकर हवेली की कुल लं.–चौ. 23 मंदिर की होती है।

इन मंदिरों के भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर थंभों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर कमर भर ऊँचा चौरस चबूतरा है, जिसके किनार पर एक थंभों की हार पुनः विद्यमान है। चारों दिशा के मध्य में 3–3 सीढ़ियाँ उतरीं हैं, बाकी जगह में थंभों के मध्य में सुंदर कठेड़ा शोभायमान है। चबूतरे पर सुंदर, पशमी गिलम बिछी है। छत पर सुंदर चंद्रवा तना है।

हवेली के ईशान कोने से पश्चिम तरफ पहला मंदिर श्याम रंग का रसोई का है, जिसमें लाड़बाई तथा उनके जुत्थ की सखियाँ भोजन बनाने की लीला करती हैं। तीसरा मंदिर श्वेत रंग का भण्डार का है।

स्याम मंदिर रसोई होत जित , जोड़े सेत मंदिर है तित ।
बन थें फिरें संझा जब , इन मंदिरों आरोगें तब ।। परि. 3/65

इन श्याम व श्वेत मंदिरों के मध्य में सीढ़ियों का मंदिर है, जिनसे सखियाँ ऊपर के भोमों में आना जाना करती हैं। (वैसे रंगमहल में अन्य कई जगह भी सीढ़ियाँ हैं, इच्छा करने से कहीं भी सीढ़ी प्रकट हो जाती है) सीढ़ियाँ अनेक प्रकार के रत्नों से जड़ित हैं, जिससे चढ़ते उतरते समय सखियों के सुंदर प्रतिबिंब सीढ़ियों पर झलकते हैं। और पैरों की ठमकार से चरणों के आभूषण मधुर आवाज उत्पन्न करते हैं, जिससे रंगमहल गूँज उठता है।

सीढ़ियाँ अति झलकत , जब सखियाँ उतर चढ़त ।
प्रतिबिंब सखियों शोभित , पड़घा मीठे स्वर उठत ।। सागर 1/75

रसोई की हवेली के उत्तर व दक्षिण दिशा के देहलानों में सखियाँ दोपहर के समय भोजन आरोगने की लीला करती हैं। कृष्ण पक्ष में जब शाम को 6 बजे श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ वनों से लौटते हैं तब मध्य के चबूतरे में मीठी मीठी बातें आपस में करते हुए भोजन आरोगने का आनंद लेते हैं, फिर सीढ़ियों के मंदिर से चढ़ते हुए चौथी भोम में निरत देखने जाते हैं।

जब इत आरोगन को , बैठत हक सुभान ।
बातां करे चित्त चाहती , सो मोमिन दिल पेहचान ।। बड़ी वृत्त 14/43
अधबीच आरोगते , मीठी बातां करें बनायें ।
ढ़िग बैठी मवसर पावत , देख सुख पावत सब ताए ।। बड़ी वृत्त 14/48

अन्य चौरस हवेलियों में इस हवेली की अपेक्षा मात्र इतना अंतर है कि तीनों देहलानों की जगह में भी मंदिर ही हैं, जिससे उन हवेलियों में चारों दिशा में मध्य में बड़े दरवाजे एवं दायें–बायें 10–10 मंदिर हैं। प्रत्येक दो हवेलियों के बीच में थंभों की दो हारें व तीन गलियाँ सुशोभित हैं। प्रत्येक हवेली के मुख्य दरवाजे के बाहर, दायें–बायें के 1–1 मंदिरों के सामने 1–1 मंदिर के लंबे–चौड़े, कमर भर ऊँचे दो चबूतरे विद्यमान हैं, जिन पर सुंदर गिलम बिछी है। चबूतरे की तीन दिशा में मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा शोभायमान है। इस प्रकार दो हवेलियों के जहाँ साम–सामे दरवाजे हैं, वहाँ चार चबूतरे हैं। इन चबूतरों पर आते–जाते व घूमते समय श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ विराजमान होकर बहुत हाँस विनोद करते हैं। श्रीराजजी महाराज प्रेममयी मीठी–मीठी बातों से सबको सुख प्रदान करते हैं। कोई सखी श्रीराजजी से हंस हंस कर मीठी बातें कर रही है, कोई सखी इनकी बातें सुनने का आनंद ले रही है, कोई सखी खड़ी होकर श्रीराजजी महाराज का सुंदर मुखारविंद निहार रही है, कोई सखी गलियों में दौड़ते हुए श्रीराजजी महाराज के पास आकर खड़ी हो गयी। इस प्रकार बहुत आनंद होता है।

दोऊ जोड़े इन चबूतरे , जब बैठे युगल किशोर ।
ठाड़ी रूहें मिल बातां करें , इत प्यार बतावत जोर ।। बड़ी वृत्त 13/29
क्यों कहूँ सुंदरता सरूप की , क्यूँ कहूँ मीठे नैन ।
क्यूँ कहूँ इन मेहेर की , रस भरे काढ़े बैन ।। बड़ी वृत्त 13/28
एक बात करे राज सों , इत दूजी पावत सुख ।
कोई ढ़िग ठाड़ी रहे , देखे नूरजमाल का मुख ।। बड़ी वृत्त 13/31

नक्शा नं. 9 मूल मिलावा

चार चौरस हवेलियों के पश्चात् पाँचवी हवेली गोल है। यहाँ पर श्रीराजश्यामाजी के चरणों में बैठकर हम सखियाँ इस झूठे नाशवान जगत को स्वप्नवत् देख रही हैं। वर्तमान में हम सब यहीं मिलकर बैठीं हैं इसलिए इसे मूलमिलावा कहते हैं।

सुरता एकै राखिये , मूल मिलावे माहें ।
स्याम स्यामाजी साथजी , तले भोम बैठे हैं जाहें ।। सागर 7/3

इस हवेली में सर्वप्रथम 64 थंभों की एक हार गोलाई में है जिसके भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर मंदिरों की एक हार है, जिसमें 60 मंदिर तथा चारों दिशा में 4 बड़े दरवाजे हैं। प्रत्येक मंदिर में दिखने में 4–4 किंतु गिनती के 3–3 दरवाजे हैं। इन मंदिरों के भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर 64 थंभों की दूसरी हार है। इनके भीतरी तरफ एक मंदिर की दूरी पर कमर भर ऊँचा गोल चबूतरा है, जिसके किनार पर 64 थंभों की तीसरी हार है। चबूतरे से चारों दिशा में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में थंभों के मध्य सुंदर कठेड़ा शोभायमान है। चबूतरे के पूर्व दिशा में सीढ़ियों से लगते हुए दो थंभ पाच के हरे रंग के हैं, जिनके दायें–बायें के 1–1 थंभ नीलवी के आसमानी रंग के हैं। पश्चिम दिशा में सीढ़ियों से लगते हुए दो थंभ नीलवी के व दायें–बायें के 1–1 थंभ पाच के हैं। उत्तर दिशा में सीढ़ियों से लगते हुए दो थंभ पुखराज के पीले रंग के हैं। इसके दायें–बायें के 1–1 थंभ माणिक के लाल रंग के हैं। दक्षिण दिशा में सीढ़ियों से लगते हुए दो थंभ माणिक के व इसके दायें–बायें के 1–1 थंभ पुखराज के हैं। इसके अतिरिक्त चारों खाँचों में 12–12 थंभ बचे, जो इस प्रकार हैं। 1. हीरा 2. लसनियां 3. गोमादिक 4. मोती 5. पन्ना 6. प्रवाल 7. हेम 8. चांदी 9. नूर (स्टील) 10. कंचन 11. पिरोजा 12. कपूरिया। चारों तरफ एक–एक रंग (नंग) के 4–4 थंभ हैं। इन थंभों की मेहराबें 2–2 रंगों की हैं। इस प्रकार इन थंभों व मेहराबों की रंगबिरंगी तेजोमयी किरणें चारों तरफ जगमगा रहीं हैं। आपस में जंग करती प्रतीत होती हैं।

चबूतरे पर सिंदूरिया रंग की पशमी गिलम बिछी है, जिसकी किनार पर श्याम, श्वेत, हरी, पीली इन चार रंगों की दोरी (लाईन) सुशोभित है। गिलम अनेक रंगों की चित्रकारी से युक्त है। छत में हरे रंग के अंदर अनेक रंगों की चित्रकारी से युक्त सुंदर चंद्रवा तना है। चंद्रवा के किनार पर मोतियों की झालर लटक रही है। चबूतरे की किनार पर, कठेड़े से लगते हुए 60 लाल तकिए हैं, जो अत्यंत नरम व सुंदर चित्रकारी से युक्त हैं।

चारों तरफों चंद्रवा , चौसठ थंभों के बीच ।

जोत करे सब जवेरों , जेता तले दुलीच ।। सागर 7/19

चबूतरे पर गिलम के मध्य भाग में हजार पांखड़ी वाले कमल के फूल की आकृति बनी है, जो देखने पर साक्षात् कमल का फूल लग रही है। इसके ऊपर कंचन (दीपक) रंग का अति सुंदर रत्नजड़ित सिंहासन है, जिसके छः पाये व छः डांडे हैं। एक–एक डांडे में 10–10 पहल हैं। हर पहल में अलग–अलग रंग जवेरों के झलक रहे हैं, जिससे हर दिशा से अलग–अलग रंग दिखायी पड़ता है। छः पायों के तख्त पर एक गादी, दो चाकले व 5 तकिये हैं, जो अनेक प्रकार की चित्रकारी से युक्त हैं। एक तकिया श्री राजजी महाराज के दायें तरफ, एक तकिया श्री श्यामाजी के बायें तरफ, एक तकिया दोनों स्वरूपों के मध्य में है व शेष दो तकिये दोनों स्वरूपों के पीछे हैं। दोनों स्वरूपों के ऊपर माणिक के नंग की छत्री है, जो कमल के फूल की आकृति वाला है। इसकी पांखड़ी में नीलवी के नंग जड़े हैं। छत्री के चारों तरफ जवेरों की झालर लटक रही है। इन छत्रियों के ऊपर दो गुम्मट हैं, जिन पर दो स्वर्ण कलश सुशोभित हो रहे हैं। इसी प्रकार छै कलश छै डांडों पर भी हैं। सिंहासन के चारों तरफ जवेरों की झालर व सुंदर कांगरी जगमगा रही है। डांडो में बेल, फूल, लताएँ चढ़ती हुई प्रतीत होती हैं। सिंहासन के सामने रत्नों से जड़ित दो सुंदर नूर की चौकी रखी है। सुंदर स्वरूप श्रीराजश्यामाजी सिंहासन पर विराजमान हैं।

इन सिंहासन ऊपर , बैठे युगल किशोर ।
वस्तर भूखन सिनगार ,सुंदर जोत अति जोर ।। सागर 1/118

श्रीराजजी महाराज सिंहासन पर दायीं तरफ व श्रीश्यामाजी बायीं तरफ विराजमान हैं। श्रीराजजी महाराज अपना बायां चरण कमल नूर की चौकी पर रखे हुए हैं तथा दायां चरण, बायें चरण के जांघ पर रखे हैं। दोनों चरण अत्यंत कोमल तथा उज्जवल हैं, जिनकी लांक (गहराई), तली व एड़ियाँ गहरी लालिमा लिए हुए हैं। नख हीरे के समान चमक रहे हैं। चरणों में झांझरी, घुंघरी, कांबी, कड़ला के रत्नजड़ित आभूषण जगमगा रहे हैं। श्रीराजजी महाराज केसरिया रंग की इजार (चुड़ीदार पैजामा) धारण किए हुए हैं। जामा दूध से भी उज्जवल श्वेत रंग का है। जामे के श्वेत दामन में से इजार की केसरिया रंग की किरणें निकलती हुई जगमगा रही हैं। कमर में नीलो न पीलो बीच के (हल्के हरे) रंग का पटुका (कमरबन्ध) है। कंधे पर आसमानी रंग की पिछौरी धारण किये हुए हैं, जो इतनी महीन है कि उसमें से गले के आभूषण, जामें की चित्रकारी नक्शकारी सब नजर आ रही है। इन सारे वस्त्रों में अनेक रंगों की चित्रकारी है, अनेक प्रकार के बेल, बूटे, फूल, पत्तों की कसीदाकारी है, अनेक प्रकार के नंग जगमगा रहे हैं। वस्त्रों में नक्शकारी, कसीदाकारी, नंग आदि देखने पर दिखायी तो दे रहे हैं, किंतु छुने पर स्पर्श नहीं होता है।

ऐ देत दिखाई रंग जवेर , नकस कटाव बेली जर ।
लगत नहीं हाथ को , रंग नंग धागा बराबर ।। सागर 5/56

श्रीराजजी महाराज के वक्ष स्थल पर 5 हार जगमगा रहें हैं। पहला हार मोती का है, दूसरा हार नीलवी का है, तीसरा हार हीरों का है, चौथा हार माणिक का है तथा पाँचवा हार लसनिया का है। इन पाँचों हारों के मध्य में दुगदुगी (लाकेट) की शोभा है, जिनकी तेजोमयी किरणें जगमगा रही हैं। इन पाँचों हारों के फुम्मक भी पाँच रंग के हैं। बाजूओं में बाजूबंध की शोभा है, जिसमें कंचन में पांच रंग के नंग जड़े हैं। बाजूबंध के फुम्मक हिलते हुए और ज्यादा सुंदर दिखते हैं। दोनों हाथों की कलाईयों में पोहोंची (ब्रेस्लेट) व कड़ा की सुंदर शोभा है। श्रीराजजी महाराज के हस्त कमल अत्यंत कोमल, उज्जवल तथा लालिमा से युक्त हैं। नख की तेजोमयी किरणें निकलकर आकाश तक जाती दिख रही हैं। जैसे जैसे श्रीराजजी महाराज अंगुरियों को हिलाते हैं, वैसे वैसे किरणें भी ऊपर नीचे होते दिखायी पड़ती हैं। हाथों की दसों अंगुरियों में अलग–अलग दस नंगों की मुंदरियाँ शोभायमान हैं। इन आभूषणों में यह विशेषता है कि दिखायी तो पड़ते हैं, किंतु छूने से इनका अहसास नहीं होता।

हाथ दीजे भूखन पर , सो हाथों लगत नाहें ।
पेहेने हमेशा देखिए , ऐसे कई गुन हैं इन माहें ।। सिनगार 18/63

श्रीराजजी महाराज का स्वरूप किशोर अवस्था का अत्यंत सुंदर, मनमोहक है। नूरी मुख मण्डल अत्यंत लालिमा से युक्त, गौर वर्ण का है। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे गौर मुखारविंद से लाल किरणें निकल रहीं हैं। तिरछे विशाल नेत्र इश्क से भरपूर हैं। लाल अधरों की कोमलता, कमल के फूल को भी मात दे रही है। सुंदर नासिका में बेसर की शोभा है, जिसमें लाल मोती लटक रहा है, जो अधुर से अमीरस का पान करती

प्रतीत हो रहा है। दांतों की शोभा अनार के दानों के समान अत्यंत सुंदर दिख रही है। सुंदर कानों में लाल बाला शोभायमान है। मस्तक पर कंचन रंग का अत्यंत सोहामणा तिलक है। इत्र से भीगे सुंदर घुंघराले बाल हैं, जिन पर सिंदूरिया रंग की पाग शोभित है, जिसमें कई रंगों की, बेल–बूटों, फूल–पत्तों की चित्रकारी है। पाग पर मोती की लड़ियों, कलंगी, तुर्रा व दुगदुगी की शोभा अपरंपार है। कलंगी की दूध से भी उज्जवल किरणें प्रकाशमान हो रही हैं। दुगदुगी में माणिक का नंग जड़ा है, जिसकी लाल किरणें निकलकर आकाश तक जाती दिख रही हैं।

सिनगार किया सब दुल्हे , वस्तर या भूखन ।
अब बखत हुआ देखन का , देखो रूह के नैनन ।। सागर 10/5

श्रीश्यामा महारानी अपने दोनों चरण कमल नूर की चौकी पर रखी हुयीं हैं। दोनों चरण अत्यंत कोमल एवं उज्जवल हैं। चरणों की तली, लांक व एड़ियाँ गहरी लालिमा से युक्त हैं। चरणों के अंगूठों में अनवट तथा अंगुरियों में बिछियाँ शोभायमान हैं। अनवट में हीरे की आरसी जड़ी है, जिसमें श्रीश्यामाजी जब अपना श्रृंगार निहारती हैं, तो आरसी में से बेशुमार किरणें चमकने लगती हैं। नख से तेजोमयी किरणें निकल रहीं हैं। चरणों में झांझरी, घूंघरी, कांबी, कड़ला के आभूषण जगमगा रहे हैं, जिनकी झनकार से सारा अर्श गूंज उठता है। श्रीश्यामा महारानी हरे रंग की चरणिया (पेटीकोट) पहनी हुयी हैं, जो तेजोमयी किरणों की जगमगाहट से युक्त है। गौर बदन में श्याम रंग की कंचुकी (ब्लाउज) अद्‌भुत शोभा धारण किये हुए है। सिंदूरिया रंग की साड़ी, बेशुमार जवाहरातों एवं जरी से सुशोभित है। इन सब वस्त्रों में अनेक प्रकार के बेल, पत्तों, फूलों की चित्रकारी है, अनेकों रंगों के नंग जड़े हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे बदन में सितारे लपेटे हुए सुंदरता की प्रतिमूर्ति हों। कमर में कमरपट्टिका शोभायमान है। सुंदर गले में सात हार जगमगा रहे हैं। सर्वप्रथम गले से लगते हुए 5 लड़ियों का चीड़ का हार है। इसके नीचे चंपकली का हार है, जिसमें सोने में अनेको नंग जड़े हुए हैं। इसके नीचे पाँच हार क्रमशः मोती, माणिक, लसनिया, हीरा व नीलवी के शोभायमान हैं, जिनकी रंगबिरंगी किरणें प्रकाशमान हो रही हैं। इन पाँचों हारों के मध्य 1–1 दुगदुगी (लाकेट) जगमगा रहीं हैं। इन सातों हारों के फुम्मक सात रंग के हैं, जिनकी शोभा साड़ी में से दिख रही है। श्रीश्यामाजी के बाजुओं में बाजूबंध हैं, जो अनेक रत्नों से जड़े हुए हैं। बाजूबंध के लटकते फुम्मक की शोभा देखकर नजर वहीं बंध जाती है। श्री श्यामाजी की कलाई में पोंहोंची, नवघड़ी, नवचूड़ तथा कंगन की शोभा है। जिनमें अनेक प्रकार के नंग जगमगा रहे हैं। नवचूड़ में नौ रंग के रत्न जड़े हैं, जिससे जुदी जुदी नौ चूड़ियाँ झलक रही हैं। कंगन की मधुर झनकार, पूरे परमधाम में गूंज उठती है। श्रीश्यामाजी के हस्त कमल अत्यंत कोमल तथा उज्जवल हैं, जो लालिमा से भरपूर हैं। नखों की तेजोमयी किरणों के सामने करोड़ों सूर्यों का प्रकाश फीका पड़ जाता है। हाथों की आठों अंगुरियों में आठ अलग–अलग नंगों की मुंदरियाँ जगमगा रहीं हैं। दायें हाथ के अंगूठे में हीरे की आरसी से युक्त अंगूठी है, जिसमें श्रीश्यामाजी कभी अपना श्रृंगार निहारती हैं, कभी प्राणप्रियतम श्रीराजजी महाराज की छबि निहारती हैं। बायें हाथ के अंगूठे में कंचन का छल्ला है।

श्रीश्यामाजी का स्वरूप अत्यंत सुंदर, किशोर अवस्था के तेज से भरपूर है। नूरी मुखमण्डल अत्यंत गौरा है, जो गहरी लालिमा से युक्त है। तिरछे नेत्र प्रेम से भरपूर हैं, जिनमें काजल की अद्‌भुत शोभा है। सुंदर कानों में पानड़ी का आभूषण है, जिसमें मोती और लाल माणिक की लरें लटक रही हैं, जिनकी आभा गालों पर झलक रही है। सुंदर नासिका में मुरली (बेसर) की शोभा बेमिसाल है, जिसमें लटकता मोती श्रीश्यामाजी के अधरों से लालिमा चुराता हुआ सा प्रतीत हो रहा है, जिससे मोती भी लाल रंग का दिखाई दे रहा है। लाल अधर गुलाब की पंखुडियों से भी कोमल हैं। दांतों की दोनों पंक्तियाँ हीरे के समान चमक रही हैं। माथे पर सुंदर बिंदी है, जो मुखारविंद की शोभा में चार चांद लगा रही है। मांग के नीचे पानड़ी (पान के पत्ते की आकृति का आभूषण) की शोभा बेमिसाल है, जिसके दायें–बायें मोतियों की लड़ियाँ स्वर्ण पट्टिका तक गयी हैं। मांग, सिंदूर की लालिमा से युक्त है। शीश कमल पर राखड़ी की शोभा है, जिसमें माणिक का नंग जड़ा है। जिसकी लाल रंग की किरणें साड़ी में से झलक रही हैं। बालों की चोटी गुंथी हुई है, जिसमें तीन रंग के फुम्मक (फुंदन)लटक रहे हैं। फुम्मक घूंघरी से युक्त हैं, जो चोटी के हिलने से मधुर झनकार उत्पन्न करते हैं। गौर पीठ पर लहराती चोटी, रंगबिरंगे फुम्मक, चोली के चारों बंध सब साड़ी में से

दिखायी दे रहे हैं। श्रीश्यामा महारानी आधा घूंघट लिए तिरछे नैनों से श्रीराजजी महाराज को निहारती हुई अत्यंत प्यारी लग रहीं हैं।

नैन तीखे अति अनियारे , सखी ये छबि कही न जाए ।
आधे घुंघट माशूक को , निरखत नैन तिरछाए ।। सागर 6/60

श्रीराजश्यामाजी को चारों तरफ से घेरकर सखियाँ, एक दूसरे से चिपक–चिपक कर, गलबहियाँ (एक दूसरे के गले में हाथ) डालकर, दाड़िम की कलियों (अनार के दानों) के समान बैठी हैं। बीच में एक अंगुरी की भी जगह नहीं है। देखने में ऐसा लग रहा है जैसे सब सखियाँ एक ही स्वरूप हों। उसमें भी जुदे जुदे रंगों की साड़ियाँ पहनी हुई हैं, जिनकी रंगबिरंगी किरणें चारों तरफ जगमगा रही हैं।

एक स्वरूप होए बैठियाँ , माहें वस्तरों कई रंग ।
क्यों ए बरनन होवहीं , रंग रंग में कई तरंग ।। सागर 2/6
एक दूजी को अंक भर , लग रहियाँ अंगों अंग ।
दिल में खेल देखन का , है सबों अंगों उछरंग ।। सागर 2/12

यह बैठक इतनी सुंदर दिख रही है कि श्रीमुखवाणी के सिनगार ग्रंथ में इसका उदाहरण देकर श्रीराजजी महाराज के चरणों के आभूषण, कांबी की शोभा को समझाया गया है। कांबी की जंजीरों में मोतियों की पुतलियाँ हैं, जो चरणों से चारों तरफ से उसी प्रकार लिपटी हैं, जिस प्रकार मूल मिलावे में श्रीराजश्यामाजी के चरणों से लगकर चारों तरफ सखियाँ बैठी हैं।

जैसे सरूप रूहन के , चरनों लगे गिरदवाए ।
त्यों पुतलियाँ मोतियन की , कदमों रहीं लपटाए ।। सिनगार 18/61

नक्शा नं.10 गोल हवेलियों के चार हारों की शोभा

चौरस हवेलियों के समान ही प्रत्येक दो गोल हवेलियों के बीच में भी थंभों की दो हारें व तीन गलियाँ शोभायमान हैं। चारों दिशा में मुख्य दरवाजों के दायें–बायें के मंदिरों के सामने 1–1 मंदिर के लं.–चौ., कमर भर ऊँचे दो चबूतरे हैं, जिन पर अति सुंदर चित्रकारी से युक्त पशमी गिलम बिछी है। इस चबूतरे की तीन दिशा में मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा शोभायमान है। जहाँ दो हवेलियों के मुख्य दरवाजे आमने–सामने हैं, वहाँ चार चबूतरे हैं। इन चबूतरों में श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ आते–जाते बैठकर बहुत हाँस–विनोद करते हैं। प्रत्येक चार गोल हवेलियों के मध्य में (हवेलियों के कोनों में) एक चौक शोभायमान है। रंगबिरंगी थंभों से निकलती हुई किरणें आपस में जंग करती प्रतीत होती हैं। दीवालों में बने चित्रों के पशु–पक्षी मधुर वाणी सुनाकर श्रीराजश्यामाजी व सखियों को रिझाते हैं। इन मंदिरों, गलियों व चबूतरों में घूमते–फिरते श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ बहुत हाँस–विलास करते हैं।

देखो इन द्वारने , खड़े युगल किशोर ।
रस भीगे बातां करें , रूहें खड़ी ठौर–ठौर ।। बड़ी वृत्त 5/15
कोई हंसत संग राज के, कोई खड़ी अंग संग जोड़।
कोई बाहु धर कांध पर , होत चित्त न काहुं मरोर ।। बड़ी वृत्त 5/16

नक्शा नं. 11 पंचमहलों की शोभा

चौरस एवं गोल हवेलियों के आठ फिरावों के पश्चात् नवे फिरावे में पंचमहलों की चार हारें हैं। प्रत्येक हवेली में 5–5 मंदिर होने से इसका नाम पंचमहला है। एक मंदिर मध्य में है तथा इससे लगकर चार मंदिर चारों दिशा में हैं। चारों कोनों में 1–1 थंभ हैं। इनको घेरकर चारों तरफ थंभों की एक हार शोभायमान है। प्रत्येक दो पंचमहलों के मध्य थंभों की दो हारें व तीन गलियाँ हैं। इन थंभों व मंदिरों में अनेक रंगों की चित्रकारी व अनेक नंगों की नक्शकारी है, जिनकी रंगबिरंगी किरणें चारों तरफ प्रकाशित हो रही हैं। इन मंदिरों व गलियों में खेलते, घूमते–फिरते समय श्रीराजश्यामाजी व सखियों के सुंदर प्रतिबिंब, थंभों व दीवालों में झलकते हैं, जो बहुत सुंदर लगते हैं।

इत हक हादी रूहें खेलत , नूर झलके हवेली दीवाल ।
नकस कटाव चित्रामन , रूहें रमती रहें खुशाल ।। बड़ी वृत्त 3/26

नक्शा नं. 12 दूसरी भोम के दस मंदिरों की हांस

दूसरी भोम में दरवाजे के मंदिर के ऊपर, दो मंदिर का लंबा व एक मंदिर का चौड़ा मंदिर है। जिसके बाहरी दीवाल में एक झरोखा, दो दरवाजे तथा छः जालीदार दीवाल हैं। दरवाजों व झरोखे के आगे कठेड़ा है। यहाँ खड़े होकर दो मंदिर के लंबे–चौड़े चौक की शोभा देख सकते हैं। इस मंदिर के दायें–बायें की दीवाल में 1–1 दरवाजे हैं तथा भीतर की दीवाल में एक बड़ा दरवाजा है, जिसके भीतरी तरफ 28 थंभ का चौक है। इस मंदिर के दायें–बायें 4–4 मंदिर हैं। जिनकी दायें–बायें व भीतर की दीवालों में 1–1 दरवाजे हैं तथा बाहरी दीवाल में 2–2 दरवाजे हैं। जिनसे निकलकर 4 मंदिर के लंबे व 2 मंदिर के चौड़े दोनों झरोखों में आ–जा सकते हैं। एक झरोखे से दूसरे झरोखे में सीधे नहीं जा सकते, मंदिरों के दरवाजों से अंदर होकर जाना पड़ेगा। झरोखों के बाहरी व भीतरी किनार पर 5–5 थंभ, नीचे चबूतरे के समान नंगों के हैं। तीन दिशा में थंभों के मध्य कठेड़ा शोभायमान है।

नक्शा नं. 13 – दूसरी भोम : भुल भुलवनी

रंगमहल के उत्तर दिशा में 50 हांस अर्थात् 1500 मंदिर हैं। वायब्य कोने (के गुर्ज) से पूर्व दिशा में 1200 मंदिर (लाल चबूतरे के) छोड़कर तथा ईशान कोने (के गुर्ज) से पश्चिम दिशा में 190 मंदिर छोड़कर, बीच के 110 मंदिरों की दोनों हारों के भीतरी तरफ, दूजी भोम में, 4 चौरस हवेलियों की चार हारों (16 हवेलियों) की जगह में, भुलवनी के 110 मंदिरों की 110 हारें सुशोभित हैं। सभी मंदिर आपस में जुड़े हुए हैं। सभी मंदिरों के चारों दिशा में दरवाजे हैं। कुल मिलाकर 12,100 मंदिर होते हैं, किंतु मध्य में 100 मंदिर की जगह में 10 मंदिर का लंबा–चौड़ा चौक है, जिससे मंदिर 12,000 हुए। चौक में चारों तरफ एक मंदिर की चौड़ी रौंस की जगह छोड़कर 8 मंदिर का लं.–चौ. कमर भर ऊँचा चबूतरा है। जिसके किनार पर थंभों की एक हार है। चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ों की शोभा है। चबूतरे पर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। भुलवनी के मंदिरों के दीवाल, दरवाजे आदि सब नूरमयी शीशे के हैं, जिससे एक–एक स्वरूप के अनेकों प्रतिबिंब बनते हैं। जिससे असल व नकल का पता ही नहीं चलता है। सखियाँ यहाँ पर छुआछुई (एक दूसरे को पकड़ने) का खेल खेलती हैं। एक सखी आगे भागती है, कई मंदिर पार कर जाती है किंतु चारों तरफ दीवालों, दरवाजों में प्रतिबिंब पड़ने से भुलवन (भ्रम) हो जाता है, जिससे सखियाँ उसे पकड़ नहीं पाती हैं, इस प्रकार बहुत हाँसी होती है। इस समय कभी श्रीराजश्यामाजी मध्य चबूतरे पर विराजमान होकर चारों तरफ सखियों को खेलते हुए देखते हैं, तब इस समय की शोभा बहुत सुंदर लगती है। कभी राजजी भी खेलने आ जाते हैं, तब सखियाँ उन्हें पकड़ ही नहीं पाती हैं, जिससे खेल का आनंद और बढ़ जाता है।

रूहें द्वार एक दौड़ के , चौथे जाए निकसत ।
प्रतिबिंब उठे कई तरफों , कोई काहूँ ना पकरत ।। परि. 31/18
इन ठौर खेल रूहन के , बोहोत भई भुलवन ।
होत हांसी इत खेलते , रंग रस बढ़त रूहन ।। परि. 38/20

नक्शा नं. 14 दूसरी भोम : खड़ोकली

भुलवनी के 110 मंदिरों में से दायें–बायें 40–40 मंदिर छोड़कर मध्य के 30 मंदिरों के सामने, मंदिरों की दोनों हारों के बाहरी तरफ खड़ोकली (तरण–ताल) शोभायमान है, जो ताड़वन की जमीन पर है किंतु रंगमहल से जुड़ा होने से रंगमहल के अंतर्गत आता है। सर्वप्रथम ताड़वन की जमीन में 32 मंदिर का लंबा–चौड़ा भोम भर ऊँचा चबूतरा है, जो रंगमहल के चबूतरे से मिला हुआ है। इसके तीन दिशा में (चाँदों) से सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा है। कठेड़े के भीतरी तरफ 1 मंदिर की

चौड़ी रौंस की जगह छोड़कर, तीन दिशा (पूर्व, पश्चिम, उत्तर) में 30–30 मंदिर विद्यमान हैं। कुल 88 मंदिर हुए क्योंकि कोने के मंदिर दो तरफ गिने जाते हैं। इन मंदिरों की बाहरी दीवाल में 2–2 दरवाजे एवं 1–1 झरोखे शोभायमान हैं। संधि की दीवालों में 1–1 दरवाजा है। अंदर की दीवालों में दरवाजे नहीं हैं। क्योंकि इनके भीतर खड़ोकली का जल भरा है। खड़ोकली की चौथी दिशा में (रंगमहल की तरफ) 28 मंदिर की लंबी, एक मंदिर की मोटी, एक भोम ऊँची दीवाल है। इस दीवाल की छत से रंगमहल की दूजी भोम एक छज्जे से मिली हुयी है। जिससे रंगमहल की दूजी भोम से खड़ोकली में आ–जा सकते हैं। छज्जे के नीचे, 1 मंदिर की मोटी दीवाल व बाहरी हार मंदिरों के मध्य परिक्रमा की रौंस है, जो रंगमहल के चारों तरफ घूमी है।

दूजी भोम में 28 मंदिर की लंबी–चौड़ी खड़ोकली (तरण–ताल) दिख रही है। यह तीन भोम गहरी है, एक भोम जमीन के नीचे, दूसरा चबूतरे तक तथा तीसरा प्रथम भोम तक। खड़ोकली की तीन दिशा में, नीचे के मंदिरों के ऊपर 1 मंदिर 33 हाथ की चौड़ी रौंस है, जिसकी बाहरी किनार पर कठेड़ा है। चौथी दिशा (दक्षिण) में 2 मंदिर की दूरी पर रंगमहल के बाहरी मंदिरों की हार है। इन रौंसों से भीतरी तरफ खड़ोकली के कमर भर गहरे जल चबूतरे पर, चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। खड़ोकली के तीन दिशा से ताड़वन के वृक्षों ने डालियाँ फैलाकर जल चबूतरे तक छाया किये हैं। चौथी दिशा में रंगमहल के ऊपर के भोमों के झरोखें (छज्जे) शोभायमान हैं। खड़ोकली के चारों तरफ रौंस पर सिंहासन व कुर्सियाँ रखी हैं। वृक्षों की छांव तले इस बैठक की शोभा अपरंपार है।

नूर तीनों तरफों झलुबिया , तरफ चौथी नूर झरोखे ।
नूर बन छाया जल पर , खासी बैठक नूर ठौर ए ।। परि. 37/18

जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ यहाँ आते हैं, तो तरह–तरह से जल में तैरने व खेलने का आनंद लेते हैं। फिर श्रृंगार करके श्रीराजश्यामाजी भुलवनी के मध्य चौक में सिंहासन पर विराजमान होते हैं तथा सखियाँ चारों तरफ भुलवनी के मंदिरों में खेलती हैं। इस प्रकार कभी पहले भुलवनी खेलकर खड़ोकली में झीलना करने जाते हैं। कभी पहले खड़ोकली में झीलना करके भुलवनी के मंदिरों में खेलने जाते हैं।

इत खड़ोकली जल हिलोले , धनी साथ झीलें झकोलें।
इत सिनगार करके खेलें , ठौर जुदे–जुदे जुत्थ मिले ।। परि. 3/76

नक्शा नं.15 तीजी भोम की पड़साल

तीसरी भोम में 10 मंदिर की हांस में, 10 मंदिर की लंबी व 2 मंदिर की चौड़ी पड़साल (बाल्कनी) है। जिसके बाहरी व भीतरी किनार पर सुंदर थंभ शोभायमान हैं। ये थंभ नीचे के थंभों के समान रंगो व नंगों के हैं। पड़साल की बाहरी किनार पर तीन दिशा में थंभों के मध्य कठेड़ा शोभायमान है। पड़साल के भीतरी तरफ 4 मंदिर की लंबी व 1 मंदिर की चौड़ी देहेलान है, जिसके दोनों किनार (पूर्व व पश्चिम) पर 2–2 थंभ व 3–3 मेहराबें हैं। मध्य की मेहराबें दो मंदिर की चौड़ी हैं तथा दायें–बायें की मेहराबें 1 मंदिर की चौड़ी हैं। देहेलान के दायें–बायें 3–3 मंदिर हैं। दक्षिण दिशा का दूसरा मंदिर नीले–पीले रंग का है। देहेलान के भीतरी तरफ 4 मंदिर का लंबा व 1 मंदिर का चौड़ा चबूतरा है। इस चबूतरे से 28 थंभ के चौक में तथा उत्तर व दक्षिण दिशा में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। पड़शाल, देहेलान,दायें–बायें के 3–3 मंदिर तथा चबूतरा एक समान स्तर (ऊँचें) के हैं, तथा तीजी भोम से कमर भर ऊँचे हैं। देहेलान के दायें–बायें के 3–3 मंदिरों से भी अंदर गली में चाँदों के द्वारा 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। 28 थंभ के चौक के दक्षिण दिशा में दूसरी हार मंदिरों में से पहला मंदिर आसमानी रंग का है।

प्रातः काल 6 बजे श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ जब पाँचवी भोम से तीजी भोम की पड़साल में पधारते हैं, तब सामने चाँदनी चौक में अनेकों जाति व रंगों के बेशुमार पशु–पक्षी, परमधाम के कोने–कोने से श्रीराजश्यामाजी व सखियों के दर्शनों के लिए पधारते हैं। वृक्ष, यमुनाजी, चाँद, सूरज आदि सभी दर्शन करते हैं। श्रीराजजी महाराज अपनी अमृतमयी नजरों से सभी को सींचते हैं, सुख प्रदान करते हैं। इश्क की मस्ती में सब झूम–झूमकर नाचने लगते हैं।

तीजी भोम की जो पड़साल, ठौर बड़े दरवाजे विशाल।

धनी आवत हैं उठि प्रात, वन सींचत अमृत अघात ।। परि. 3/80
आये दरवाजे आगे खड़े , खेलौने अति घन ।
स्याम स्यामाजी साथ को , पशु पंखी लेवें दरसन ।। परि. 5/14

इसके पश्चात् चार सखियाँ श्रीराजजी महाराज को देहेलान में आभूषणों का श्रृंगार कराती हैं तथा चार सखियाँ श्रीश्यामा महारानी को आसमानी रंग के मंदिर में बड़े प्रेम से श्रृंगार कराती हैं। सभी सखियाँ 6–6 हजार मंदिरों की दोनों हारों में जाकर एक–दूसरे को श्रृंगार कराती हैं। जैसा श्रृंगार प्राणप्रियतम श्रीराजजी महाराज को प्यारा लगता है, वैसा ही श्रृंगार सजकर, कोई सखी लटकती–मटकती चाल से चलती हुई, कोई मधुर वाणी निकालती हुई, कोई पैरों के आभूषणों का झंकार करती हुई, आपस में हंसते हुई, चमकती हुई, कोई उछलती हुई, कोई फूल लता के समान बलखाती हुई, कोई धीरे–धीरे चलती हुई, जल की लहरों के समान जुत्थ के जुत्थ आती हुई, कोई भंवरे के समान घूमती हुई, सुंदरता से भरपूर शोभित होती हुई, अनेक प्रकार से चलती हुयीं श्रीश्यामाजी को लेकर 28 थंभ के चौक से होते हुए, चबूतरे की सीढ़ी के पास आती हैं। श्रीराजजी महाराज, श्रीश्यामाजी की दिल की इच्छा जानकर अगुवानी करने के लिए सीढ़ी के पास आते हैं। राजजी एक सीढ़ी उतरते हैं, श्यामाजी एक सीढ़ी चढ़ती हैं, मध्य की सीढ़ी में श्रीराजजी का, श्यामाजी से मधुर मिलन होता है। श्रीश्यामा महारानी, राजजी को तिलक लगाती हैं, श्रीराजजी श्यामाजी की मांग में सिंदूर भरते हैं। सब सखियों की मांग में सिंदूर स्वतः आ जाता है।

अर्श मिलावा ले चली , अपने संग सुभान ।
किया चाह्या सब दिल का , आगूं आए लिए मेहेरबान ।। सागर 6/129

इसके पश्चात् श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ चबूतरे पर विराजमान होकर मेवा मिठाई आरोगते हैं। लाड़बाई अलग–अलग रंगों के, अलग–अलग स्वाद के, अनेक प्रकार के मेवा–मिठाई धनी को आरोगाती हैं। श्रीराजजी महाराज कोमल हाथों से आरोगते हुए मीठी बातें भी करते जा रहे हैं। कोई सखी श्रीराजजी महाराज के सुंदर मुखारविंद को निहार रही है, कोई नैनों–नैन मिलाकर प्रेम की बातें कर रही है। इस प्रकार आरोगते हुए 7.30 बज जाते हैं। इसके पश्चात् चबूतरे से उठकर श्रीराजश्यामाजी देहेलान में से होते हुए, नीले पीले मंदिर के सामने, पड़साल पर झरोखे की तरफ पीठ करके सिंहासन पर विराजमान होते हैं। इस समय कुछ सखियाँ श्रीराजश्यामाजी के साथ बैठती हैं, कुछ सखियाँ वनों में जाने लगती हैं। कुछ रसोई के मंदिर में जाने लगती हैं। कोई सखी आती है, कोई सखी जाती है। नवरंगबाई और उनके जुत्थ की सखियाँ, धनी को रिझाने के लिए सामने विराजमान होकर 36 राग व रागनियों, से मधुर संगीत व स्वर के साथ गायन प्रारंभ कर देती हैं। ठीक इसी समय अक्षरधाम से अक्षरब्रह्म व महालक्ष्मी, पशु–पक्षी की सैन्या समेत चाँदनी चौक में आते हैं। श्रीराजजी महाराज का दर्शन व प्रणाम करके वापस चले जाते हैं।

नवरंगबाई के मधुर गायन का रसपान करते हुए चार घड़ी और व्यतीत हो जाती है और नौ बज जाते हैं तब जो सखियाँ वनों में गयी थीं, वे शाक–भाजी, फल–फूल, पान–मसाले लेकर वापस आ जाती हैं। शाक तरकारी, प्रथम भोम में रसाई के मंदिर में लाड़बाई के जुत्थ की सखियों को देकर, पान–मसाले, फल–फूल लेकर तीजी भोम में आ जाती हैं। फिर श्रीराजश्यामाजी से मीठी बातें करते हुए पानों का बीड़ा बनाती जाती हैं। 10.30 बजे तक पानों का बीड़ा बनाकर नीलो–पीलो मंदिर में पलंग के नीचे चौकी पर रख देती हैं। मीठी बातें करते–करते एक दो घड़ी और व्यतीत हो जाती है। तब लाड़बाई आकर धनी से भोजन की आज्ञा मांगती हैं। आज्ञा पाकर सखियाँ सिंहासन के सामने पड़साल में गादी, चाकले (आसन) व चौकी रख देती हैं। श्रीराजश्यामाजी आसन पर विराजमान हो जाते हैं। सखियाँ प्रथम भोम की रसोई की हवेली से, सीढ़ियों द्वारा दौड़–दौड़कर आरोगने की सामग्री लेकर आती हैं। एक सखी सब्जी की कटोरी लेकर आगे बढ़ती है, तो सामने से आती हुई दूसरी सखी वह कटोरी छीनकर ले जाती है। आगे तीसरी सखी उससे भी कटोरी छीनकर आगे बढ़ती है, तो चौथी सखी उससे भी कटोरी छीनकर श्रीराजजी को पहुँचा देती है। परंतु एक–दूसरे पर कभी भी गुस्सा नहीं होती हैं, क्योंकि सभी एक ही अंग हैं। परमधाम में जो सुख एक सखी को मिलता है, वह देखने मात्र से ही सभी सखियों को मिल जाता है। जो सखी कटोरी नहीं पहुँचा पायी थी, वो जाकर और कटोरी ले आती है। श्रीराजजी इनका दिल रखते हुए कहते हैं कि मैंने तुझसे ही पहले कटोरी प्राप्त की है।

इस प्रकार भोजन परोसते समय सखियों के पैरों की ठमकार से व आभूषणों की झँकार से नवों भोम गूँज उठता है। सखियों के सुंदर प्रतिबिंब सीढ़ियों पर झलकते हैं। भोजन के अंत में लाड़बाई धनीजी के लिए दूध, दही, मिठाई आदि लाती हैं। धनीजी को भोजन आरोगाने के बाद सखियाँ प्रथम भोम में जाकर भोजन आरोगती हैं। तब श्रीराजश्यामाजी नीलो–पीलो मंदिर में सुख सेज्या पर विराजमान हो जाते हैं। भोजन आरोगकर सखियाँ यहाँ वापस आती हैं। और श्रीराजजी महाराज के कर–कमलों से पानों का बीड़ा प्राप्त करती हैं। फिर श्रीराजश्यामाजी दोप. 12 से 3 बजे तक यहाँ शयनलीला करते हैं। सखियाँ प्रणाम करके वनों में या रंगमहल में मनचाही जगह में टोले–टोले खेलने को जाती हैं क्योंकि सखियों के मन में खेलने की चाहना होती है। कुछ सखियाँ दूजी भोम में भूलवनी व खड़ोकली में खेलने चली जाती हैं, कुछ सखियाँ सातवीं–आठवीं भोमों में झूला झूलने जाती हैं, कुछ सखियाँ दसवीं आकाशी में जाकर बगीचों, नहरों व फव्वारों के बीच दौड़ती–खेलती हैं, कुछ सखियाँ बट–पीपल की चौकी में जाकर नहरों के ऊपर झूला झूलने का आनंद लेती हैं। कुछ सखियाँ फूल बाग में जाकर रंगबिरंगे फूलों व फव्वारों के मध्य विचरण करती हैं। कुछ सखियाँ लाल चबूतरा, बड़ोवन, ताड़वन में जाकर खेलती हैं, कुछ सखियाँ सात घाट, यमुनाजी में जाकर घूमती–फिरती हैं। अनेक प्रकार के खेल रामतें करके, हांस विनोद करके 3 बजे सभी सखियाँ वापस रंगमहल के तीजी भोम में पधारती हैं। तब श्रीराजजी, श्यामाजी से पूछते हैं कि आज रमने के लिए कहाँ जाना है। तब श्रीश्यामाजी सखियों से पूछती हैं। सखियों की इच्छानुसार सभी, सुखपालों में बैठकर परमधाम के पच्चीस पक्ष में से मनचाही जगह में सैर करने जाते हैं। कृष्ण पक्ष के 15 दिन शाम 6 बजे वापस रंगमहल में आ जाते हैं। तब प्रथम भोम की रसोई की हवेली में भोजन आरोग के चौथी भोम में रात 9 बजे तक नृत्य देखते हैं। फिर पाँचवी भोम में शयन हेतु पधारते हैं। शुक्ल पक्ष के 15 दिन, 6 बजे न आकर चँद्रमा के शीतल प्रकाश में वनों में ही खेल रामतें करते हैं व नृत्य देखते हैं। तत्पश्चात् वनों में ही भोजन आरोगकर रात 9 बजे सीधे पाँचवी भोम में शयन हेतु पधारते हैं।

नक्शा नं.16–चौथी भोम : नृत्य की हवेली

रंगमहल की चौथी भोम में 28 थंभ के चौक से चौथी चौरस हवेली नृत्य की है, जहाँ कृष्ण पक्ष के 15 दिन रात्रि के प्रथम प्रहर (शाम 6 से 9 बजे) में श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ नृत्य का आनंद लेते हैं।

एक पोहोर निरत होत है, क्यों कहूँ जुबाएँ सुख ।
रूहें घेर के बैठत , देखें नूरजमाल का मुख ।। बड़ी वृत्त 17/8

अन्य चौरस हवेलियों के समान इस हवेली के भी उत्तर, दक्षिण व पश्चिम दिशा में 20–20 मंदिर व मध्य में बड़े दरवाजे हैं। किंतु पूर्व दिशा में मंदिरों की जगह में 21 मंदिर लंबी देहेलान है, जिसमें नीले रंग के 20–20 थंभों की दो हारें हैं। इनके भीतरी तरफ थंभों की हारें व चबूतरा उसी प्रकार विद्यमान हैं। उत्तर दिशा के मंदिर व थंभ पीले रंग के हैं। पश्चिम दिशा के मंदिर व थंभ सफेद रंग के हैं। दक्षिण दिशा के मंदिर व थंभ लाल रंग के हैं। पूर्व दिशा में देखने पर तीसरी चौरस हवेली की पश्चिम दिशा के मंदिर दिख रहे हैं, जो हरे रंग के हैं। इन सबमें अनेक रंगों की चित्रकारी व नक्शकारी सुशोभित है। नृत्य के समय श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ, चबूतरे के पश्चिम में, पूर्व की तरफ मुख करके, सिंहासन व कुर्सियों में विराजमान हो जाते हैं। तब सामने अत्यंत सुंदर किशोर अवस्था वाली सखी नवरंगबाई, नूरी वस्त्राभूषणों से सजी हुई, चमकती हुई आकर खड़ी हो जाती है। नवरंगबाई ने श्याम रंग की साड़ी पहनी हुईं हैं, आमरस के (पीले) रंग की कंचुकी (ब्लाऊज), पाँच पटे की चरनियाँ (पेटीकोट) तथा हरे रंग की इजार पहनी हुई हैं, जो अनेक प्रकार की बेल–बूटे, फूल–पत्तों की चित्रकारी व नंगों से युक्त है। ऐसा लग रहा है, जैसे नवरंगबाई बदन में सितारे लपेटी हुईं हैं। नवरंगबाई के जुत्थ की सखियों में से कुछ सखियाँ नृत्य में साथ देने के लिए खड़ी हो जाती हैं, तथा अन्य सखियाँ अनेक प्रकार के वाद्य यंत्रों के साथ दोनों बाजू में विराजमान हो जाती हैं। नवरंगबाई पहले अलाप देती हैं, फिर गायन व नृत्य प्रारंभ कर देती हैं। मधुर संगीत बजना प्रारंभ हो जाता है। सभी मिलकर एक स्वर व ताल में वाद्य यंत्र बजाती एवं गाती हैं। जिसका नाम ही नवरंग है, उसके नृत्य की क्या तारीफ करें। धाम धनी को रिझाने के लिए अनेक कलाओं से, नये–नये तरीके से इस प्रकार नृत्य करतीं हैं कि नजर बंध सी जाती है।

नामै जाको नवरंग , ताकी निरत कहूँ क्यों कर ।

अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नये नये दिल धर ।। परि. 31/63
मेहबूब को रिझावने , अनेक कला साधत ।
और नजर न कर सके , बंध ऐसे ही बांधत ।। परि. 31/74

नवरंगबाई प्रेम से परिपूर्ण, अति प्यारी मधुर आवाज में गाती हैं तथा स्वर एवं ताल के अनुसार हाथ–पांव हिलाते हुए नाचती हैं। नाचते समय शरीर के सारे आभूषण भी स्वर–ताल के अनुसार मधुर आवाज उत्पन्न करते हैं। इस कला से नाचते हुए पड़ताल देती हैं (पैर पटकती हैं) कि जिस आभूषण के आवाज की इच्छा करती हैं उसी आभूषण की आवाज सुनाई देती है। जो झांझरी की इच्छा करती हैं तो केवल झांझरी की ही आवाज आती है, घूंघरी, कांबी, कड़ला की आवाज नहीं आती है। जो घूंघरी बजाने की इच्छा से पड़ताल देती हैं तो घूंघरी के सिवा अन्य किसी आभूषण की आवाज नहीं आती है। जो चाहती हैं कि सभी आभूषण बजें तो सभी आभूषण एक साथ एक स्वर–ताल में बजते हैं।

जिन विध पाऊँ चलावहीं , सोई भूखन बोलत ।
जो बजावे झांझरी , तो घूंघरी कोई न चलत ।।
जो बोलावत घूंघरी , तो नहीं झांझरी बान ।
जो सबे बोलावत , तो बोलें सब समान ।। परि. 31/56 , 57

चूँकि परमधाम का जर्रा–जर्रा चेतन व नूरमयी है। अतः इस समय पूरे परमधाम में सब जगह महलों में, थंभों–दीवालों में, जहाँ भी नजर करें वहाँ, सभी जगह नृत्य दिखायी पड़ता है, संगीत भी सुनायी पड़ता है।

जहाँ–जहाँ नजर करें , जानो निरत होत सब ठौर ।
कोई ठौर खाली नहीं , जहाँ देखें तहाँ और ।। बड़ी वृत्त 21/18

इस प्रकार एक पोहोर रात (9 बजे) तक निरत का आनंद लेकर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ पाँचवीं भोम में शयन हेतु पधारते हैं।

नक्शा नं.17 पाँचवीं भोम के नौ चौक

पाँचवी भोम में हवेलियों के नौ फिरावों के मध्य में जो नौ चौक (महाहवेलियाँ) हैं, उनमें से मध्य के चौक में श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ रात्रि 9 बजे से प्रातः 6 बजे तक शयन की लीला करते हैं। सभी चौकों की शोभा वैसे तो एक जैसी है, किंतु मध्य के इस चौक में रंग प्रवाली मंदिर की शोभा अधिक है। एक चौक (महाहवेली) में 8 हवेलियों की 8 हारें (कुल 64 हवेलियाँ) हैं, जिनके चारों कोनों में चार दोपुड़े (दो रास्ते) हैं, चारों दिशा में 7–7 (कुल 28) त्रिपुड़े (तीन रास्ते) हैं तथा बीच–बीच में 7 चौपुड़ों (चार रास्ते) की 7 हारें (कुल 49) हैं। इन सब में बेशुमार तेजोमयी किरणों से युक्त कुल 12,000 मंदिर जगमगा रहे हैं।

नूर देखो भोम पाँचमी , जित मंदिर नूर सेज ।
बारे हजार मोहोल नूर के , सब नूरै रेजारेज ।। परि. 37/57

नक्शा नं.18 रंग प्रवाली मंदिर

इस नक्शे में नौ चौक में से तीन चौक संक्षिप्त में दर्शाये गये हैं। प्रत्येक दोपुड़े में 79 मंदिर हैं। प्रत्येक त्रिपुड़े में 102 मंदिर हैं। प्रत्येक चौपुड़े में 124 मंदिर हैं। तथा प्रत्येक हवेलियों में 43 मंदिर हैं। कुल मिलाकर एक चौक में 12,000 मंदिर, 12,000 सखियों के शयन के हैं। इन मंदिरों में मात्र एक ही दिशा में दरवाजे हैं। चूँकि नवों चौक आपस में जुड़े हुए हैं इसलिए संधि के मंदिरों को जुड़ाफे का मंदिर कहते हैं। इन सभी मंदिरों में सभी प्रकार की सुख सामग्री, नूरमयी सेज्या, वस्त्राभूषणों से भरी संदूकें, हिण्डोलें, सिंहासन, खाने की सामग्री आदि विद्यमान हैं। चौक के बीचोंबीच जो चौपुड़ा है, उसमें मध्य में प्रवाल से भी ज्यादा लाल, 2 मंदिर का लंबा–चौड़ा, रंगप्रवाली मंदिर शोभायमान है, जिसमें से अनेक रंगों की तेजोमयी किरणें निकल रही हैं।

ऐ मंदिर रंग परवाली , सो मैं क्या कहूँ ताकी लाली ।
माहें अनेक रंगों की जोत , सो मैं कही न जाए उद्योत ।। परि. 3/156

इस मंदिर में चारों दिशा में चार दरवाजे हैं। इस मंदिर में भी सभी प्रकार की सुख सामग्री एवं सुंदर नूरमयी सुख–सेज्या विद्यमान है। इस सेज्या की शोभा इस प्रकार हैः– 4 पायों पर 4 डांडे हैं। पाँच रंग की निवार है, जिस पर मखमल का गद्दा, चद्दर, तकिये शोभायमान हैं। चार डांडों पर एक छत्री है। 4 कलश 4 डांडों पर हैं, एक कलश छत्री के ऊपर मध्य में है। सेज्या के सामने दो नूर की चौकी है। इस प्रकार सेज्या की सारी सजावट नूरमयी दिख रही है। इस मंदिर में श्रीराजश्यामाजी शयन करते हैं इसलिए इसे श्रीश्यामाजी का मंदिर कहते हैं।

सुख बड़ो भोम पांचमी , मध्य मंदिर बारे हजार ।
बीच मोहोल स्यामाजी को , इन चारों तरफों द्वार ।। परि. 31/78

श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ रात नौ बजे शयन के लिए जब रंगप्रवाली मंदिर में पधारते हैं, तब नूर की चौकी पर चरण रखकर श्रीराजश्यामाजी सेज्या पर विराजमान होते हैं। सब सखियाँ प्रणाम करके अपने–अपने मंदिरों में जाती हैं। केवल 20 सखियाँ रूकती हैं, जिनमें से 4–4 सखियाँ श्रीराजश्यामाजी के चरण दबाती हैं। शेष 12 सखियाँ विभिन्न वाद्य यंत्रों से धीमा व मधुर संगीत सुनाती हैं। श्रीराजश्यामाजी के शयन के पश्चात् ये सखियाँ भी प्रणाम करके जब अपने मंदिरों में जाती हैं, तो वहाँ क्या देखती हैं कि उनके मंदिरों में पहले से श्रीराजजी बैठे हैं। महामति जी की बड़ी वृत्त के अनुसार सखियाँ प्रणाम करके जैसे ही सिर उठाती हैं, तो क्या देखती हैं कि वे श्रीराजजी के साथ अपने ही मंदिरों में, सेज्या पर बैठी है।

रूहें कदमों लागत , सिर उठावत तब ।।
जाने आप अपनी सेज पर, बैठे संग श्रीराज ।। बड़ी वृत्त 17/103,104

सखियाँ इश्क व आनंद में खो जाती हैं। सुबह उठती हैं तो राजजी साथ में दिखाई नहीं देते, तब सभी सखियाँ रंग प्रवाली मंदिर में जाकर धनी को मंगल गीत गाकर उठाती हैं।

नक्शा नं.19 छठी भोम : सुखपाल

छठी भोम में बाहरी हार मंदिरों एवं पहली थंभों की हार के मध्य गली (देहेलान) में 6,001 सुखपाल रहते हैं। तथा 28 थंभ के चौक में एक तखतरवा रहता है। सुखपाल व तखतरवा परिवहन के ऐसे चेतन साधन हैं, जो मन की गति से, मन की इच्छानुसार स्थान पर, आकाश मार्ग से उड़ाकर, श्रीराजश्यामाजी व सखियों को ले जाते हैं। सुखपाल में दो सखियाँ ही बैठ सकती हैं। जबकि तखतरवा में श्रीराजश्यामाजी व 12,000 सखियाँ एक साथ बैठ सकते हैं।

सुखपाल :–एक सुखपाल 9 हाथ का लंबा व 4 हाथ का चौड़ा है। इसमें 4 पाये व 4 डांडे हैं। ऊपर 2 छत्री, 2 गुम्मट व 8 कलश शोभायमान हैं। चारों तरफ मोतियों की झालर लटक रही है। सुखपाल के लंबाई के तीन भाग हैं। मध्य का भाग चरण रखने के लिए 1 हाथ नीचा है। दायें–बायें के भाग में बैठने के लिए गादी, 3–3 तकिये व चाकले(आसन) रखे हैं। जिस पर युगल स्वरूप आमने–सामने नैन मिलाकर बैठते हैं। इनके दायें–बायें 1–1 गज के गोफने पकड़ने के वास्ते लटक रहे हैं।

जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ घूमने जाने की इच्छा करते हैं, तब सभी सुखपाल छठी भोम की देहेलान से आकर तीजी भोम की पड़साल से लग जाते हैं। एक सुखपाल में श्रीराजश्यामाजी व 1–1 सुखपाल में 2–2 सखियाँ विराजमान हो जाती हैं। देखते ही देखते मनवेगी इच्छाचारी नूर के सुंदर सुखपाल आसमान में छा जाते हैं। कोई सखी अपना सुखपाल श्रीराजश्यामाजी के सुखपाल के दाहिने तरफ लगाकर हांस–विनोद, बातें करते हुए साथ–साथ चल रही है। तो कोई सखी बायीं तरफ सुखपाल लगाकर श्रीराजजी की बातें सुनते हुए साथ चल रही है। कुछ सखियाँ आपस में आनंद पूर्वक वार्तालाप करते हुए साथ चल रहीं हैं। मन की इच्छानुसार सुखपाल आगे–पीछे, दायें–बायें, ऊपर–नीचे चलते हैं। इस समय सभी पशु–पक्षी भी आनंद लेते हुए सवारी के साथ चलते हैं। जमीन के पशु–पक्षी जमीन पर, आकाश के पशु–पक्षी आकाश में, 'राज–राज','धनी–धनी' करते, बाजे बजाते, धनी के गुण गाते हुए चलते हैं। एक–एक सुखपाल के साथ कई हजारों पशु–पक्षी, नाचते–गाते, खेल–करतब दिखाते चलते हैं। इस समय पूरा आसमान भरा हुआ दिखता है। इस प्रकार सुखपाल की सवारी का आनंद अलग ही रोमांचक होता है।

दो दो रूहें मिल बैठती , सुख लेती सुखपाल ।

कहाँ सुख साथ माशूक के , सैर जाते जोए या ताल ।। परि . 19/4

<u>तखतरवा</u> :– यह 96 हाथ का लंबा–चौड़ा 16 पहल का है। प्रत्येक पहल 18 हाथ का लंबा है। 16 पायों पर 16 डांडे हैं, जिनके ऊपर एक गुम्मट है। 16 कलश 16 डांडों पर हैं तथा एक कलश गुम्मट पर है। तखतरवा के किनार पर डांडों के मध्य कठेड़ा है। नीचे सुंदर गलीचा व ऊपर चंद्रवा शोभायमान है। गलीचे पर सिंहासन व कुर्सियाँ रखी हुई हैं। जब रूहों की इच्छा होती है कि तखतरवा में सभी एक साथ बैठकर, हांस विनोद करते हुए जाएँ, तब तखतरवा तीजी भोम की पड़साल से लग जाता है। श्रीराजश्यामाजी के साथ सब सखियाँ तखतरवा में बैठ जाती हैं और मनइंछित जगह में जाती हैं। तखतरवा एक गोल मकान की तरह आकाश में उड़ता हुआ प्रतीत होता है।

जो दिल चाहे तखतरवा , हजार बारे ले बैठत ।
राजश्यामाजी बीच में , आकाश में उड़त ।। परि. 29/71

परमधाम के नूरी आकाश का कोई पारावार नहीं है। सुखपाल या तखतरवा में बैठकर जितना ऊपर जाना चाहते हैं, जाते हैं। घूमते फिरते, हांस विनोद करते हुए आनंद में खो जाते हैं।

पार नहीं आसमान को, जहाँ लों जानें तहाँ लों जाएँ।
खेलकर पीछे फिरें , देखें पर्वत आए ।। परि. 29/74

नक्शा नं.20 सातवीं भोम:दो ताली के हिण्डोले

सातवीं भोम में बाहरी हार मंदिरों के भीतरी तरफ जो 6–6 हजार थंभों की दो हारें हैं, उनकी मेहराबों में 6–6 हजार (कुल 12,000) हिण्डोले हैं। इन हिण्डोलों के कड़े कंचन जड़ित हैं, डांडे माणिक के हैं, हिण्डोले हीरे के हैं, जिनमें अनेक रंगों की चित्रकारी व नक्शकारी है। जिनकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ झलकार कर रहीं हैं। इन हिण्डोलों में सुंदर बिछौने, तकिये आदि शोभायमान हैं। यहाँ दो हिण्डोलों की ताली पड़ती है। इन हिण्डोलों में सखियाँ, प्राणवल्लभ श्रीराजजी महाराज के साथ साम–सामे नजर मिलाकर झूला झूलने का आनंद लेती हैं। झूलते समय हिण्डोलों की जंजीरों की मधुर आवाज, सखियों के आभूषणों की आवाज तथा सखियों की तालियों व हँसी की आवाज से पूरा वातावरण आनंद से भर जाता है।

सुख कहाँ कहूँ भोम सातमीं , जो लेते खटोंछपर ।
हक हादी रूहें झूलत , साम सामी बाँध नजर ।। परि. 19/14
ऐ सुख आनंद अति बड़ो , रंग रस बढ़त अति जोर ।
भूखन हांसी कड़े हिण्डोले, ऐ क्यों कहूँ अर्श सुख सोर।। परि. 31/120

नक्शा नं. 21 आठवीं भोम : चार ताली के हिण्डोले

आठवीं भोम में सातवीं भोम के समान ही (बाहरी हार मंदिरों के भीतरी तरफ के दोनों थंभो की हारों की मेहराबों में) 12,000 हिण्डोले तो हैं, साथ ही मध्य (गली) की मेहराबों में भी 6,000 हिण्डोलें हैं। कुल 18,000 हिण्डोलें हैं। इन हिण्डोलों की शोभा सातवीं भोम के समान ही है, किंतु यहाँ चार हिण्डोलों की ताली पड़ती है अर्थात् चारों दिशाओं से झूलें एक साथ आते हैं, चार सखियाँ ताली बजाती हैं फिर एक साथ सभी हिण्डोले पीछे जाते हैं। मध्य के हिण्डोले दूसरी तरफ घूम जाते हैं, वहाँ फिर चार सखियाँ आपस में ताली बजाती हैं। इस प्रकार चारों तरफ हँसी मजाक की बातें करते हुए श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ झूला झूलते हैं।

सुख हिण्डोले भोम आठमीं , हक हादी रूहें हींचत।
ऐ चारों तरफ के झूलने , हक हमको देत लज्जत ।। परि. 37/94

झूलते समय जंजीरों, हिण्डोलों, सखियों के आभूषणों की मधुर झँकार से तथा सखियों की हँसी की आवाज से वातावरण गूँज उठता है। जब सभी सखियाँ एक साथ झूलते हैं तब ऐसा लगता है, जैसे लहरें चल रही हों। चारों तरफ हिण्डोलें, जंजीरें तथा सखियों के वस्त्राभूषण चमचमा रहे हैं। इन सबके ऊपर सखियों के हँसते हुए मुखारविंद का नूर अलग ही दिखायी पड़ रहा है।

गिरदवाए नूर हिण्डोले , झलकत नूर जंजीर ।

क्यों कहूँ झूलें नूर के , रूहें हँसत मुख नूर नीर ।। परि. 37 / 94

नक्शा नं. 22 नौवीं भोम : दूरदर्शिका

नौवीं भोम में बाहरी हार मंदिरों की भीतर की दीवालें व दरवाजे तो हैं, किंतु संधि की एवं बाहर की दीवालें नहीं हैं। बाहरी दीवालों की जगह थंभों की हार है। इसके बाहरी तरफ, 1 मंदिर का चौड़ा छज्जा चारों तरफ घेरकर निकला है, जिसकी बाहरी किनार पर पुनः थंभों की एक हार है, जिनके मध्य कठेड़ा शोभायमान हैं। 201 गुर्जों की वजह से 201 हांस में 201 छज्जे दिखाई पड़ रहे हैं। प्रत्येक छज्जे में 1–1 सिंहासन व 12–12 हजार कुर्सियाँ रखी हैं। छज्जे की जमीन, अंदर की गली की अपेक्षा कमर भर ऊँची है, जिसके कारण भीतरी दीवालों के दरवाजों से गली में चाँदों के द्वारा 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। इन छज्जों में विराजमान होकर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ दूर–दूर के सुंदर दृश्यों को देखने का आनंद लेते हैं। जिस दिशा में विराजमान होते हैं, उस दिशा के सुंदर महल, वन , पहाड़ आदि श्रीराजजी महाराज अपने अंगुली के इशारे से दिखाते हैं।

नजरों सब आवत है , इन ऊपर की बैठक ।
देख दूर की बातें करें , रंग रस उपजावे हक ।। परि.31 / 134

जब पूर्व दिशा में बैठते हैं, तब अनेक रंगों की चित्रकारी से युक्त, सुंदर दुलीचे के समान सुशोभित होती सातों वनों की चाँदनी, दूध से भी उज्जवल लहराती हुई श्रीयमुना जी, रंगबिरंगी तेजोमयी प्रकाश से युक्त अक्षरधाम व अनंत रंगो से प्रकाशित आकाश को छूती हुई सर्वरस सागर की महाहवेलियाँ दिखाते हैं। जब अगिन कोने में बैठते हैं, तो श्वेत प्रकाश से युक्त नूर सागर दिखाते हैं। जब दक्षिण दिशा में बैठते हैं तो एक हीरे की पाल, वृक्षों व गुम्मटों से घिरा हौजकौसर ताल, बेलों, फूलों, लताओं से बना कुंज–निकुंज वन, फव्वारों व झरनों से ढ़का 24 हांस का महल, लाल रंग की ज्योति से प्रकाशित माणिक पहाड़ तथा लाल रंग की ही नीर सागर की महाहवेलियाँ दिखाते हैं। जब नैऋत्य कोने में बैठते हैं, तो पीले रंग की आभा से युक्त खीर सागर की महाहवेलियाँ दिखाते हैं। जब पश्चिम दिशा में बैठते हैं, तब हरे रंग की तेजोमयी किरणों से युक्त दधि सागर की महाहवेलियाँ दिखाते हैं। वायव्य कोने में आसमानी रंग की घृत सागर की गगनचुंबी महाहवेलियाँ दिखाते हैं। जब उत्तर दिशा में बैठते हैं तो सीढ़ियों के समान सुशोभित होती बड़ोवन, मधुवन, महावन के वृक्षों की चाँदनी, पीले रंग की तेजोमयी प्रकाश से युक्त पुखराज पहाड़ तथा श्याम रंग की आभा से युक्त मधुसागर की महाहवेलियाँ दिखाते हैं। ईशान कोने में 10 रंगों से प्रकाशित रस सागर दिखाते हैं। चारों तरफ से, सीढ़ियों के समान सुशोभित होते जवेरों के महल, बड़ोवन, मधुवन, महावन, वन की नहरें, छोटी रांग व बड़ी रांग दिखलाते हैं। श्रीराजजी महाराज जब जिस स्थान के बारे में समझाते हैं, रूहों के मन में उसी स्थान पर जाने की चाहना होने लगती है। इस प्रकार बहुत आनंद आता है।

या हौज या जोए के , कई विध देवें सुख ।
जब हक आराम देवहीं , तब सोई करें रूहें रूख ।। परि. 31 / 141

नक्शा नं. 23 – दसवीं चाँदनी में बाग बगीचे

रंगमहल की दसवीं चाँदनी (छत) में मध्य में, नौ चौक व फूलवाड़ी की जगह में 200 हांस का कमरभर ऊँचा गोल चबूतरा सुशोभित है, जिसके चारों दिशाओं के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर सुंदर रत्नजड़ित कठेड़ा है। चबूतरे पर सुंदर पशमी गिलम बिछी है, जिस पर सुंदर सिंहासन व कुर्सियाँ रखी हैं। चबूतरे के चारों कोनों में चार बड़े चेहेबच्चे (कुण्ड) सुशोभित हैं, जो नीचे के स्तून (पाईप) के ऊपर स्थित हैं। इनमें 5–5 फव्वारे हैं, जो मोतियों के समान गिरते प्रतीत हो रहे हैं।

चारों तरफों चेहेबच्चे , ऐ शोभा अति सुंदर ।
जल गिरत फुहारे मोतियों , चारों चाँदनी अंदर ।। परि. 31 / 149

चबूतरे के चारों तरफ चाँदनी में प्रत्येक हवेली की जगह में बगीचे शोभायमान हैं। पंचमहलों की जगह में मेवों (फलों) के बगीचे हैं, गोल हवेलियों की जगह में रंगबिरंगे घास के मैदान हैं, चौरस हवेलियों की जगह

में रंगबिरंगे खुशबूदार फूलों के बगीचे हैं। त्रिपोलियों की जगह में नहरें हैं तथा हवेलियों के कोनों की जगह में चेहेबच्चे हैं। इस प्रकार प्रत्येक बगीचे के चारों दिशा में नहरें तथा चारों कोनों में चेहेबच्चे हैं। एक–एक चेहेबच्चे में 5–5 फव्वारे हैं जिनमें से एक फव्वारे का पानी उछलकर उसी चेहेबच्चे में गिरता है, तथा शेष 4 फव्वारों का पानी उछलकर चारों दिशा के चेहेबच्चे में गिरता है। इसी प्रकार चारों दिशा के चेहेबच्चों का पानी भी उछलकर मध्य के एक चेहेबच्चे में गिरता है। ये नहरें व चेहेबच्चे कमर भर गहरे हैं। इस प्रकार चबूतरे के चारों तरफ फलों, फूलों, घास के बगीचों एवं नहरों, चेहेबच्चों, फव्वारों की अद्भूत शोभा है।

गिरदवाए फूल चेहेबच्चे , ए सोभा जुदी जुगत ।
अंतर आँखे खोल के , ऐ सुख देखो अतंत ।। परि. 31/150

पहली चौरस हवेली के सीढ़ियों के मंदिर के ठीक ऊपर चाँदनी में छत नहीं है, यहाँ सीढ़ी निकली है। जिससे हम नीचे के भोमों से चाँदनी में आ–जा सकते हैं। महामतिजी की बड़ी वृत्त के अनुसार हम नीचे के भोमों से कहीं से भी सीढ़ियों द्वारा चाँदनी में आ सकते हैं। जब जरूरत होती है, तो छत हटकर सीढ़ी बन जाती है, फिर छत वापस आ जाती है।

हर मंदिरों आवन के , दादरे बने सब नूर ।
द्वार जब आवें तब खुले , फेर मिल जावे चाँदनी जहूर।। बड़ी वृत्त 27/86

परमधाम में यह विशेषता है कि यदि हम दसवीं चाँदनी में खड़े हों, तो भी प्रथम भोम तक की प्रत्येक वस्तु स्पष्ट रूप से दिखती है। और यदि प्रथम भोम में खड़े हों, तो भी चाँदनी तक की एक–एक वस्तु स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती है। उसी प्रकार रंगमहल के चारों तरफ, दूर–दूर की भी प्रत्येक वस्तु स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

जो तले भोम खड़े रहिये , तो भासत लग आसमान ।
जो खड़े रहिये भोम दसमीं , तले लों देखत प्रकाश।। अबड़ी वृत्त 27/86

नक्शा नं. 24 , 25 दसवीं चाँदनी पर देहेलान व गुम्मट

चाँदनी की किनार पर बाहरी हार मंदिरों की ऊपर की जगह में 6000 देहेलानें हैं। एक देहेलान में चारों दिशा में 4–4 थंभों के बीच 3–3 मेहराबें हैं, जिनमें से मध्य की मेहराबें अक्सी (दीवाल) हैं, तथा दायें–बायें की मेहराबें खुली हैं। प्रत्येक दो देहेलानों की संधि की अक्शी मेहेराब (दीवाल) के अंदर से देहेलानों की चाँदनी पर जाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ी हैं। इन देहेलानों की चाँदनी में 12,000 स्वर्ण गुम्मट शोभायमान हैं। प्रत्येक देहेलान की चाँदनी में 2–2 गुम्मट हैं। पूर्व दिशा में 10 मंदिर की हांस में 10 मंदिर की लंबी व 4 मंदिर की चौड़ी देहेलान है, जिसमें 10 थंभों की 4 हारें हैं। इसकी चाँदनी में चारों कोनों में चार गुम्मट शोभायमान हैं। 201 चौरस गुर्जों की चाँदनी इन देहेलानों के बराबर आयी है। इनके ऊपर 4 थंभों पर बड़े गुम्मट हैं। कुल 201 बड़े गुम्मट हैं, जो 201 रंगों के हैं। इन सभी छोटे–बड़े गुम्मटों के ऊपर कलश, ध्वजा, पताका, घूंघरी की अद्भूत शोभा है।

ऐ जो गुमटियाँ गिरदवाए की, नगीने एक अगले सौ दोए।
बारे हजार गुमटियाँ , शोभा लेत अति सोए ।। परि. 31/148

देहेलानों की चाँदनी में बाहरी व भीतरी किनार पर लाल रंग की कांगरी व कंगूरों की अद्भुत शोभा है, जो बिजली के बल्बों के समान जगमगा रहे हैं। रंगमहल की चाँदनी की किनार से चारों तरफ घेरकर एक मंदिर का चौड़ा छज्जा निकला है, जिसके बाहरी किनार पर सुंदर रत्नजड़ित कठेड़ा शोभायमान है।

दसमीं भोमें चाँदनी , ऊपर कांगरी जोत।
तेज पुँज इन नूर को , जानों आकास सब उद्योत ।। परि. 38/81

पूर्णिमा के दिन श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ दोपहर 3 बजे जब यहाँ पधारते हैं, तब फूलों व घास के बगीचों में, नहरों व चेहेबच्चों के मध्य अनेक प्रकार से खेल रामतें करते हैं, दौड़ते हैं। अनेक प्रकार के फलों

को तोड़कर खाते हैं, परंतु यहाँ के बगीचों की यह विशेषता है कि यहाँ फल, फूल, पत्ते जो भी चाहिए, तोड़ सकते हैं, किंतु पुनः देखने पर वह फल, फूल, पत्ते वैसे के वैसे ही लगे हुए मिलते हैं।

मेवे चाहिए सो लीजिए , फल फूल मूल पात ।
तित रह्या तैसा ही बन्या , ऐ बका बागों की बात ।। खुलासा 5/46

इस प्रकार छः घड़ी (सवा 5 बजे) तक खेलने के बाद मध्य के चार बड़े चेहेबच्चों में झीलना करके श्रृंगार करते हैं। फिर चबूतरे पर सिंहासन में युगल स्वरूप विराजमान होते हैं। तब सखियाँ कभी श्रीराजश्यामाजी को घेरकर चबूतरे पर ही कुर्सियों में बैठती हैं और अपने माशूक संग प्रेममयी बातें व हांस विनोद करती हैं। कभी चारों तरफ देहेलान व छज्जों में आकर, चारों तरफ घूमते फिरते हुए चाँदनी रात में चारों तरफ के सुंदर दृश्यों को निहारती हैं। कहीं पुखराज पहाड़ से पीले रंग की नूरमयी किरणें निकलते दिख रही हैं। कहीं हौजकौसर की सफेद रंग की किरणें निकलते दिख रहीं हैं। कहीं माणिक पहाड़ से लाल किरणें निकलते दिख रही हैं।

देखो तरफ पुखराज के , या देखो तरफ ताल ।
या जोत मानिक देखिए , होय रही अंबर जिमी सब लाल ।।परि. 31/161

पूर्णिमा की चाँदनी रात में ऐसा लग रहा है, जैसे चंद्रमा, तारे व आकाश श्रीराजजी महाराज के दर्शनों के लिए रंगमहल की चाँदनी के एकदम पास आ गये हों।

अर्स आये लग्या आकासें , उठ्या जोत अपनी ले ।
चाँद सितारे अंबर , आये मुकाबिल अर्स के ।। परि. 31/158

इस प्रकार पूनम की मध्य रात (12 बजे) तक अनेक प्रकार से हाँस–विलास करने के बाद पाँचवी भोम में शयन के लिए पधारते हैं।

सुख चाँदनी चढ़ाय के , पूनम की मध्य रात ।
ऐ कौन देवे माशूक बिना , इश्क भीगे अंग गात ।। परि. 19/17

नक्शा नं. 28 16 हांस का चेहेबच्चा

रंगमहल के चारों कोनों में चार 16 हांस के चेहेबच्चे (कुण्ड) शोभायमान हैं। इनका एक हांस 30 मंदिर के बराबर लंबा है। चेहेबच्चे के चारों तरफ सर्वप्रथम 1 मंदिर की चौड़ी 16 हांस की दीवाल (पाल) है, जिसकी एक हांस धाम चबूतरे से लगी हुई है। इसके भीतर दो भोम गहरा जल है। दीवाल के ऊपर जलरौंस बन गयी है, जिससे भीतरी तरफ, कमरभर गहरे जल चबूतरे पर, चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा शोभायमान है। दीवाल (रौंस) से बाहरी तरफ भी तीनों दिशा में चाँदों के द्वारा भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं एवं धाम चबूतरे से संधि की जगह में भी दोनों तरफ सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। पास के वनों की डालियाँ, इस चेहेबच्चे के जल चबूतरे तक छाया कर रही हैं। चेहेबच्चे में पाँच बड़े फव्वारे 10 वीं चाँदनी तक उछलते हुए शोभित हो रहे हैं।

ऐ बड़ा चेहेबच्चा बाहेर , एक हांस को लगत ।
बड़ी कारंज पानी पूरन , कई नेहरें चलत ।। परि. 30/49

नक्शा नं.27 रंगमहल के चारों तरफ की शोभा

रंगमहल की पूर्व दिशा में सात वन सुशोभित हैं। उत्तर से दक्षिण की तरफ क्रमशः केल, लिबोई, अनार, अमृत, जांबू , नारंगी व बट के वन विद्यमान हैं। इनमें से तीन वन अनार, अमृत व जांबू , रंगमहल के ठीक सामने हैं। बट के वन की जगह में कुंज–निकुंज वन हैं, जिनके बीच–बीच में से बड़ोवन के वृक्षों की 5 हारें बट रूप होकर पश्चिम तरफ निकली हैं। सातों वनों के पूर्व में श्रीयमुनाजी शोभायमान हैं। श्रीयमुनाजी के ऊपर सातों वनों के दोनों तरफ दो पुल हैं। उत्तर दिशा में केलघाट के सामने केलपुल है तथा दक्षिण दिशा में बटघाट के सामने बटपुल है। अमृतवन के सामने पाटघाट है। श्रीयमुनाजी के पूर्व में (उस पार) भी इसी प्रकार सात वन व पाट घाट हैं। इन सातों वनों के पूर्व में रंगमहल के सदृश अनेक रंगों की झलकार से

युक्त, चमकता हुआ 9 भोम 10 वीं आकाशी वाला अक्षरधाम सुशोभित है। अक्षरधाम के चारों दिशा में मुख्य द्वार, चाँदनी चौक व लाल–हरे वृक्ष विद्यमान हैं।

रंगमहल की दक्षिण दिशा में बट पीपल की चौकी, कुंज–निकुंज वन तथा हौजकौसर ताल शोभायमान है। रंगमहल की पश्चिम दिशा में फूलबाग, नूरबाग, अन्नवन, दूब–दुलीचा व पश्चिम की चौगान है। रंगमहल की उत्तर दिशा में लाल चबूतरा, बड़ोवन, ताड़वन, मधुवन, महावन एवं पुखराज पहाड़ सुशोभित है। इस प्रकार रंगमहल के चारों तरफ कई प्रकार के, कई रंगों के, फल, फूल, बेलियों से युक्त वन शोभायमान हैं, जिनकी डालियाँ रंगमहल के बाहरी हार मंदिरों के झरोखों से लगी हुयी हैं।

फिरते बन धाम विराजे , ऊपर आये रह्या लग छाजे ।
चारों तरफों फूले फूल बन , कई रंग सोभा अति घन ।। परि. 3/46

इन वृक्षों के सुंदर प्रतिबिंब रंगमहल के रत्नजड़ित दीवालों में झलक रहे हैं। वृक्षों की डालियाँ सुंदर मेहराबों के रूप में आपस में मिलती हुयी, रंगबिरंगी चित्रकारी से युक्त सुंदर चंद्रवा के समान छत बना कर, एक छाया प्रदान करती हुयी रंगमहल के चारों तरफ शोभायमान हैं।

गिरद अर्श के देखिया , जहाँ लों नजर पोहोंचत ।
एकल छत्री नूर की , छेदर ना गेहरा कित ।। परि. 32/23

इन वनों के मध्य में कई तरह के चौक, चबूतरे व बैठकें हैं। इन वनों में अनेक जाति के, अनेक रंगों के सुंदर पशु–पक्षी टोले–टोले घूमते–फिरते, खेलते, मधुर वाणी बोलते दिखायी पड़ रहे हैं।

अनेक पसु इन बन में , अनेक हैं जानवर ।
खेलत बोलत गूंजत , करत चकोसर ।। परि. 17/13

नक्शा नं. 26 सात वन : अमृत वन की शोभा

रंगमहल के पूर्व दिशा में 2,000 मंदिर के लंबे व 500 मंदिर के चौड़े सात वन (केल, लिबोई, अनार, अमृत, जांबू, नारंगी व बट) हैं। सभी वनों में 500 मंदिर के लंबे–चौड़े 4–4 बगीचे हैं। प्रत्येक बगीचे के चारों दिशा में नहरें व चारों कोनों में चेहेबच्चे हैं। धाम दरवाजे के सामने अमृत वन (आम के वन) है। जिसके पश्चिम दिशा में से 166 मंदिर की लंबी–चौड़ी जगह चाँदनी चौक ने ले ली है। अमृत वन के मध्य से दो मंदिर की चौड़ी रौंस निकली है, जो पुखराजी रौंस से चलकर 100 सीढ़ियों तक गयी है। इसके कारण अमृत वन दो भागों में बँट गया है, तथा बगीचे भी 8 हो गये हैं। प्रत्येक बगीचों के चारों दिशा में नहरें व चारों कोनों में चेहेबच्चे हैं। इन नहरों में दूध से भी उज्जवल, मिश्री से भी मीठा जल प्रवाहित हो रहा है। चेहेबच्चों में सुंदर फव्वारे उछलते दिख रहे हैं।

दूध सहद की नदियाँ चलें , बागों बीच दरखतों तले ।। बड़ा कया. 3/8

इन बगीचों में हीरे से भी कोट गुनी चमकदार रेती बिछी है। 2–2 मंदिर की दूरी पर दोरीबंध (कतारबद्ध) रूप से वृक्ष सुशोभित हैं। इन वृक्षों के बीच में अखरोट, अंजीर, अंगूर आदि अनेक प्रकार के, अनेक स्वाद के वृक्ष भी विद्यमान हैं।

कई मेवे इन वन में , केती कहूँ जिनस ।
जुदे जुदे स्वाद कई विध के , जानो एक से और सरस ।। परि. 5/27

इन वनों में नीले, पीले, श्वेत, लाल आदि अनेक रंगों के वृक्ष अलग–अलग कतारों में सुशोभित हैं। उसमें भी इन वृक्षों के एक–एक फल, फूल, पत्ते, डालियाँ भी अनेक रंगों की चित्रकारी से युक्त हैं। इनकी जगमगाहट से ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे ये सोने व जवेरों के ही वृक्ष हैं। इनकी खुशबू से सारा वातावरण सुगंधित हो रहा है।

खुसबोए जिमी अति उज्जल , ज्यों सोने जवेर दरखत ।
बेसक जंगल जवेर ज्यों , रोशन नूर झलकत ।। खिलवत 7/33

इन ऊँचे–ऊँचे वृक्षों की लंबी–लंबी डालियाँ, पत्ते, फल, फूल आपस में मिलकर सुंदर मेहराब व छत का निर्माण कर दिये हैं, जो कहीं ज्यादा घना भी नहीं है, और न कहीं छिद्र ही दिखाई पड़ता है। वृक्षों की यह

छत नीचे से देखने पर कई रत्नों से जड़ी हुयी, कई रंगों की चित्रकारी से युक्त सुंदर चंद्रवा के समान दिख रही है और ऊपर से देखने पर सुंदर, रत्नजड़ित दुलीचे के समान सुशोभित हो रही है।

ऊपर देख तरफ वन के , फल फूल बेली रंग रस ।
कहूँ जड़ाव ज्यों चंद्रवा , कई कटाव कई नकस ।। परि. 32/60

इन वृक्षों की दो भोम तीसरी चाँदनी है। प्रथम भोम की छत से थड़ (तना) पुनः ऊपर निकला है। ऊपर जाकर इनकी डालियाँ, फल, फूल, पत्ते पुनः आपस में मिलकर दूजी भोम की छत (तीजी चाँदनी) बना दिये हैं। इन वनों की प्रथम भोम की डालियाँ रंगमहल के प्रथम भोम के झरोखों से मिली हुयी हैं। जिससे सखियाँ रंगमहल के प्रथम भोम से वनों की दूजी भोम में आ जाती हैं। वनों की दूजी भोम की डालियाँ रंगमहल के दूजी भोम के (33 हाथ के चौड़े) छज्जे से मिली हैं, जिससे सखियाँ रंगमहल के दूजी भोम से वनों की तीसरी चाँदनी में आ जाती हैं तथा सातों घाट, दोऊ पुल तक दौड़ते हुए चली जाती हैं। तथा वनों की सुंदर शोभा का, शीतल छाया का, सुगंधित हवा का तथा सुंदर पशु–पक्षियों का आनंद लेती हैं।

उतर झरोखों से जाईये , दूजी भोम बन माहें ।
बन सोभे पशु पंखियों , कई हक जस गावें जुबाएँ ।। परि. 34/11

इन वनों में तले व ऊपर के भोमों में अनेकों जाति के, अनेकों रंगो के सुंदर पशु–पक्षी, झुण्ड के झुण्ड घूमते नजर आते हैं। इश्क की मस्ती में डूबे दिन–रात 'पिया–पिया' 'धनी–धनी' करते रहते हैं, धनी का गुणगान करते रहते हैं। इनकी मधुर वाणी से वन गूँजायमान होता रहता है। कस्तूरी मृग चारों तरफ सुगंधि फैलाते घूम रहे हैं। इनके पंख, बाल अनेक रंगों की चित्रकारी से युक्त हैं, जो जवेरों से भी कोट गुना ज्यादा जगमगा रहें हैं। इनके नैन, चोंच, सिर, कान, मुख आदि की सुंदरता बेमिसाल है।

पशु पंखी अति सुंदर , बोलत अमृत रसान ।
सुंदरता केस परन की , क्यों कर करों बयान ।। परि. 5/10
मीठे नैन बैन मुख मीठे , सोभा सुंदर अमान ।
जिन विध धनी रीझहीं , खेलें बोलें तिन तान ।। परि. 5/12

छोटे–बड़े सभी प्रकार के पशु–पक्षी, धनी को रिझाने के लिए, सखियों को हँसाने के लिए तरह–तरह से मधुर वाणी निकालते हैं। अनेक प्रकार की कलाओं से नाचते हैं, खेल–करतब दिखाते हैं। कभी एक–एक करके खेल दिखाते हैं, कभी सब मिलकर खेल दिखाते हैं। बंदर सीधी, टेढ़ी, उल्टी गुलाटी खाते हैं, बाजे बजाते हैं। यह सब देख–देख कर सखियाँ बहुत आनंदित होती हैं।

कई बंदर बाजे बजावहीं , आगूं अर्श के नाचत ।
ऐ सुख हमारे कहाँ गये , हम देख देख राचत ।। परि. 20/20

पशु जमीन में खेल दिखाते हैं तो पक्षी आकाश में उड़ते हुए खेल दिखाते हैं। अनेकों कलाओं से, कभी अकेले तो कभी सब मिलकर खेल करतब दिखाते हैं। सारा आसमान अनेकों जाति व अनेकों रंगों के पक्षियों से भर जाता है।

आसमान छाया पंखियों , सब खूबी देखावत ।
आप अपनी साधना , सब खेल की साधत ।। परि. 29/45

यहाँ के वृक्ष, पशु–पक्षी, नदियाँ आदि सभी नूरमयी, चेतन व इश्क के स्वरूप हैं इसलिए इन वृक्षों का कभी एक पत्ता भी नहीं गिरता है, न ही पशु–पक्षियों का पंख या बाल गिरता है। ये सभी अखण्ड, अनादि हैं।

एक बाल न गिरे पसुअन का , न खिरे पंखी का पर ।
पात पुराना न होवहीं , अर्स जंगल या जानवर ।। परि. 32/31

इन वनों में श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ अनेकों प्रकार से खेल रामतें व हाँस–विलास करते हैं। कभी बगीचों या चबूतरों में बैठकर प्रेममयी वार्तालाप करते हैं, कभी डारियों में लटक कर झूलते हैं। इस प्रकार श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ जब इन वनों में खेलते हैं तो उस समय इन वनों की शोभा अद्भुत दिखती है।

जब खेले इत सखियाँ , स्याम स्यामाजी संग ।
तब सोभा इन वन की , लेत अलेखे रंग ।। परि. 6/13

कभी सब मिलकर छुआछुई का खेल खेलते हैं। श्रीराजजी महाराज ताली मारकर कहते हैं कि सखियों मुझे छूकर बताओ, तब श्रीराजजी को पकड़ने के लिए सारी सखियाँ भागती हैं और बहुत हांसी होती है। इस प्रकार खेलते हुए, हांस–विलास करते हुए पूरा दिन गुजर जाता है।

कबूं राज आगूं दौड़त , ताली स्यामाजी को दे ।
पीछे साथ सब दौड़त , करत खेल हांसी का ऐ ।। परि. 17/20

बरसात के समय इन वनों का आनंद अलग ही होता है। चारों तरफ काली घटा छा जाती है, बिजलियाँ चमकने लगती हैं, बादल मधुर गर्जना करने लगते हैं। बारिश की बूँदें बरसना शुरू हो जाती हैं, शीतल सुगंधित हवा चलती है, चकोर, मैना, कोयल आदि टहुंकार करने लगते हैं, मोर नृत्य करना प्रारंभ कर देते हैं। ऐसा सुंदर दृश्य देखकर सखियाँ रंगमहल से निकलकर दौड़ते हुए चाँदनी चौक के चबूतरे में आ जाती हैं।

हक हादी रूहें चांदनी बैठत , ऊपर होत बखत मलार ।
मोर बांदर दादुर कोकिला , सुख देत कर टहुंकार ।। परि. 20/22

प्यारे सुंदरसाथ जी, परमधाम में शीत, ग्रीष्म, वर्षा आदि ऋतुओं का इंतजार नहीं करना पड़ता, इच्छानुसार सभी ऋतुएँ आती जाती रहती हैं।

ऋतु छवो रहत हैं , सदा रहें सुखदाय ।
सब अग्या से हाजर रहें , तुम देखो मोमिनों ताए ।। बड़ी वृत्त 84/7

नक्शा नं. 29 बट पीपल की चौकी

रंगमहल की दक्षिण दिशा में 1500 मंदिर की लंबी व 500 मंदिर की चौड़ी बट–पीपल की चौकी शोभायमान है। जिसमें 100–100 मंदिर के लंबे–चौड़े 15 चौकों (बगीचों) की 5 हारें हैं। कुल 75 बगीचें हैं। प्रत्येक बगीचों के चारों दिशा में नहरें तथा चारों कोनों में चेहेबच्चे हैं, जो भोम भर गहरे हैं। इस प्रकार 16 चेहेबच्चों की 6 हारें हैं, कुल 96 चेहेबच्चे हैं। चेहेबच्चों में 5–5 फव्वारे रंगमहल की चाँदनी के समान ही सुशोभित हैं। नहरों के दोनों तरफ कमर भर ऊँचीं पाल (रौंस) है, जिससे बगीचों में चारों दिशा व कोनों में सीढ़ियाँ उतरी हैं। इस पाल के दोनों किनारों पर सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा शोभायमान है। सभी नहरों के मध्य भाग में 1–1 पुल विद्यमान हैं, जिनके द्वारा नहरों को पार कर सकते हैं।

प्रत्येक चौक (बगीचे) के मध्य में 33 मंदिर का लंबा–चौड़ा कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके चारों दिशा में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा सुशोभित है। चबूतरे पर सुंदर पशमी गिलम बिछी है। ये चबूतरे इतने बड़े हैं कि एक ही चबूतरे पर श्रीराजश्यामाजी व 12,000 सखियाँ एक साथ बैठ जाते हैं तथा हांस–विनोद करते हैं।

एक एक चौकी देखिये , रूहें बैठत बारे हजार ।
बीच बीच सिंहासन हक का , ऐ सोभा अति अपार ।। परि. 30/35

चबूतरे के चारों तरफ जमीन में तेजोमयी किरणों से युक्त रेती बिछी है। चबूतरे के मध्य में एक वृक्ष विद्यमान है। सभी चौकों में क्रमशः बट तथा पीपल के वृक्ष आते गये हैं। ये वृक्ष अनेक रंगों व नंगों की चित्रकारी व नक्शकारी से युक्त हैं, जिनमें से बेशुमार तेजोमयी किरणें निकल रही हैं। इन वृक्षों की डालियाँ सुंदर मेहेराबों के रूप में आपस में मिली हुयी हैं। फल, फूल, पत्तों की ही सुंदर चंद्रवा के समान छत बन गयी है। यहाँ 4 खड़ी मेहराबों की 15 हारें हैं तथा 14 आड़ी मेहराबों की 5 हारें हैं, कुल 130 मेहराबें हैं, जिनमें कुल 130 सुंदर हिण्डोले लटक रहे हैं, जो नहरों के मध्य के पुल के ठीक ऊपर लटक रहे हैं। श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ इन हिण्डोलों में बैठकर नहरों के ऊपर झूलने का आनंद लेते हैं। चार हिण्डोलों की ताली चेहेबच्चों के ऊपर पड़ती है। झूलते समय हिण्डोलों के कड़े व जंजीरों की आवाज से, सखियों के आभूषणों व हँसी की आवाज से तथा श्रीराजश्यामाजी के सुंदर स्वरूप की झलकार से यह बन अत्यंत शोभायमान हो जाता है।

राजश्यामाजी सखियाँ , जब इत आये हींचत ।
इन समें बन हिण्डोलें , सोभा क्यों कर कहूँ सिफत ।। परि. 7/34

बट पीपल के वृक्षों की 4 भोम 5 वीं चाँदनी है। दूसरी भोम में थड़ (तना) पुनः ऊपर निकला है तथा ऊपर जाकर चारों तरफ डालियाँ निकली हैं। सभी वृक्षों की डालियाँ, फूल ,पत्ते आपस में मिलकर दूजी भोम की छत (तीजी भोम) बना दिये हैं। इसी प्रकार 4 भोम 5 वीं चाँदनी शोभायमान हैं। प्रत्येक भोम में वृक्षों की डालियों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोले विद्यमान हैं। चारों भोम के मिलाकर कुल 520 हिण्डोले हैं। श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ चारों भोमों के हिण्डोलों में झूलने का आनंद लेते हैं।

बट पीपल की चौकियाँ , चारों भोम हिण्डोले।
ए सुख कब हम लेवेंगे , हक हादी रूहें भेले।। परि. 20/24

पाँचवी चाँदनी में चारों कोनों के वृक्षों की थड़ के ऊपर चार चेहेबच्चे विद्यमान हैं, जो पाँच भोम गहरे हैं। चाँदनी, रंगबिरंगी चित्रकारी से युक्त सुंदर दुलीचे के समान दिख रही है। चाँदनी के पूर्व, दक्षिण व पश्चिम दिशा में सुंदर कठेड़ा शोभायमान है। इन वृक्षों की प्रथम भोम की डालियाँ (दूजी भोम), रंगमहल के प्रथम भोम के झरोखों से मिली हुयीं हैं, जिससे रंगमहल के प्रथम भोम के झरोखों से बट–पीपल की चौकी के दूजी भोम में आ जा सकते हैं, (क्योंकि रंगमहल भोम भर ऊँचे चबूतरे पर है) इसी प्रकार बट–पीपल की चौकी के दूजी, तीजी व चौथी भोमों की डालियाँ, क्रमशः रंगमहल के दूजी, तीजी व चौथी भोमों के छज्जों से मिली हुयी हैं। जिनके द्वारा रंगमहल के दूसरी, तीसरी व चौथी भोमों से बट–पीपल की चौकी के क्रमशः तीसरी भोम, चौथी भोम एवं पाँचवी चाँदनी में आ–जा सकते हैं।

दूजी भोम जो चौकियों , दौड़ जाइये तितथें ।
बीच मेहराबों के कूद के , उतर आईये अर्श में।। परि. 34/24

बट–पीपल की चौकी के चारों भोमों में अनेक प्रकार के सुंदर पशु–पक्षी रहते हैं, जो मधुर वाणी निकालकर, गाकर, खेलकर अनेक भांत से श्रीराजश्यामाजी व सखियों को रिझाते व हँसाते हैं।

पशु पंखी चारों भोम के , सुख देत दिल चाहे ।
सो सुख कब लेसी मोमिन , क्यों इन बिन रह्यो जाए ।। परि. 20/27

नक्शा नं. 30 फूलबाग

रंगमहल की पश्चिम दिशा में, 50 हांस के सामने, धाम चबूतरे से लगता हुआ, नूरबाग के ऊपर फूलबाग शोभायमान है, जो 1500 मंदिर का लंबा–चौड़ा है । इसके चारों कोनों में रंगमहल के समान ही, चार 16 हांस के चेहेबच्चे विद्यमान हैं, जिनमें से दो रंगमहल में भी गिनाते हैं। फूलबाग में 150 मंदिर के लंबे–चौड़े 10 बगीचों की 10 हारें हैं, कुल 100 बगीचे हैं। इन बगीचों की चारों दिशा में नहरें एवं चारों कोनों में चेहेबच्चे हैं। ये नहरें व चेहेबच्चे कमर भर गहरे हैं। प्रत्येक चेहेबच्चे में 5–5 फव्वारे हैं, जिनमें से 4 फव्वारों का पानी उछलकर चारों दिशा के चेहेबच्चों में गिरता है तथा एक फव्वारे का पानी उछलकर उसी चेहेबच्चे में गिरता है। इस प्रकार एक चेहेबच्चे से फव्वारे चार चेहेबच्चों में तथा चार चेहेबच्चों से फव्वारे एक चेहेबच्चे में गिरते हुए सुंदर दृश्य उपस्थित कर रहे हैं।

चार चार नेहरें जंजीर ज्यों , मिल मिल फिरें गिरदवाए ।
बीच बीच सोभित बगीचों , अचरज एह देखाए ।। परि. 34/40

फूलबाग के उत्तर, पश्चिम व दक्षिण दिशा में बड़ोवन के वृक्षों की 5 हारें शोभायमान हैं, जिनकी 5 भोम छठी चाँदनी है। इनकी पाँचों भोमों की डालियों में अनेक प्रकार के हिण्डोले हैं, जिनमें श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ झूलने का आनंद लेते हैं। कहीं सेज्या हिण्डोले हैं, तो कहीं सिंहासन हिण्डोले हैं। कहीं सखियाँ खड़े होकर झूलती हैं, कहीं बैठकर झूलती हैं, कहीं एक सखी खड़ी होकर व एक सखी बैठकर एक साथ झूलने का आनंद लेती हैं।

कहूँ कहूँ सेज्या हिण्डोले , कहूँ हिण्डोले सिंहासन ।
कहूँ कहूँ खड़ियाँ हींचत , यों खेल होत इन बन ।। परि. 10/24
एक सोए हिण्डोले लेवहीं , एक बैठके हींचत ।
एक उठे एक बैठत हैं, यों जुगल केलि करत ।। परि. 10/25

नक्शा नं.31,32 फूलबाग के एक बगीचे की शोभा

एक बगीचे के चारों दिशा में जो नहरें हैं, वे पौने 3 मंदिर के चौड़े हैं। उसमें से पौन मंदिर (75 हाथ) की चौड़ी मध्य में नहर (जल) है तथा दायें–बायें 1–1 मंदिर की चौड़ी पाल है। पाल के 3–3 भाग हैं। मध्य के एक भाग में फुलवाड़ी है, जिसके दायें–बायें (1–1 भाग में) रौंस विद्यमान हैं। एक बगीचे में आड़ी–खड़ी 3–3 छोटी नहरों के आने से 16 छोटे बगीचे व 9 छोटे चेहेबच्चे हो गये हैं। इस प्रकार 100 बड़े बगीचों में कुल 1600 छोटे बगीचे हैं। इन बगीचों में 3–3 मंदिर की दूरी पर अनेकों प्रकार के, रंगबिरंगे, खुशबूदार फूलों के 13 वृक्षों की 13 हारें कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं, जो जवेरों के समान जगमगा रहे हैं। हजारों प्रकार के खुशबू वाले फूल खिले हुए हैं। एक ही फूल हजार पांखड़ी से युक्त है, जिनमें अनेक रंगों की चित्रकारी व कांगरी बनी हुयी है।

हिसाब नहीं फूलन को , हिसाब नहीं चित्रामन ।
हिसाब नहीं खुसबोए को , हिसाब न रंग रोसन ।। परि. 10/19

रंगमहल के चबूतरे से लगती हुई फूलबाग की पहली आड़ी नहर में (1500 मंदिरों के सामने) 3,000 चेहेबच्चे हैं। प्रत्येक मंदिर के सामने 2–2 चेहेबच्चे हैं। जब रंगमहल के पश्चिम दिशा के इन बाहरी हार मंदिरों के झरोखों में व दूजी भोम के छज्जों में श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ आते हैं, तो सभी के सामने मोती सदृश उछलते फव्वारे भी दिखते हैं एवं रंगबिरंगे फूल भी दिखते हैं, जिन्हें देख–देखकर सखियाँ बहुत आनंदित होती हैं।

आगूं सबन के फुहारे , और आगूं सबन के फूल ।
देख देख ऐ चेहेबच्चे , सबे होत सनकूल ।। परि. 10/7

जब फूलबाग में श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ आते हैं। तो फूलों के बगीचों के मध्य घूमते हुए, शीतल भीनी–भीनी खुशबू का आनंद लेते हैं। कभी फूलों के पौधों व चारों तरफ उछलते फव्वारों के मध्य बैठकर प्रेममयी बातें व हाँस–विनोद करते हैं।

इत शीतल मंद सुगंध की , वाब बेहेकत सुखदाय ।
रंग लेहेरां फूलन की , देत झकोरे ताय ।। बड़ी वृत्त 38/35

नक्शा नं. 33 नूरबाग

रंगमहल की पश्चिम में फूलबाग के नीचे नूरबाग है, जिसकी सारी शोभा फूलबाग के समान ही है। उसी प्रकार 10 बड़े बगीचों की 10 हारें हैं। उसी प्रकार एक बड़े बगीचे के अंदर 16 छोटे बगीचे हैं। उसी प्रकार नहरें, चेहेबच्चें व फव्वारें शोभायमान हैं। किंतु नूरबाग में धाम चबूतरे से लगती हुई पहली आड़ी नहर में 3,000 चेहेबच्चे नहीं हैं। नूरबाग में फूलबाग की जमीन की छाया तले उसी प्रकार अनेकों प्रकार के, रंगबिरंगे, खुशबूदार फूलों के वृक्ष हैं। जो सूर्य से भी कोट गुना अधिक जगमगा रहे हैं। **रंग जोत खुबी खुसबोए की , क्यों कर कहूँ ए बन ।**

फल फूल पात तले जिमी , जानों सूर हुए रोशन ।। परि. 34/61

नूरबाग में आने के लिए 10 सीढ़ियाँ रंगमहल के बाहरी हार मंदिरों में से उतरी हैं। नैऋत्य कोने के 16 हांस के चेहेबच्चे से उत्तर दिशा में 74 वें तथा 75 वें मंदिरों की संधि की दीवाल सीढ़ियों के वास्ते चौड़ी है। इस दीवाल के दरवाजे से, धाम चबूतरे के अंदर होते हुए पहली सीढ़ी उतरी है। इसी प्रकार 147–147 मंदिर की दूरी से कुल 10 सीढ़ियाँ उतरी हैं। इन दस सीढ़ियों के सामने धाम चबूतरे की दीवाल में, नूरबाग के पूर्व में 10 छोटे दरवाजे (खिड़कियाँ) विद्यमान हैं।

जित तले दस खिड़कियाँ , इतथें रूहें उतरत ।
फिरत सैर इन बन को , जब कबूं आवें हक इत ।। परि. 10/17

नक्शा नं. 34 नूरबाग के एक बगीचे की शोभा

नूरबाग में 66,000 नूर (लोहे) के थंभ हैं, इस कारण इसे नूरबाग कहा जाता है। नहीं तो बाकी सारी शोभा इसमें फूलबाग के समान ही है। इन थंभों पर ही फूलबाग की जमीन स्थित है। प्रत्येक (बड़े) बगीचे के चारों दिशा में 1–1 मंदिर की दूरी पर 150–150 (कुल 600) थंभ हैं। 100 बगीचों के कुल 60,000 थंभ हुए । शेष 6,000 थंभ पूरे 100 बगीचों को घेरकर आये हैं। श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ इन 10 खिड़कियों से नूरबाग में जब आते हैं, तब रंगबिरंगे सुंदर फूलों के बगीचों के मध्य विचरण करते हुए या मध्य के चौक, चबूतरों में बैठकर, शीतल सुगंधित वायु का आनंद लेते हुए हांस–विलास करते हैं। घूमते समय सुंदर स्वरूप श्रीराजश्यामाजी एवं सखियों के वस्त्राभूषण जगमगाते हुए शोभित होते हैं।

इत युगल सरूप देखिये , रमते फिरे फूल बन ।
वस्तर भूषन अंग के , सो जंग करत नूर रोसन ।। बड़ी वृत्त 38/36

नक्शा नं. 35 अन्नवन

नूरबाग के पश्चिम में 1500 मंदिर का लंबा–चौड़ा अन्नवन है, जिसमें फूलबाग–नूरबाग के समान ही 10 बड़े बगीचों की 10 हारें हैं। जिनके चारों दिशा में नहरें तथा चारों कोनों में चेहेबच्चे उसी प्रकार हैं। उसी प्रकार एक बड़े बगीचे में 16 छोटे बगीचे तथा 9 छोटे चेहेबच्चे हैं। अंतर केवल इतना है कि यहाँ के बगीचों में फूलों के वृक्षों की जगह में अनेक प्रकार के अन्न, मेवे, फल, शाक, तरकारी आदि के खेत लहरा रहे हैं। प्रत्येक बड़े बगीचे के मध्य जो 9 छोटे चेहेबच्चे हैं, उनमें से मध्य के चेहेबच्चे के ऊपर यहाँ चार थंभ पर एक देहुरी सुशोभित हो रही है।

तरफ पीछल धाम के , अन्नवन मेवे अनंत ।
फल फूल पात कंदमूल ,ए कहां लो को गिनत ।। परि. 10/3

नक्शा नं. 36 दूब दुलीचा

अन्नवन के पश्चिम में 1500 मंदिर का लंबा–चौड़ा दूब–दुलीचा है। जिसमें अन्नवन के समान ही 150 मंदिर के लंबे–चौड़े 10 बगीचों की 10 हारें हैं। कुल 100 बगीचें हैं। प्रत्येक बगीचे के अंदर 16 छोटे बगीचे व 9 छोटे चेहेबच्चे हैं। बगीचों, नहरों व चेहेबच्चों की शोभा फूलबाग के समान ही है किंतु इन बगीचों में अनेक रंगों के दूब (घास) हैं, जो अनेक प्रकार की चित्रकारी से युक्त दुलीचे के समान सुशोभित हो रहे हैं। इसलिए इसका नाम दूब–दुलीचा है।

बन बिगर की जो जिमी , जानो जरी दुलीचे बिछाये ।
ए दुब जोत आसमान लों , रह्या नूरै नूर भराये ।। परि. 25/71

यहाँ प्रत्येक बड़े बगीचे के मध्य जो नौ छोटे चेहेबच्चे हैं, उनमें से चारों कोनों के चार चेहेबच्चों पर चार देहुरियाँ शोभायमान हैं। जगह–जगह बैठने के वास्ते अनेक प्रकार की कुर्सियाँ विद्यमान हैं।

नक्शा नं. 37 पश्चिम–चौगान एवं कुंज–निकुंज वन

पश्चिम चौगानः– दूब दुलीचा के पश्चिम दिशा में एक बहुत बड़ा रेती का मैदान है, जो 9 लाख कोस लंबा एवं साढ़े चार लाख कोस चौड़ा है। यहाँ अत्यंत उज्जवल एवं नूरमयी रेती बिछी है, जो जगमगाते हुए हीरे, मोती जवाहरातों के समान प्रतीत हो रही है। इनकी तेजोमयी किरणें निकलकर आसमान तक जाती दिख रहीं हैं। यहाँ जब श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ आते हैं, तो मनचाहे जानवरों पर सवारी करने का आनंद लेते हैं।

जब चले सैर जिमीय को , जो बन बिगर थोड़ी रेत ।
साफ जिमी अति दूर लों , तरफ पछिम की सुपेत ।। परि . 29/65

जब श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ यहाँ सवारी का आनंद लेने के लिए पधारते हैं, तो सारे पशु–पक्षी, जानवर भी अपने–अपने ठिकानों से यहाँ आ जाते हैं। तब सखियों के मन में जिस जानवर पर सवारी करने

की इच्छा होती है, वे कहे बिना ही समझ जाते हैं और तुरंत ही उस सखी के सामने आकर खड़े हो जाते हैं।

अस्वारी को रूहन को , जिन पर हुआ दिल ।
तिन आगूं ही जानिया , सो आए खड़े सब मिल ।। परि. 29/2

यहाँ अनेकों जाति के, अनेकों रंगों के सुंदर पशु–पक्षी, केसरी, बाघ, चीते, हाथी, घोड़े आदि हाजिर होते हैं। जो हर तरह के वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होते हैं। इनके पीठ पर सुंदर जीन हैं, जो इनके अंग की ही शोभा हैं। इनके पंख तथा बाल, रत्नों से भी ज्यादा तेजोमयी हैं एवं सुंदर चित्रकारी से युक्त हैं।

पर जो पसुअन के , सो अतंत सोभा लेत ।
कहाँ करें ए भूखन , पसु ऐसी सोभा लेत ।। परि. 29/18

यहाँ पहाड़ के समान विशालकाय, अनेकों रंगों के सुंदर हाथी आते हैं। जो अनेक प्रकार के आभूषणों, पाखर एवं रत्न जड़ित सिरिए (सिर का आभूषण) से सुसज्जित हैं। जो सखियों को बैठाकर तेजी से दौड़ते हैं।

हाथी ऊँचे पहाड़ से , मुख सुंदर दंत सुढ़ाल ।
मनवेगी कबूं ना काहिली , तेज तीखी चलें चाल ।। परि. 27/58

केसरी व बाघ इतने फुर्तीले हैं कि जब दूर से कूदते हुए आते हैं तो देखने पर ऐसा लगता है कि आसमान से उतर रहे हों। इनकी गर्जना से पूरा परमधाम गुँजायमान हो जाता है, ऐसा लगता है कि धरती, पहाड़ हिलने लगे हों।

बाघ गूँजे अति बलि , कूवत ले कूदत ।
देखे आवत दूर से , जानों आसमान से उतरत ।। परि. 27/59

अनेक रंगों के ऊँचे–ऊँचे घोड़े, गर्दन हिलाते हुए, हेंहेंकार की आवाज निकालते हुए शोभित हो रहे हैं, जो सखियों को बैठाकर दौड़ पड़ते हैं। यहाँ के घोड़ों के भी पंख होते हैं, जो सखियों को बैठाकर आकाश में उड़ चलते हैं।

घोड़े पर राखत हैं , आकाश में उड़त ।
कमी करे ना कूदते , सुख अस्वारी के अतंत ।। परि. 29/5

यहाँ के हंस, गरूड़, केसरी, बाघ, चीते आदि ऐसे शक्तिशाली होते हैं, जो सखियों को बैठाकर आकाश में ले जाते हैं। इस प्रकार श्रीराजश्यामाजी व सभी सखियाँ मिलकर जब एक साथ अनेक प्रकार के जानवरों पर सवारी करते हैं, तो उस समय की शोभा अद्भुत दिखती है। सारे पशु, सखियों को बैठाकर तीव्र गति से एक साथ दौड़ पड़ते हैं। सखियाँ कभी हौड़ करके रेस लगाती हैं। कभी पशुओं पर सवार होकर अनेक प्रकार से खेल–रामतें, हाँस–विनोद करती हैं।

सोभा लेत बन में रूहें , अस्वार होत मिलकर ।
पशु पंखी दौड़ें मन ज्यों , जित जिमी बन बिगर ।। परि. 29/7

कभी पशु–पक्षी, श्रीराजश्यामाजी एवं सखियों को सवार करके, व्यवस्थित रूप से कतारबद्ध होकर, सेना की भांति परेड करते हुए चलते हैं। अलग–अलग रंग व जाति के पशु–पक्षी अलग–अलग कतारों में चलते हैं। एक–एक जाति के पशुओं में भी, अनेकों फौज (समूह) होते हैं। सभी अलग–अलग निशानी लिए हुए, बैण्ड बाजा बजाते हुए अनुशासित रूप से चलते हैं। इन सभी को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए चोबदार के रूप में बड़े बंदर, फौज के आगे–पीछे चलते हैं। तोता–मैना भी बोल–बोलकर फौज को कतारबद्ध रखते हैं। कतार में सबसे आगे केसरी होते हैं, इनके पीछे दूसरी हार में बाघ होते हैं, तीसरी हार सियारों की तथा चौथी हार चीतों की होती है। बंदर बाजे बजाते हुए साथ में चलते हैं। श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ हाथी, घोड़ों आदि पर सवार होकर महाराजा–महारानी की भांति सवारी में चलते हैं। इस समय की शोभा शब्दातीत, अनुपम होती है।

जब अस्वारी साहेब करें , होवें बड़ी रूह रूहें अस्वार ।
पशु पंखी सबे मिले , हर जाते फौजें न पार ।। परि. 29/8

कुंज–निकुंजः–कुंज–निकुंज वन बटघाट से चलकर, बट–पीपल की चौकी के दक्षिण से होते हुए, हौजकौसर ताल की परिक्रमा लगाकर अक्षरधाम के पूर्व तक गये हैं। इन वनों में रंगबिरंगे खुशबूदार फूलों

की बेल लताएँ इस प्रकार चढ़ी हैं कि फूलों, पत्तों के ही मंदिर बन गये हैं, जिन्हें देखने पर ऐसा लगता है कि सोने के अंदर अनेक रंगों के नंग जड़े हों।

बेलां बन चढ़ियाँ इन सूल , हुई दीवालें पात फूल ।
गिरद चारों तरफों फूले फूल रंग, जुदी हारें सोभा जिन संग।।परि . 3/27

<u>कुंज वन</u>ः—कुंजवन चौरस है, जिसकी ऊँचाई दो भोम तीसरी चाँदनी है। सर्वप्रथम कमर भर ऊँचे चौरस चबूतरे पर, किनार पर रौंस की जगह छोड़कर मंदिरों की एक हार शोभायमान है, जिसमें चारों दिशा के मध्य में 1—1 बड़ा दरवाजा हैं, जिसके दायें—बायें 41—41 मंदिर हैं। इसके दीवाल, दरवाजे, छत आदि सब, रंगबिरंगे फूल—पत्तों के ही हैं। इनके अंदर की सारी सामग्री सेज्या, सिंहासन, हिण्डोले, वस्त्राभूषण, श्रृंगार सामग्री आदि भी रंगबिरंगे खुशबूदार फूलों से सुशोभित हैं। ये फूल इतने कोमल हैं कि इनमें एक नस भी नहीं है।

फूल पात जो कोमल , रगां तिनमें कोई नाहें ।
तिनके सेज चबूतरे , बने जो मोहलों माहें ।। परि. 7/16

मंदिरों के भीतरी तरफ थंभों की एक हार विद्यमान है। इनके अंदर की तरफ बेशुमार बगीचों, नहरों, चेहेबच्चों की शोभा है। इन बगीचों के वृक्षों में फूल—पत्तों के ही सुंदर हिण्डोले लटक रहे हैं। इनके भीतरी तरफ मध्य में एक कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके मध्य में कुण्ड है। कुण्ड के चारों तरफ चबूतरे पर सुंदर सिंहासन एवं कुर्सियाँ रखी हैं। इसी प्रकार कुंजवन के दोनों भोमों की शोभा है।

इन मंदिरों सेज्या सिंहासन , छोटे चेहेबच्चे हिण्डोले ।
कई फुहारे नेहरें चलें , धनी हमें कब सुख देओगे ऐ ।। परि. 21/15

<u>निकुंज वन</u>ः—कुंज व निकुंज वन की शोभा एक समान है, अंतर सिर्फ इतना है कि कुंज वन चौरस हैं और निकुंज वन गोल हैं। इनकी भी दो भोम तीसरी चाँदनी है किंतु निकुंज वन में मध्य के कुण्ड के ऊपर छत नहीं है अर्थात् कुण्ड ऊपर से खुला है, जिससे ऊपर से शीतल हवा आती रहती है। दोनों वन क्रमशः एक के बाद एक आते गये हैं। प्रत्येक कुंज तथा निकुंज वन के चारों दिशा एवं चारों कोनों से 8 नहरें निकली हैं, जो चारों तरफ के अन्य कुंज—निकुंज वनों की नहरों से मिली हुयी हैं। इन नहरों की दोनों तरफ के पाल पर दो—दो भोम ऊँचें महल बने हुए हैं। कुंज—निकुंज वन के चारों तरफ जमीन में उज्जवल तेजोमयी रेती बिछी हुयी है, जो हीरे—मोती के समान जगमगा रही है, जिसमें से नूरमयी किरणें निकलते दिख रही हैं। ये रेती द्विकोनी, त्रिकोनी, चौकोनी तथा गोल आदि सभी आकार के हैं।

कित जानो हीरा कनी , हर ठौर हर भांत घनी ।
कित दोखूनी तीन चौखूनी , कित फिरती कहूँ गोल बनी ।। परि. 3/35

यहाँ की रेती इतनी बारीक है कि पैर, रखते ही घुटने तक धस जाते हैं। इसलिए यहाँ पर सखियाँ दौड़ते हुए अनेक प्रकार से खेलती हैं, कूदती हैं, गुलाटी खाती हैं, रब्द करके दौड़ लगाती हैं, पैरों से रेत उड़ाती हैं। कभी दो—दो सखियाँ एक दूजे का हाथ पकड़कर दौड़ लगाती हैं, कभी एक दूजे को धक्का मारते हुए, एक दूजे पर झुण्ड के झुण्ड गिर पड़ती हैं फिर हंसते हुए ताली बजाती हैं। सखियों के ऐसे नूरी तन हैं कि जो कितना भी खेलने पर थकते ही नहीं हैं।

इन बोहोत रेती में सखियाँ , दौड़ दौड़ देत गुलाटें ।
कूदें दौड़े ठेकत हैं , रेत उड़ावें पाऊँ छांटें ।। परि. 7/42

कभी श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ मिलकर छुआछुई का खेल खेलती हैं। जिसमें राजजी इस प्रकार दौड़ते हैं कि 12,000 सखियाँ मिलकर भी उन्हें पकड़ नहीं पाती हैं। इस प्रकार यहाँ इतना हाँस—विनोद होता है कि यहाँ से जाने की इच्छा ही नहीं होती है।

कबूं दौड़त राज सखियाँ , सबे मिल के जेती ।
हांसी करत जमुना त्रट , जित बोहोत गड़त पाऊँ रेती ।। परि. 7/43

कुंज—निकुंज वनों में श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ जब आते हैं, तो फूलों के सेज्या, सिंहासन, हिण्डोलों में अनेक प्रकार से आनंद लेते हैं। यहाँ के वातावरण में फूलों की अनंत प्रकार की खुशबू से युक्त, शीतल वायु बह रही है, जिसका आनंद लेते हुए श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ हाँस—विनोद करते हुए यहाँ घूमते हैं।

कै सुख इन हिण्डोलन के , कै सुख सेज फूलन ।

कै सुख लवाजमें मंदिरों , कै सुख फूल सिंहासन ।। बड़ी वृत्त 87/46

कोई सखी श्रीराजजी महाराज के साथ मीठीं बातें करती हुई चल रही है, कोई सखी उन बातों को सुनते हुए आनंद ले रही है। कोई सखी श्रीराजजी के सुंदर मुखारविंद को निहारते हुए चल रही है, कोई हँसते–हँसते बातें कर रही है। इतने में एक सखी दौड़ते हुए श्रीराजश्यामाजी के सामने आकर रास्ता रोक लेती है और राजजी को खींचकर, कोई रामत खेलने के लिए ले जाती है। इस प्रकार बहुत आनंद होता है।

कोई हक हादी के संग चले, कोई आए रोकत राह दरम्यान ।
एह रामत रमें इन गली , खैंच चलत चतुर सुजान ।।बड़ी वृत्त 87/53

बट–घाट के पश्चिम से, कुंज–निकुंज वनों के बीच–बीच में से होते हुए, बड़ोवन के वृक्षों की 5 हारें पश्चिम तरफ निकली हैं। जो फूलबाग के पश्चिम से होकर रंगमहल के उत्तर दिशा के बड़ोवन से मिल गयी हैं। यहाँ लाल, नीले, पीले, हरे आदि अनेक रंगों के वृक्ष कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं। कई वृक्ष एक ही रंग के हैं, तो कई वृक्ष 10–10 रंगों के हैं।

कई बन स्याह सुपेत हैं , कई बन हैं नीले ।
कई बन लाल गुलाल हैं , कई बन हैं पीले ।। परि. 7/18

ये वृक्ष बहुत ऊँचे–ऊँचे हैं, जिनकी लंबी डालियाँ फूल, पत्तें आपस में मिलकर सुंदर चंद्रवा के समान छत बना दिये हैं। इन वृक्षों की 5 भोम छठी चाँदनी है, जो देखने में ''पेड़ के ऊपर पेड़'' के समान शोभा धारण किये हुए है।

एक पेड़ लंबी डारियाँ , तिन डारों पर पेड़ अपार ।
पेड़ डारों कई भोम रची , जुबां कहा कहे ए विस्तार ।। परि. 27/48

इनकी प्रत्येक भोमों में डालियों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोलें लटक रहे हैं। इन वनों में अनेकों प्रकार के फलों (मेवों) के वृक्ष हैं, जिनके स्वाद भी अनेक प्रकार के हैं। कई मीठे हैं, तो कई बहुत ही अधिक मीठे हैं, कई तीखे हैं, तो कई अधिक तीखे हैं, कई खट्टे हैं, तो कई नमकीन हैं।

कई मीठे मीठे मीठरड़े , कई फरसे फरसे मुख पर ।
कई तीखे तीखे तीखरड़े , कई खट्टे खट्टे खटूंबर ।। परि. 7/22

इन वनों में भी अनेकों जाति के बेशुमार पशु–पक्षी रहते हैं, जो श्रीराजश्यामाजी व सखियों की अनेक प्रकार से सेवा, स्वागत करते हैं, स्वादिष्ट मेवे खिलाते हैं, फूलों के हार पहनाते हैं, नाच–गाकर, खेल–करतब दिखाकर रिझाते हैं। इस प्रकार 6 घड़ी (सवा 5 बजे तक) तक अनेक प्रकार से हाँस–विलास करने के बाद मध्य के चेहेबच्चे में जाकर झीलने का आनंद लेते हैं, फिर मंदिरों में श्रृंगार करके, सुखपालों में बैठकर रंगमहल की तरफ प्रस्थान करते हैं।

नक्शा नं. 38 लाल चबूतरा और बड़ोवन

रंगमहल की उत्तर दिशा में 50 हांस (1500 मंदिर) हैं, जिनमें से वायव्य कोने (के गुर्ज) से पूर्व की तरफ के 40 हांसों (1200 मंदिरों) के सामने धाम चबूतरे से लगा हुआ लाल चबूतरा शोभायमान है, जो 1200 मंदिर का लंबा व 30 मंदिर (एक हांस) का चौड़ा है। इन 1200 बाहरी हार मंदिरों की बाहरी दीवाल में झरोखों की जगह में भी दरवाजे हैं। इस प्रकार इन सभी मंदिरों की बाहरी दीवाल में 3–3 दरवाजे हैं। लाल चबूतरे से, सामने जमीन पर प्रत्येक हांस के मध्य से चाँदों के द्वारा (दायें–बायें) भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। चाँदो की जगह छोड़कर बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर सुंदर रत्नजड़ित कठेड़ा है। चबूतरे पर प्रत्येक (40) हांस में अनेक प्रकार की चित्रकारी से युक्त, अलग–अलग (40) रंगों की सुंदर पशमी गिलम बिछी है। प्रत्येक हांस के मध्य में एक–एक सिंहासन तथा इसके दायें–बायें 6–6 हजार कुर्सियाँ शोभायमान हैं। कहीं छत्र वाले सिंहासन हैं, कहीं खुले सिंहासन हैं। कुर्सियाँ भी अनेकों प्रकार की, दो सखी, चार सखी, 200 सखी एक साथ बैठने वाली हैं। यहाँ बैठकर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ बड़े जानवरों के खेल–तमाशे देखते हैं।

जो सुख लाल चबूतरे , लेत मोहोला बड़े पसुअन ।
ऐ बैठक सुख क्यों कहूँ , ए सुख जानें अर्श के तन।। परि. 20/30

लाल चबूतरा के सामने बड़ोवन के 41 वृक्षों की 41 हारें हैं। प्रत्येक वृक्ष 1–1 हांस की दूरी पर हैं। इनमें से 41 वृक्षों की प्रथम 17 हारें एक भोम ऊँची हैं, किंतु ये एक भोम रंगमहल की दसवीं चाँदनी के बराबर है। बाकी 24 हारें 250 भोम ऊँचें हैं। इनकी डालियों की सुंदर मेहराबों में प्रत्येक भोम में हिण्डोलें हैं। प्रथम 17 हारों में भी वृक्षों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोले लटक रहे हैं, जो झूलते समय ही नीचे आते हैं। सभी वृक्षों की डालियों, फूल और पत्तों के परस्पर मिलने से रत्नजड़ित चंद्रवा के समान सुंदर छत बन गई है। जो ऊपर से देखने पर रंगबिरंगी चित्रकारी से युक्त सुंदर दुलीचे के समान दिखाई दे रही है।

वन की चाँदनी के हिस्से , पातों पात मिले नूर ।

मानो दुलीचा बिछाया , सो कह्यो न जाय जहूर ।। बड़ी वृत्त 45/14

लाल चबूतरे से लगती हुई 41 वृक्षों की जो पहली हार है, उनकी डालियाँ रंगमहल की दसवीं चाँदनी से मिली हुयी हैं। जिससे रंगमहल की चाँदनी से बड़ोवन की चाँदनी में आ–जा सकते हैं। इन डालियों के कारण लाल चबूतरे पर शीतल छाया हो रही है। बड़ोवन की चाँदनी के चारों कोनों में चार चेहेबच्चे हैं। चाँदनी की पश्चिमी किनार पर कठेड़ा शोभायमान है, तथा उत्तर दिशा में 249 भोम ऊँचे बड़ोवन के वृक्ष दिखाई दे रहे हैं। पूर्व में ताड़वन की चाँदनी इस चाँदनी से मिली हुई है। **चांदनी धाम के आगे छज्जा, एह तिनको लगा आये बन।**

हर हांस कठेड़े द्वार हैं, तहां से वन पर आये रूहें मोमिन।।बड़ी वृत्त 45/13

बड़ोवन के वृक्षों के मध्य 40 अखाड़ों की 40 हारें हैं, कुल 1600 अखाड़े हैं। प्रत्येक अखाड़ा एक हांस का लंबा–चौड़ा है, जिनमें तेजोमयी हीरे व मोती के समान जगमगाती रेती बिछी है। जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ लाल चबूतरे पर आकर सिंहासन व कुर्सियों पर विराजमान होते हैं, तब सामने इन अखाड़ों में अनेकों जाति व अनेकों रंगों के सुंदर पशु–पक्षी, हाथी, शेर, बाघ, चीते, घोड़े, बंदर, खरगोश, बिल्ली, भैंस, गैंडा, हिरण, गरूड़, मोर, मुर्गा आदि अपने–अपने अखाड़ों में अनेक कलाओं से नाच–गाकर, खेल–करतब दिखाकर श्रीराजश्यामाजी व सखियों को रिझाते हैं।

हर खाँचे जातें जुदी जुदी , आप अपनी विद्या खेलत ।

गाएँ नाचें जिकर करें , हर भांते रूहों रिझावत ।। परि. 34/100

बड़ोवन के ऊँचे–ऊँचे वृक्षों के नीचे, बड़े–बड़े जानवर हाथी, ऊँट, जेब्रा आदि आते–जाते हैं, जो अनेक प्रकार से खेल तमाशे दिखाते हैं। हाथी, बाघ, चीता, सियार आदि सभी जानवर बड़े प्रेम से मिलजुलकर खेलते हैं, आपस में द्वेष नहीं करते क्योंकि सभी प्रेम के ही स्वरूप हैं। राजजी का प्रेम ही इनकी खुराक है।

हाथी बाघ चीते सियाहगोस, खेलें मिलें आतम नहीं रोस।

हंस गरूड़ पंखी कई जात , नाम लेऊँ केते कै भांत ।। परि. 3/52

यहाँ के पशु–पक्षी, अनेक प्रकार के वाद्य यंत्र बजाकर मधुर संगीत सुनाते हैं। अनेकों कलाओं से नृत्य करके दिखाते हैं। पशु पैर से नृत्य करते हैं तो पक्षी, पंख की सहायता से उड़ते हुए नृत्य करते हैं। अनेक प्रकार के नृत्य व खेलों की आश्चर्य जनक कला देखकर राजश्यामाजी व सखियाँ बहुत प्रसन्न होते हैं।

ऐ नटविद्या कई नाचत , बाजे दिल चाहे बजावत ।

ऐ खेल अचंभा देख के , हक हादी रूहें राचत ।। परि. 34/ 97

कई पशु–पक्षी श्रीराजश्यामाजी व सखियों को हँसाने के लिए आपस में दिखावे की लड़ाई लड़ते हैं। इसमें से हाथी व खरगोश की लड़ाई का आनंद कुछ और होता है। बड़ा हाथी बहुत प्रयास करने पर भी छोटे खरगोश को हरा नहीं पाता है क्योंकि इस खरगोश को शक्ति, सखियों के मन से प्राप्त होती है। सखियाँ नहीं चाहती हैं कि खरगोश हारे।

खरगोश एक जवेर का , चले रूह के मन सों ।

बड़ा फील लड़े अर्स का , कहो कौन जीते इनमों ।। परि. 14/74

नक्शा नं. 39 ताड़वन

रंगमहल की उत्तर दिशा में, लाल चबूतरे के पूर्व के शेष 10 हांस के सामने, 10 हांस (300 मंदिर) का चौड़ा तथा 17 हांस (510 मंदिर) का लंबा ताड़वन है, जिसमें एक हांस (30 मंदिर) के लंबे–चौड़े 10 बगीचों

की 17 हारें हैं। कुल 170 बगीचे होते हैं किंतु खड़ोकली ने एक बगीचे की जगह ले ली है जिससे एक बगीचा कम हो गया है, कुल 169 बगीचे हैं। प्रत्येक बगीचे के चारों दिशा में नहरें एवं चारों कोनों में चेहेबच्चे शोभायमान हैं, जो भोम भर गहरे हैं। सभी चेहेबच्चों में 5–5 फव्वारें हैं, जिनकी शोभा फूलबाग के चेहेबच्चों के समान ही है। सभी नहरों के मध्य में 1–1 पुल है।

नक्शा नं. 40 ताड़वन के एक बगीचे की शोभा

प्रत्येक बगीचे के अंदर 31 वृक्षों की 31 हारें हैं, जिनमें से चारों तरफ किनार के 120 वृक्ष ताड़ के हैं, जो एक भोम ऊँचे हैं किंतु यह एक भोम रंगमहल की दसवीं चाँदनी के बराबर है। चारों दिशा के मध्य के, नहरों के पुल के दोनों तरफ के वृक्षों के मध्य की मेहराब में 10 भोम ऊँचे हिण्डोले हैं। जिन पर सखियाँ नहरों पर झूलने का आनंद लेती हैं। चारों तरफ से हिण्डोलें आते हैं और चेहेबच्चे के ऊपर चारों सखियाँ ताली देती हैं। ताड़ के वृक्षों के मध्य में जो 29 वृक्षों की 29 हारें हैं, वे अनेक प्रकार के फलों के वृक्षों की हैं, जिनकी 10 भोमें हैं, जो रंगमहल के भोमों के समान ही हैं। ताड़वन के एक भोम के बराबर ही इन वृक्षों की 10 भोमें हैं। इनकी प्रत्येक भोमों में डालियों की मेहराबों में हिण्डोले लटक रहे हैं।

कई वन हैं इत ताड़ के , कई खजूरी नारियर ।
और नाम केते लेऊँ , बट पीपर सर ऊमर ।। परि. 30/61

बड़ोवन की भांति ही ताड़वन के वृक्षों की भी डालियाँ रंगमहल की 10 वीं चाँदनी से मिली हुई हैं। समस्त वृक्षों की डालियों, फूल–पत्तों के आपस में मिलने से 10 हांस की लंबी व 17 हांस की चौड़ी सुंदर दुलीचे के समान छत बन गई है। ताड़वन की चाँदनी, रंगमहल की चाँदनी तथा बड़ोवन की चाँदनी तीनों आपस में मिली हुयीं हैं। रंगमहल की चाँदनी की किनार पर, ताड़वन व बड़ोवन की चाँदनी में जाने के लिए कठेड़ा द्वार बना है। ताड़वन की चाँदनी के पूर्व में कठेड़ा शोभायमान है।

ऐ बन लगा जाये के , चाँदनी के मुकाबिल ।
धाम चाँदनी ताड़वन की , एक हुई देखो दिल निरमल ।। बड़ी वृत्त 45/6

ताड़वन की उत्तर दिशा में 490 मंदिर की चौड़ाई में दो भोम ऊँचे केलवन के वृक्ष हैं। केलवन के बीच में से बड़ोवन के 10 भोम ऊँचे वृक्षों की 5 हारें निकलकर पूर्व की तरफ गयी हैं, जो ताड़वन की सीमा पार करने के बाद 5 भोम के ऊँचीं हो गयी हैं। ये वृक्ष यमुनाजी के पाल के बड़ोवन से मिल गये हैं। इस केलवन के उत्तर दिशा में मधुवन है।

नक्शा नं. 41 बड़ोवन, मधुवन तथा महावन का दृश्य

लाल चबूतरा के उत्तर दिशा में जो बड़ोवन के 41 वृक्षों की 17 हारें हैं, वे एक भोम ऊँचीं हैं, जो रंगमहल की 10 वीं चाँदनी के बराबर हैं। इनके उत्तर दिशा में जो बड़ोवन के 41 वृक्षों की 24 हारें हैं, वें 250 भोम (1 लाख कोस) ऊँचीं हैं। इनकी प्रत्येक भोमों में डालियों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोलें हैं। बड़ोवन के उत्तर दिशा में मधुवन के वृक्षों की चार हारें हैं, जो 500 भोम (2 लाख कोस) ऊँचीं हैं। प्रत्येक चौक के चारों दिशा में नहरें तथा चारों कोनों में चेहेबच्चे हैं। प्रत्येक चेहेबच्चें में 5–5 फव्वारें हैं। 'बट–पीपल की चौकी' के समान प्रत्येक चौक के मध्य तीसरे हिस्से में कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके मध्य 1 वृक्ष है। इस प्रकार मधुवन के सभी बगीचों की शोभा है। इन वृक्षों की भी प्रत्येक भोम में डालियों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोले लटक रहे हैं।

मधुवन की किन विध कहूँ , वन जाए लग्या आसमान ।
पुखराज अर्स के बीच में , ए सिफत न होए बयान ।। परि. 11/79

मधुवन की उत्तर दिशा में महावन के वृक्षों की चार हारें हैं। जिनकी शोभा मधुवन के वृक्षों के समान ही है किंतु महावन की ऊँचाई 1000 भोम (4 लाख कोस) की है। इन वृक्षों की डालियों, फूल, पत्तों ने परस्पर मिलकर सुंदर चंद्रवा के समान छत का रूप ले लिया है। छत से ऊपर थड़ (तना) पुनः निकला है, जिससे

डालियाँ निकलकर, फूल, पत्तें आपस में मिलकर, पुनः दूजी भोम की छत (तीजी भोम) बना दिये हैं। इसी प्रकार हजारों भोम सुशोभित हो रही हैं। जो देखने पर 'पेड़ के ऊपर पेड़' के समान दिखती हैं।

कितने पेड़ जिमी पर , कई पेड़ पेड़ ऊपर ।
यों पेड़ पर पेड़ आसमान लों , कई सोभा देत सुंदर ।। परि. 27/53

महावन के उत्तर दिशा में पुखराज पहाड़ है। इस प्रकार रंगमहल की चाँदनी से उत्तर दिशा में देखने पर बड़ोवन, मधुवन तथा महावन की चाँदनी एक सीढ़ी के समान दिखायी देती है। सभी वृक्षों की डालियाँ आपस में मिली हुयी हैं, जिससे रंगमहल की चाँदनी से महावन व पुखराज पहाड़ तक जा सकते हैं। इन वनों की प्रत्येक भोमों में बेशुमार पशु–पक्षी रहते हैं, जो इश्क की मस्ती में डूबे हुए दिन रात ''पिया–पिया'' ''धनी–धनी'' ''तूंही–तूंही'' करते रहते हैं।

एक एक पेड़ पर कई भोमें , भोम भोम कई जुगत ।
पशु पंखी एक बिरिख पर , कई जुगतें बास बसत ।। परि. 26/21

परमधाम के अंदर कोई भी जगह, बन या महल, खाली–वीरान नहीं है। हर जगह श्रीराजश्यामाजी एवं सखियों के लाडले पशु–पक्षी रहते हैं। जब श्रीराजश्यामाजी एवं सखियाँ इन स्थानों पर जाते हैं, तो ये पशु–पक्षी आनंद में विभोर होकर बड़े प्रेम से स्वागत एवं सेवा करते हैं।

तिन सब जिमी में बस्ती , कहूँ पाईये नहीं वीरान ।
पातसाही पसुअन की , और जानवरों की जान ।। परि. 27/15

नक्शा नं. 42–पुखराज पहाड़

रंगमहल की उत्तर दिशा में साढ़े 4 लाख कोस की दूरी पर, आकाश को छूता हुआ पुखराज पहाड़ शोभायमान है। जो एक पुखराज के नंग के अंदर अनेक रंगों की तेजोमयी किरणों से जगमगा रहा है। जो दूर से ही देखने पर मन को आकर्षित कर लेता है तथा पास आने पर तो यहाँ से जाने की इच्छा ही नहीं होती है।

ए पर्वत इन भांत का , नैनों निमख न छोड़या जाए ।
क्यों कहूँ खूबी इन जुबाँ , देखत रह्या हिरदे भराए ।। परि. 13/9

कहने को तो ये पहाड़ है, किंतु इसके अंदर बेशुमार महल हैं, कई रंगो के वन हैं, कई प्रकार के मेवों के वृक्ष हैं, बगीचे, नहरें, झरने विद्यमान हैं। इसलिए इसे वाणी में पहाड़ महल भी कहा गया है।

सुख लीजो मोमिन , पहाड़ मोहोल के आराम ।
अर्श अजीम के कायम , निसदिन एही ताम ।। परि. 13/1

सर्वप्रथम जमीन से एक भोम ऊँचा, हजार हांस का गोल चबूतरा है। इसका प्रत्येक हांस 400 कोस लंबा है। हांस–हांस के कोनों में गोल गुर्ज (चांदे) हैं, जिनके दायें–बायें से भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा है। इस गोल चबूतरे के ऊपर तीसरे हिस्से में पुनः एक भोम ऊँचा चौरस चबूतरा है। जिसके चारों दिशा के मध्य से भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा शोभायमान है। इस चबूतरे पर 5 पेड़ (थंभ) विद्यमान हैं। एक पेड़ मध्य में है तथा चार पेड़ चारों दिशा में हैं। इन पाँचो पेड़ के ऊपर विशालकाय 2,000 भोम (8 लाख कोस) ऊँचा पुखराज पहाड़ विद्यमान है। (एक भोम 400 कोस ऊँचा है) इसमें से 1,000 भोम (4 लाख कोस) ऊँचा पुखराज पहाड़ है तथा 1,000 भोम (4 लाख कोस) ऊँचा आकाशी महल है। पुखराज पहाड़ के आधार स्तंभ के रूप में होने के कारण इन्हें पाँच पेड़ कहा जाता है, नहीं तो इन एक–एक पेड़ में रंगमहल की चौरस हवेलियाँ विद्यमान हैं।

एक एक थंभन में , जाने श्रीधाम मोहोल सब ठौर ।
ऐसे चौक मोहोल गलियाँ , बिना मोमिन न जाने और ।। बड़ी वृत्त 49/9

पुखराज पहाड़ के उत्तर एवं पश्चिम दिशा में, पुखराज पहाड़ की चाँदनी में जाने हेतु विशाल सीढ़ियाँ (घाटी) हैं। पूर्व दिशा में बंगले का चबूतरा है, जिसके 980 भोम ऊपर पुखराजी ताल विद्यमान है। पुखराज के चबूतरे से लगकर, दक्षिण दिशा में एक हांस का लं.–चौ. कुण्ड है, जिसके दक्षिण में एक लंबी नहर निकली है। पुखराज पहाड़ तथा इन सबको को चारों तरफ से घेरकर पुखराजी रौंस विद्यमान है, जिस

पर बड़ोवन के वृक्षों की दो हारें हैं। पुखराजी रौंस के आगे चारों तरफ घेरकर पूर्व वर्णनानुसार महावन के वृक्षों की 4 हारें हैं। इनके आगे चारों तरफ घेरकर मधुवन के वृक्षों की 4 हारें हैं। इनके आगे चारों तरफ घेरकर बड़ोवन के वृक्ष हैं, जो अक्षरधाम के पूर्व तक गये हैं। महावन, मधुवन व बड़ोवन के वृक्षों के प्रत्येक चौक के चारों दिशा में नहरें, चारों कोनों में चेहेबच्चे, डालियों की मेहराबों में हिण्डोलें पूर्व वर्णनानुसार विद्यमान हैं।

नक्शा नं. 43 पुखराज तथा बंगले की तरहटी

पुखराज की तरहटीः— पुखराज का हजार हांस का जो भोम भर ऊँचा चबूतरा है, यह अंदर से पोला है, इसके नीचे तरहटी है। प्रत्येक हांस के मध्य में (दो गुर्जो के मध्य) चबूतरे की दीवाल में 1—1 दरवाजे हैं, जिनके सामने तरहटी में जाने के लिए भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। तरहटी की छत दो भोम ऊपर है क्योंकि एक भोम जमीन के नीचे है तथा एक भोम ऊँचा चबूतरा है। तरहटी में सर्वप्रथम चारों तरफ घेरकर (एक हजार हांस में) एक हजार बगीचों की 52 हारें हैं। जिनमें बेशुमार फूलवाड़ी, नहरें व चेहेबच्चे शोभायमान हैं। प्रत्येक बगीचे के मध्य में 1—1 थंभ हैं, जो दो भोम ऊँचे हैं। इनके भीतरी तरफ एक हजार महलों की 53 हारें हैं। ये महल रंगमहल की चौरस हवेलियों के समान ही हैं, जो दो भोम ऊँचें हैं। प्रत्येक बगीचे व महल एक हांस के लंबे—चौड़े हैं। इनके भीतरी तरफ, तरहटी के तीसरे हिस्से में खजाने का ताल विद्यमान है। यहाँ पानी का विशाल भण्डार है, इसलिए इसे खजाने का ताल कहते हैं। इस ताल के चारों दिशा में एवं मध्य में पाँच महल (पेड़) हैं। इनकी शोभा रंगमहल की चौरस हवेलियों के समान है। मध्य के महल के अंदर एक पानी का स्तून (पाईप) है, जो 8 लाख कोस ऊपर आकाशी महल की चाँदनी तक गया है। खजाने के ताल के चारों दिशा में चार नहरें निकली हैं। कृष्ण पक्ष की नवमी को जब यहाँ आते हैं, तो महलों, बगीचों में अनेक प्रकार से खेल—रामतें, हांस—विलास करने के बाद खजाने के ताल में झीलना करके श्रृंगार करते हैं।

बंगले की तरहटीः— बंगले का चबूतरा 1 लाख कोस का लंबा—चौड़ा समचौरस है। इस चबूतरे की भी किनार पर चारों दिशा में हांस—हांस (400 कोस) की दूरी पर गोल गुर्ज (चाँदे) हैं, जिनके दायें—बायें से भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। प्रत्येक दो गुर्जों के मध्य चबूतरे की दीवाल में 1—1 दरवाजे हैं, जिनके सामने तरहटी में जाने के वास्ते भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। बंगले की तरहटी में सर्वप्रथम 1,000 बगीचों की 38 हारें हैं। प्रत्येक बगीचे के मध्य में 1—1 थंभ हैं, जो दो भोम ऊँचे हैं। बगीचों के भीतरी तरफ 1,000 महलों की 39 हारें शोभायमान हैं, जो दो भोम ऊँचीं हैं। इनके भीतरी तरफ तरहटी के तीसरे हिस्से में ताल है। ताल के पूर्व व पश्चिम में दो नहरें हैं। तरहटी के पूर्व दिशा में मध्य तीसरे हिस्से में सीढ़ियाँ नहीं हैं। यहाँ बंगले की तरहटी व अधबीच के कुण्ड की तरहटी के बीच की दीवाल है जिसमें अधबीच के कुण्ड की तरहटी में जाने हेतु दरवाजे विद्यमान हैं।

नक्शा नं. 44 अधबीच के कुण्ड, ढ़पो चबूतरा तथा मूल कुण्ड की तरहटी

अधबीच के कुण्ड की तरहटीः— बंगले के चबूतरे से लगकर पूर्व दिशा में अधबीच के कुण्ड का भोम भर ऊँचा चबूतरा है, जो बंगले के चबूतरे का एक तिहाई (33,000 कोस का) लंबा—चौड़ा है। इसके किनार पर तीन दिशा (उत्तर, पूर्व, दक्षिण) में हांस—हांस (400 कोस) की दूरी पर गोल गुर्ज व सीढ़ियाँ उसी प्रकार हैं। चौथी दिशा में तो बंगले का चबूतरा है। गुर्जों के मध्य दरवाजे से तरहटी में जाने हेतु भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी है। तरहटी में सर्वप्रथम महलों की 10 हारें हैं, जो दो भोम ऊँचीं हैं। इनके भीतरी तरफ बगीचों की 11 हारें हैं। प्रत्येक बगीचों के मध्य में दो भोम ऊँचें 1—1 थंभ हैं। इन सबके भीतरी तरफ तरहटी के तीसरे हिस्से में ताल विद्यमान है। ताल के पूर्व व पश्चिम में दो नहरें हैं। तरहटी के पश्चिम की दीवाल में बंगले

की तरहटी में जाने हेतु दरवाजे हैं। पूर्व में भी मध्य के तीसरे हिस्से में सीढ़ियों की जगह ढ़पो चबूतरा की तरहटी में जाने हेतु दरवाजे हैं।

ढ़पो चबूतरा की तरहटीः– अधबीच के कुण्ड के चबूतरा से लगते हुए पूर्व दिशा में ढ़पो चबूतरा है जो अधबीच के कुण्ड के चबूतरे का एक तिहाई (11,000 हजार कोस का) लंबा–चौड़ा है। इसके भी किनार पर तीन दिशाओं (उत्तर, पूर्व, दक्षिण) में हांस–हांस (400 कोस) की दूरी पर गोल गुर्ज हैं, जिनके दायें–बायें सीढ़ियाँ हैं। चौथी दिशा में तो अधबीच के कुण्ड का चबूतरा है। प्रत्येक दो गुर्जो के मध्य में चबूतरे की दीवाल में दरवाजे हैं, जिनके सामने तरहटी में जाने हेतु भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। तरहटी में सर्वप्रथम महलों की 3 हारें हैं, जो दो भोम ऊँचीं हैं। इनके भीतरी तरफ बगीचों की 3 हारें हैं। प्रत्येक बगीचों के मध्य में दो भोम ऊँचे 1–1 थंभ हैं। इनके भीतरी तरफ तरहटी के तीसरे हिस्से में एक कुण्ड है, जिसके पूर्व व पश्चिम में दो नहरें हैं। तरहटी के पश्चिम की दीवाल में अधबीच के कुण्ड की तरहटी में जाने हेतु दरवाजे हैं तथा पूर्व में भी मध्य के तीसरे हिस्से में सीढ़ियों की जगह मूलकुण्ड की तरहटी में जाने हेतु दरवाजे हैं।

मूल कुण्ड की तरहटीः– ढ़पो चबूतरा से लगते हुए पूर्व में मूलकुण्ड का चबूतरा है जो ढ़पो चबूतरा का एक तिहाई (3700 कोस का) लं.–चौ. है। इसके भी किनार पर तीन दिशाओं में हांस–हांस की दूरी पर गोल गुर्ज व दायें–बायें सीढ़ियाँ हैं। गुर्जो के मध्य में दरवाजे के सामने तरहटी में जाने हेतु भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। तरहटी में सर्वप्रथम महलों की 1 हार है, फिर बगीचों की 1 हार है। इनके भीतरी तरफ तरहटी के तीसरे हिस्से में 1200 कोस का लंबा–चौड़ा एक कुण्ड है, जो यहाँ नहीं खुला है। कुण्ड के चारों तरफ 2 भोम ऊँची दीवाल है। यह कुण्ड ऊपर चबूतरे पर जाकर दिखाई पड़ता है। कुण्ड के पूर्व की दीवाल में प्रथम भोम के हिस्से में 400–400 कोस की तीन मेहराबें हैं। मध्य की मेहराब से श्रीयमुनाजी निकली हैं एवं दायें–बायें की मेहराबों के सामने जलरौंस व पाल हैं, जो तरहटी की जमीन से भोम भर ऊँचीं हैं। तरहटी से पाल पर भोम भर की सीढ़ियाँ चढ़ी हैं। पाल, जलरौंस से कमर भर ऊँचीं है, अतः जलरौंस से पाल पर भी 3 सीढ़ियाँ चढ़ी हैं। यमुनाजी, जलरौंस तथा पाल इसी प्रकार मूलकुण्ड से बाहर निकले हैं। मूलकुण्ड की तरहटी के पश्चिम की दीवाल में सीढ़ियों की जगह ढ़पो चबूतरा की तरहटी में जाने हेतु दरवाजे हैं। मूलकुण्ड की तरहटी से बंगले की तरहटी तक नीचे ही नीचे इन दरवाजों के द्वारा आ–जा सकते हैं। मूलकुण्ड की तरहटी के पूर्व में मध्य के तीसरे हिस्से में श्रीयमुनाजी, जलरौंस व पाल निकले हैं, जिनके दायें–बायें 1–1 हिस्से में तरहटी से बाहर जाने हेतु भोम भर की सीढ़ियाँ चढ़ी हैं।

नक्शा नं. 45 पुखराज तथा बंगले का चबूतरा

पुखराज का चबूतराः– पुखराज के हजार हांस के गोल चबूतरे के ऊपर मध्य में तीसरे हिस्से में भोम भर ऊँचा चौरस चबूतरा है। इस चबूतरे पर 5 पेड़ (महल) तरहटी के प्रकट हुए हैं, जो 5 भोम तक सीधे उठे हैं। उसके बाद चारों तरफ छज्जे निकलने प्रारंभ होते हैं। चारों दिशा के पेड़ (महल) के दायें–बायें 6–6 महल और हैं, जो दो भोम ऊँचे हैं। पुखराज एवं बंगले के चबूतरे की संधि में एक हांस (400 कोस) का लंबा–चौड़ा कुण्ड है, जो 3 भोम गहरा है। इस कुण्ड के चारों तरफ जल रौंस तथा पाल है, जिस पर होकर पुखराज के चबूतरे से बंगले के चबूतरे पर आ–जा सकते हैं। इस कुण्ड में बंगले की छठी चाँदनी से झरने के रूप में पानी गिरते हुए सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रहा है।

बंगले का चबूतराः–बंगले के चबूतरे पर सर्वप्रथम बड़ोवन के वृक्षों की पाँच हारें हैं। इनके भीतरी तरफ फीलपायों (हाथी के पैर के समान मोटे थंभ) की चार हारें हैं। इन फीलपायों में हाथी के सूंड, गौमुख जैसी कई आकृतियाँ विद्यमान हैं, जिनसे कई फुहारे छुट रहे हैं। इनके भीतरी तरफ बड़ोवन के वृक्षों की पुनः 5 हारें हैं। इन वृक्षों व फीलपायों की ऊँचाई एक भोम है, जो बंगलों के 5 भोम के बराबर है। इन सबके भीतरी तरफ चबूतरे के तीसरे हिस्से में आड़ी–खड़ी नहरों के बीच 48 बंगलों की 48 हारें तथा 48 चेहेबच्चों की 48 हारें क्रमशः शोभायमान हैं। (इन बंगलों व चेहेबच्चों की शोभा का वर्णन नक्शा नं. 56 में किया गया है) बंगलों की ऊँचाई 5 भोम है। चबूतरे की पूर्व दिशा में (बड़ोवन व फीलपायों के हिस्से में) एक देहेलान है, जिसमें 8 थंभो की 14 हारें हैं। इस देहेलान के पश्चिम दिशा के दोनों कोनों में 1–1 चौरस व गोल गुर्ज हैं। यह देहेलान अधबीच के कुण्ड के पश्चिम की देहेलान से मिलती हुयी 1,000 भोम ऊपर गयी हैं।

नक्शा नं. 46 अधबीच के कुण्ड का चबूतरा, ढ़पो चबूतरा तथा मूल कुण्ड का चबूतरा

अधबीच के कुण्ड का चबूतराः– चबूतरे पर सर्वप्रथम बड़ोवन के वृक्षों की पाँच हारें हैं। इनके भीतरी तरफ फीलपायों की चार हारें हैं। इनके भीतरी तरफ बड़ोवन के वृक्षों की पुनः 5 हारें हैं। इन वृक्षों व फीलपायों की ऊँचाई 5 भोम के बराबर एक ही भोम है। चबूतरे की पश्चिम दिशा में एक देहेलान है, जिसमें 8 थंभों की 14 हारें हैं। इस देहेलान के पूर्व दिशा के दोनों कोनों में 1–1 चौरस व गोल गुर्ज हैं। यह देहेलान बंगले के पूर्व की देहेलान से मिलती हुयी 1,000 भोम ऊपर गयी है।

इन सबके भीतरी तरफ चबूतरे के तीसरे हिस्से में आड़ी–खड़ी नहरों के बीच 27 बगीचों की 27 हारें हैं। एक बगीचा एक हांस का लंबा–चौड़ा है। प्रत्येक बगीचे के चारों दिशा में नहरें तथा चारों कोनों में चेहेबच्चे शोभायमान हैं। कुल 28 चेहेबच्चों की 28 हारें हैं। इन चेहेबच्चों में 5–5 फव्वारे फूलबाग के समान ही शोभायमान हैं। प्रत्येक चेहेबच्चों में 1–1 स्तून (जल स्तम्भ) हैं, जो 496 भोम ऊपर तक गये हैं। कुल 784 स्तून हैं। मध्य के 9 बगीचों की जगह में 3 हांस का लंबा–चौड़ा, कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके किनार पर 12 थंभ हैं। चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में थंभों के मध्य कठेड़ा है। इस चबूतरे के मध्य में एक हांस का लंबा–चौड़ा पानी का पाईप है, जो छठी भोम में खुलता है। इसी प्रकार ऊपराऊपर पाँचों भोम शोभायमान हैं।

ढ़पो चबूतरा :–ढ़पो चबूतरा के किनार पर तीन दिशा में सीढ़ियों के अतिरिक्त जगह में कठेड़ा शोभायमान है। चौथी तरफ तो अधबीच के कुण्ड का चबूतरा है। चबूतरे पर अनेक रंगों की चित्रकारी से युक्त, सुंदर पशमी गिलम बिछी है, जिस पर सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। पुखराजी रौंस के बड़ोवन के वृक्षों ने डालियाँ फैलाकर पूरे चबूतरे पर छाया की है। जिससे इस बैठक की शोभा और बढ़ गयी है।

मूल कुण्ड का चबूतराः– चबूतरे की किनार पर तीन दिशा में सीढ़ियों के अतिरिक्त जगह में कठेड़े शोभायमान हैं, चौथी तरफ तो ढ़पो चबूतरा है। चबूतरे के मध्य तीसरे हिस्से में 1200 कोस का लंबा–चौड़ा कुण्ड है, जो 3 भोम गहरा है। दो भोम तरहटी तक तथा एक भोम तरहटी की जमीन से भी नीचे तक गहरा है। चारों दिशा से कमर भर गहरे जल चबूतरे पर चाँदों के द्वारा 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में सुंदर कठेड़ा है। कुण्ड के चारों ओर अनेक रंगों की चित्रकारी से युक्त सुंदर पशमी गिलम बिछी है, जिस पर सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। बड़ोवन के रंगबिरंगे वृक्षों की डालियाँ, कुण्ड के जल चबूतरे तक छाया कर रही हैं। जिनका सुंदर प्रतिबिंब मूल कुण्ड के जल में झलक रहा है।

जुदे जुदे रंगों जवेर ज्यों , कहाँ कहूँ झलकार ।
ए कुण्ड कठेड़ा चबूतरा , सिफत न आवे सुमार ।। **परि. 15/7**

मूल कुण्ड के चबूतरे के पूर्व की दीवाल में 400–400 कोस की 9 मेहराबें हैं। मध्य की एक मेहराब (के नीचे) से यमुनाजी प्रकटी हैं। दायें–बायें की 1–1 मेहराब से जल रौंस व पाल निकली है। दायें–बायें की बाकी 3–3 अक्सी मेहराबों से लगकर गोल गुर्ज व सीढ़ियाँ हैं।

ढ़पी–खुली यमुनाजी :–मूल कुण्ड से यमुनाजी के मरोड़ तक, दोनों तरफ के पाल (के दोनों किनार) पर थंभों की 2–2 हारें हैं। पाल से दोनों तरफ (जल रौंस व पुखराजी रौंस पर) जगह–जगह, 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में इन थंभों के मध्य कठेड़ा शोभायमान है। पाल पर सुंदर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ विद्यमान हैं। पाल के बाहरी तरफ सुंदर वन शोभायमान हैं।

इन थंभों की छत मूल कुण्ड के चबूतरे से मिली हुई है, इस कारण मूलकुण्ड के चबूतरे से इन थंभों की छत पर आ–जा सकते हैं। यह छत आधी दूरी तक यमुनाजी पर भी है, इस कारण यमुनाजी आधी दूरी तक ढ़पी हैं तथा उसके बाद आधी दूरी तक खुली हैं। इस ढ़पे हिस्से को ढ़पी यमुनाजी कहते हैं, जो सुंदर पुल के समान दिख रही है।

ऊपर ढ़ाप्या पुल ज्यों , सोभा लेत सुंदर ।

ऊपर द्योहरी जड़ाव ज्यों , जल खलकत चल्या अंदर ।। परि. 12/11

ढ़पी यमुनाजी पर 5 देहुरियाँ शोभायमान हैं, जिनके दायें–बायें पाल की चाँदनी (छत) पर भी 5–5 देहुरियाँ हैं। खुली यमुनाजी के भी दोनों तरफ पाल की चाँदनी पर 5–5 देहुरियाँ हैं। इस प्रकार कुल 25 देहुरियाँ हैं, जो अनेक प्रकार के रत्नों से जड़ित जगमगाती हुई दिखाई दे रही हैं। इन गुमटियों में कलश, ध्वजा, पताकाओं की बेशुमार शोभा दिख रही है। पाल की चाँदनी के दोनों किनारों पर कंगूरों व कांगरी की अद्‌भुत शोभा है। खुली यमुनाजी के ऊपर दोनों तरफ से बड़ोवन के वृक्षों ने छाया प्रदान की है। इस प्रकार सुंदर वनों तथा यमुनाजी के मध्य पाल पर सुंदर बैठक बन गयी है। जहाँ से दूध से भी उज्जवल श्रीयमुनाजी तीव्र गति से प्रकट होती एवं बहती हुई दिखाई दे रहीं हैं तथा सुंदर वनों से शीतल सुगंधित वायु बह रही है।

दोऊ किनारे बैठक , बन गेहरा गिरदवाए ।
अति शोभा इत जोए की , इन जुबां कही न जाए ।। परि. 12/13

<u>एक महल एकं चबूतरा</u>:–25 देहुरियों के बाद श्रीयमुनाजी दक्षिण दिशा में मुड़ जाती हैं। इस मरोड़ पर चारों कोनों में पाल पर चार महल हैं। इन महलों के बीच 4 मेहराबें हैं, जिनमें चार हिण्डोले शोभायमान हैं। दो हिण्डोले पाल पर हैं, व दो हिण्डोले जल पर हैं। मरोड़ से केलपुल तक पाल पर क्रमशः 5 महल व 4 चबूतरे हैं। 1 महल के बाद 1 चबूतरा है, फिर 1 महल है, फिर 1 चबूतरा है। इसलिए इसका नाम एक महल एक चबूतरा है। यमुनाजी के दूसरी तरफ के पाल पर भी इसी प्रकार महल व चबूतरे हैं। दोनों तरफ के महलों के मध्य यमुनाजी पर मेहराबें बनी हैं, जिन पर भी हिण्डोले (जल पर) लटक रहे हैं। ये महल रंगमहल की चौरस हवेलियों के समान हैं। इनकी छत पर सुंदर देहुरियाँ हैं।

दोऊ किनारे जोए के , एक मोहोल एक चबूतर ।
कहूँ हेम रंग कहूँ जवेर , अति सोभित बन ऊपर ।। परि. 22/21

मरोड़ के पास पुखराजी रौंस के आगे 250 मंदिर की चौड़ाई में रेती रमण है, जहाँ कुंज–निकुंज वन के समान ही बारीक व नूरमयी रेती बिछी है।

<u>नक्शा नं. 47 पुखराज की 14 मेहराबें, बंगले की और अधबीच के कुण्ड की छठी भोम</u>

<u>पुखराज की 14 मेहराबें</u>:–पुखराज के चबूतरे पर जो पाँच पेड़ हैं, उनकी छठी भोम से चारों तरफ छज्जे निकले हैं। मध्य के पेड़ से चारों दिशा के पेड़ों की तरफ छठी भोम में 11–11 कोस के छज्जे निकले हैं। इन छज्जों के ऊपर 1–1 कोस की दूरी पर थंभ हैं (कुल 401 थंभों की 11 हारें हैं)। किनारे के थंभों के मध्य कठेड़ा है। इन थंभो की छत से अर्थात 7 वीं भोम से पुनः 11–11 कोस के छज्जे चारों तरफ निकले हैं, जिनके ऊपर आगे थंभ तथा पीछे महल बने हैं। इसी प्रकार 250 भोम तक छज्जे निकलते गये हैं। आगे–आगे थंभ व पीछे–पीछे महल बनते गये हैं। इसी प्रकार चारों दिशा के पेड़ों से भी मध्य के पेड़ की तरफ 11–11 कोस के छज्जे निकले हैं। मध्य के पेड़ से दिशा के पेड़ के बीच 22,000 कोस का अंतर था, जिसमें से दोनों तरफ के 250 भोमों के छज्जों ने 2750–2750 कोस (कुल 5500 कोस) की जगह ढांप ली है, बीच में 16,500 कोस की जगह बची, जिसे 251 वें भोम में एक लंबे छज्जे ने पाट लिया है।

इसी प्रकार प्रत्येक दिशा के पेड़ से दो अन्य दिशा के पेड़ों की तरफ छठी भोम में साढ़े 16–साढ़े 16 कोस के छज्जे निकले हैं, जो 250 भोमों तक प्रत्येक भोम में बढ़ते गये हैं। आगे–आगे थंभ व पीछे–पीछे महल बनते गये हैं। प्रत्येक दिशा के पेड़ से अन्य दिशा के पेड़ों के मध्य 33,000 कोस का अंतर था, जिसमें से दोनों तरफ के 250 भोमों के छज्जों ने 4,125–4,125 कोस (कुल 8250 कोस) की जगह ढांप ली है। बीच में 24,750 कोस की जगह बची, जिसे 251 वें भोम में एक लम्बे छज्जे ने पाट लिया है।

इसी प्रकार चारों दिशा के पेड़ों से बाहरी तरफ चारों दिशा में 44–44 कोस के छज्जे, छठी भोम से 250 वे भोम तक प्रत्येक भोम में बढ़ते गये हैं। आगे–आगे थंभ व पीछे–पीछे महल बनते गये हैं। इसी प्रकार उत्तर व पश्चिम की घाटी के मोहलातों की 7 वीं भोम से एवं पूर्व में बंगले की छठी चाँदनी से, दिशा के

पेड़ों की तरफ 44–44 कोस के छज्जे 250 भोम तक प्रत्येक भोम में बढ़ते गये हैं, जिन्होंने 250 भोम के बाद 11,000–11,000 (कुल 22,000 कोस) की जगह ढांप ली है। बीच में 66,000–66,000 कोस की जगह बाकी रही जिसे 251 वें भोम में एक लम्बे छज्जे ने पाट लिया है। दक्षिण दिशा में महावन के वृक्षों ने भी अपनी छत्री (डालियाँ) छज्जे के समान प्रत्येक भोमों में 250 भोम तक बढ़ाई हैं। 251वें भोम में महावन की छत्री व दक्षिण के पेड़ का छज्जा, एक लंबे छज्जे व छत्री के द्वारा आपस में मिल गये हैं।

ज्यों भोमें छज्जे बढ़ चलीं , इन पहाड़ पुखराज ।
त्यों दरखते छातें बढ़ चलीं , मुकाबिल चाँदनी काज ।। बड़ी वृत्त 46/15

इस प्रकार 251 वें भोम में सभी छज्जे आपस में मिल गये हैं। पुखराज के 251 वे भोम से, और 750 भोम ऊपर (1000वी चाँदनी) तक चारों ओर 44–44 कोस के छज्जे गोलाई में बढ़ते गये हैं, आगे–आगे थंभ व पीछे–पीछे महल बनते गये हैं। किनार के थंभों के मध्य कठेड़ा शोभायमान है। 1000 भोम ऊपर, हजार हांस के गोल चबूतरे के बराबर चाँदनी (छत) हो गयी है। इस प्रकार तले से ऊपर तक चारों तरफ रंगबिरंगे बड़े–बड़े थंभों, देहेलानों, केचेहरियों एवं महलों की अद्‌भुत शोभा दिखाई दे रही है, जहाँ अत्यंत बड़ी–बड़ी बैठकें शोभित हो रही हैं।

तले से ऊपर लग , थंभ झरोखे देहेलान ।
ए बैठकें बका मिने , रूहें संग सुभान ।। परि. 13/45

इन बड़े–बड़े देहेलानों में कई रंगों के बड़े–बड़े जानवर, पहाड़ के समान ऊँचे सफेद हाथी, जिराफ, ऊँट आदि धनी के दर्शनों के लिए आते हैं। तथा अनेकों खेल तमाशे दिखाकर श्रीराजश्यामाजी व सखियों को रिझाते हैं।

इत बड़े जानवर खेलत , आगूं बड़े दरबार ।
ऐ सुख कब हम लेयसी , मोमिन इत इंतजार ।। परि. 26/5

पुखराज की चाँदनी के नीचे 14 बड़ी मेहराबें दिख रही हैं। 4 मेहराबें मध्य के पेड़ से दिशा के पेड़ों के बीच, 4 मेहराबें दिशा के पेड़ों से दिशा के पेड़ों के बीच हैं। दो–दो मेहराबें दोनों घाटियों के तरफ के छज्जे की तथा दो मेहराबें बंगलों के तरफ के छज्जे की हैं। घाटी व बंगलों की मेहराबों के नीचे महावन के वृक्षों की डालियाँ जाकर लगी हैं, इसलिए दो–दो मेहराबें दिखती हैं। कुल 14 मेहराबें हो गयी हैं। चूँकि पुखराज पहाड़ इन आठ आधार,'पाँच पेड़, दो घाटी, एक बंगला' पर खड़ा है। इसलिए इन्हें आठ निशान या आठ पेड़ भी कहा जाता है।

<u>बंगले की छठी भोम</u>:–छठी भोम 1 लाख कोस की लंबी–चौड़ी है, जिसके मध्य में 11,200 कोस का लं.–चौ. ताल है, जो यहाँ नहीं दिखता है क्योंकि इसके चारों तरफ दीवाल है। यह ताल 980 भोम ऊपर जाकर दिखाई देता है, तब पुखराजी ताल कहलाता है। दीवाल के बाहरी तरफ थंभों की एक हार है, जिसकी छत से चारों तरफ 44–44 कोस के छज्जे निकले हैं, जिनके ऊपर किनार पर थंभ हैं, तथा पीछे की दीवाल आगे आ गयी है, जिससे ताल बढ़ गया है। इसी प्रकार 250 भोम तक छज्जे बढ़ते गये हैं। आगे–आगे थंभ बनते गये हैं, पीछे–पीछे ताल भी बढ़ता गया है। 250 भोम ऊपर 33,000 कोस का लंबा–चौड़ा ताल हो गया है। 251 वें भोम से 980 वें भोम तक उसी प्रकार 44–44 कोस के छज्जे चारों तरफ बढ़ते गये हैं, किंतु यहाँ से ताल का बढ़ना बंद हो गया है। छज्जों के आगे–आगे थंभ, पीछे–पीछे महल बनते गये हैं। इस प्रकार पुखराज के देहेलानों, केचेहरियों के समान ही रंगबिरंगे तेजोमयी किरणों से युक्त, जगमगाते, बड़े–बड़े थंभ, देहेलानें पुखराजी ताल के भी चारों तरफ शोभायमान हैं।

बड़े देहेलान केचेहरियाँ , बैठक बारे हजार ।
हक हादी रूहन की , नाहीं सिफत सुमार ।। परि. 14/3

छठी चाँदनी में ताल के पूर्व में एक देहेलान (8 थंभों की 14 हारें) ऊपर जाते दिखाई दे रही है, जो नीचे बंगले के चबूतरे से ही आ रही हैं।

<u>अधबीच के कुण्ड की छठी भोम</u> :–सर्वप्रथम मधुवन के वृक्षों की 5 हारें हैं। फिर महलों की 3 हारें हैं। ये महल नीचे के फीलपायों के ऊपर हैं, इसलिए इन्हें फीलपायों की मोहलात कहते हैं। इनकी शोभा रंगमहल की चौरस हवेलियों के समान ही है। इनके भीतरी तरफ पुनः मधुवन के वृक्षों की 5 हारें हैं। पश्चिम दिशा में 8 थंभों की 14 हारें हैं, जो नीचे से चली आ रही हैं। छठी भोम के मध्य में तीसरे हिस्से में, नीचे के बगीचों

के ऊपर की जगह में, कमर भर गहरे पानी का ताल है। ताल के मध्य में 3 हांस का लंबा–चौड़ा चबूतरा है, जिसके नीचे, प्रथम भोम से आने वाला पानी का पाईप (स्तून) खुला है, जिससे इस ताल में पानी भरता है। इस चबूतरे के चारों ओर ताल में 28 स्तूनों (पाईपों) की 28 हारें जल में से निकलकर ऊपर जाती दिखाई दे रही हैं। इसी प्रकार की शोभा ऊपराऊपर 496 भोमों की है।

नक्शा नं. 48 हजार हांस के महल, जवेरों के महल तथा खास महल

हजार हांस के महल:–पुखराज की 1,000 भोम ऊपर, हजार हांस की चाँदनी की किनार पर 400 कोस का चौड़ा छज्जा चारों तरफ घेरकर निकला है, जिसके किनार पर कठेड़ा है। छज्जे के भीतरी तरफ 400 कोस की चौड़ाई में चारों तरफ घेरकर हजार हांस के महल हैं, जिनकी ऊँचाई 5 भोम छठी चाँदनी है। इसके चारों दिशा के हांस में चार बड़े दरवाजे हैं। हजार हांस के महल के बाहरी व भीतरी तरफ एक दीवाल है, जिससे लगकर हांस हांस के कोनों में बाहरी तरफ हजार गोल गुर्ज हैं तथा भीतरी तरफ अष्ट मेहराबी चबूतरे हैं। अष्ट मेहराबी चबूतरे पर 4 थंभों की 2 हारें हैं, जिन पर 8 मेहराबें हैं, इसलिए इसका नाम अष्टमेहराबी चबूतरा है। प्रत्येक गोल गुर्जों की दीवाल में 3–3 दरवाजे हैं। प्रत्येक हांस के मध्य में, बाहरी व भीतरी दीवाल में मुख्य दरवाजे हैं, जिनके दायें–बायें दो कमर भर ऊँचें चबूतरे हैं, जिनकी तीन दिशा में कठेड़ा है। दोनों चबूतरो पर (चारों कोनो में) 8 थंभ व 10 मेहराबें हैं, जिनकी ऊपर की भोमों में झरोखे बने हैं, जिससे यह चौरस गुर्ज के रूप में ऊपर जाते दिखाई दे रहे हैं। इस प्रकार हजार हांस के बाहरी व भीतरी तरफ कुल 2–2 हजार चौरस गुर्ज दिखाई दे रहे हैं।

प्रत्येक हांस के अंदर चार चौरस हवेलियों की चार हारें (कुल 16 हवेलियाँ) हैं। प्रत्येक दो हवेलियों के मध्य में थंभों की दो हारें व तीन गलियाँ हैं। प्रत्येक हवेली में सर्वप्रथम महलों की एक हार है, जिसके चारों दिशा के मध्य में बड़े दरवाजे हैं, जिनके दायें–बायें चबूतरे हैं। इन महलों के भीतरी तरफ थंभों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ बगीचों, नहरों, चेहेबच्चों की शोभा है। इनके भीतरी तरफ, हवेली के तीसरे हिस्से में कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके किनार पर पुनः थंभों की एक हार है। इन थंभों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोलें शोभायमान हैं। इस प्रकार सभी हवेलियों की शोभा है। गोल गुर्जों के भीतरी तरफ बड़े त्रिपोलिये हैं। इसी प्रकार हजार हांस के महलों के पाँचों भोमों की शोभा है। प्रत्येक हांस जुदे–जुदे रंगों के हैं, जिनकी बेशुमार रंगबिरंगी तेजोमयी किरणें चारों तरफ झलकार कर रही हैं।

हजार हांसों हजार रंग , हर हांस हांस नया रंग ।
थंभ रोसन जिमी लग चाँदनी , करत मिनो मिने जंग ।। परि. 13/35

पुखराज की चाँदनी के मध्य तीसरे हिस्से में आकाशी महल है। आकाशी महल व हजार हांस के महलों के मध्य बेशुमार बगीचों, नहरों व चेहेबच्चों की शोभा है।

जवेरों के महल :–बंगलों की चाँदनी से 980 भोम ऊपर (981 वे भोम में) सर्वप्रथम बड़ोवन के वृक्षों की 5 हारें हैं। इनके भीतरी तरफ जवेरों के महलों की 3 हारें हैं, जिनकी शोभा रंगमहल की चौरस हवेलियों के समान है। इनके भीतरी तरफ बड़ोवन के वृक्षों की पुनः 5 हारें हैं। इन महलों व बड़ोवन के वृक्षों की 20 भोम 21 वी चाँदनी (छत) है। सभी 20 भोमों में, महलों के छज्जे व वृक्षों की डालियाँ आपस में मिली हुई हैं। बड़ोवन की डालियों की सुंदर मेहराबों में प्रत्येक भोम में हिण्डोले हैं। इस प्रकार जवेरों के महलों के दोनों तरफ वनों की सुंदर शोभा दिख रही है। जवेरों के महलों के दरवाजे, झरोखे, छज्जे बाहरी व भीतरी, दोनों तरफ हैं, जहाँ बैठकर या विचरण करते हुए श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ, वनों के सुंदर दृश्य व शीतल सुगंधित हवा का आनंद लेते हैं। इन सबके मध्य में, चाँदनी के तीसरे हिस्से में पुखराजी ताल विद्यमान है, जो 980 भोम गहरा है। चारों दिशा के मध्य से ताल के कमरभर गहरे जल चबूतरे पर 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में ताल की किनार पर कठेड़ा है। चारों तरफ के वनों की डालियों ने जल चबूतरे तक छाया प्रदान की है। इस प्रकार वनों की सभी 20 भोमों की डालियाँ छज्जे के रूप में जल चबूतरे तक आयीं हैं, जिनके ऊपर किनार पर कठेड़ा शोभायमान है, जिससे ये सुंदर झरोखों के समान दिखाई दे रही हैं।

इनमें बैठकर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ, ताल व चार धाराओं (झरनों) के सुंदर दृश्य का आनंद लेते हैं। इन छज्जों के सुंदर प्रतिबिंब जल में झलक रहे हैं।

यूँ ही बीसों भोम दरखत की , छात बनी ऊपर छात ।
तालाब तरफ छज्जे बने , सो क्यूँ कर कहूँ एह बात ।। बड़ी वृत्त 52/2

ताल के पूर्व व पश्चिम में दो देहलानें हैं, जिनमें 8 थंभों की 14 हारें हैं। पूर्व की देहेलान तो बंगले के चबूतरे से चली आ रही है, जो 20 भोम और ऊपर गयी है। पश्चिम की देहेलान भी 20 भोम ऊँची है। इनकी प्रत्येक भोम में चारों तरफ छज्जे निकले हैं, जिनके किनार पर कठेड़े शोभायमान हैं, जहाँ सुंदर बैठकें बनी हैं। इनका सुंदर प्रतिबिंब जल पर झलक रहा है। जवेरों के महल, बड़ोवन तथा देहेलानों की 20 भोम ऊपर एक ही (21वी) चाँदनी है। मध्य में ताल खुला है। चाँदनी की किनार पर चारों तरफ कठेड़ा है। यह चाँदनी, पुखराज की चाँदनी तथा महावन की चाँदनी आपस में मिली हुई हैं, जिससे एक चाँदनी से दूसरी चाँदनी में आ–जा सकते हैं।

चार धाराएँ:–पुखराज की चाँदनी से एक बहुत बड़ा पानी का पूर निकला है, जो गुप्त रूप से पूर्व के बड़े दरवाजे व 400 कोस के छज्जे के नीचे होकर, पश्चिम के देहेलान की चाँदनी के अंदर से (गुप्त रूप से) आकर चार धाराओं के रूप में 20 भोम ऊपर से पुखराजी ताल पर गिरता हुआ सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रहा है।

चारों तरफों झरोखे कुण्ड के , बीच चादरें खूबी देत ।
बड़े देहेलान केचेहरियाँ , हक रूहें खुसाली लेत ।। परि. 14/17

16 धाराएँ :–पुखराजी ताल के पूर्व में जो देहेलान है, उसमें लंबाई में थंभों की 8 हारों के मध्य 7 देहेलाने हैं। इनमें से 'एक छोड़कर एक' क्रमशः चार देहेलानों में कमर भर गहरी चार नहरें हैं। इन चार नहरों के मध्य तीन देहेलानें हैं। इन नहरों के द्वारा पुखराजी ताल का पानी, अधबीच के कुण्ड के देहेलान (की नहरों) में जाता है, क्योंकि ये दोनों देहेलानें आपस में जुड़ी हुई हैं। इन नहरों के दायें–बायें थंभों के मध्य कठेड़े सुशोभित हैं, जिससे चार नहरों के बीच तीन देहेलानों में सुंदर बैठक बन गयी है। यहाँ पर घूमते हुए दायें–बायें नहरों की शोभा देखिये। अधबीच के कुण्ड की देहेलान के 980 भोम ऊपर, 981 वें भोम से पूर्व दिशा में 1600 कोस का लंबा एक छज्जा निकला है। इसके नीचे की (980 वें)भोम से 1200 कोस का लंबा दूसरा छज्जा निकला है। इसके नीचे की (979 वें) भोम से 800 कोस का लंबा तीसरा छज्जा निकला है। तथा इसके नीचे की (978 वें) भोम से 400 कोस का लंबा चौथा छज्जा निकला है। इन सब छज्जों के उत्तर, पूर्व व दक्षिण दिशा की किनार पर कमर भर ऊँची दीवाल है, जिसमें से पूर्व की चारों दीवालों में 4–4 जालीद्वार हैं, कुल 16 जालीद्वार हैं।

दोऊ गुरज बीच बड़े देहेलान, जित सोले जालीद्वार ।
थंभ झरोखे दोऊ तरफों , ऐ शोभा अति अपार ।। परि.14/12

पुखराजी ताल का पानी चार नहरों से होकर सर्वप्रथम 1600 कोस के छज्जे पर आता है, यहाँ से 4 पाईपों की 3 हारों के द्वारा नीचे के तीनों छज्जों में भी पानी उतरता है। प्रथम 4 पाईपों से 400 कोस के छज्जे में पानी उतरता है, दूसरे 4 पाईपों से 800 कोस के छज्जे में पानी उतरता है तथा तीसरे 4 पाईपों से 1200 कोस के छज्जे में पानी उतरता है। फिर पूर्व दिशा के जालीद्वारों से प्रत्येक छज्जे से 4–4 धाराएँ गिरती हैं। कुल 16 धाराएँ 480 भोम नीचे अधबीच के कुण्ड में गिरती हुईं सुंदर दृश्य उपस्थित कर रही हैं।

गुरज दोऊ के बीच में , गिरत चादरें चार ।
सो चार चार हर एक में , उतरत सोले धार ।। परि. 26/9

खास महल:–अधबीच के कुण्ड की 497 वे भोम में सर्वप्रथम बड़ोवन के वृक्षों की 5 हारें हैं। इनके भीतरी तरफ खास महल शोभित हो रहे हैं, जो नीचे के फीलपायों की मोहलातों के ठीक ऊपर हैं। खास तरह की संरचना होने के कारण इसका नाम खास महल है। इनके भीतरी तरफ बड़ोवन के वृक्षों की पुनः 5 हारें हैं। इन वृक्षों की शोभा, जवेरों के महल के दोनों तरफ के वृक्षों के समान ही है। इन सबके मध्य तीसरे हिस्से में कुण्ड है। पुखराज व मूलकुण्ड के बीच में होने की वजह से इसे अधबीच का कुण्ड कहते हैं। यह कुण्ड कमरभर गहरा है। 784 स्तून (जल के पाईप) इस कुण्ड में डूबे दिख रहे हैं, जो नीचे चबूतरे से चले आ रहे हैं। खास महल की 4 भोम 5 वीं चाँदनी है। इसके दोनों तरफ के बड़ोवन के वृक्ष भी, खास महल

के छज्जों के साथ डालियाँ मिलाते हुए 4 भोम 5 वी चाँदनी तक गये हैं। बीच में कुण्ड खुला है। इन वृक्षों के सभी भोमों की डालियाँ सुंदर छज्जों (झरोखों) के रूप में कुण्ड के चारों तरफ शोभायमान हैं, जिनकी किनार पर कठेड़ा सुशोभित हैं। यहाँ बैठकर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ गिरते हुए 16 धाराओं के सुंदर, मनमोहक दृश्य का आनंद लेते हैं। कुण्ड के पश्चिम दिशा में (8 थंभों की 14 हारें) देहलान है, जो नीचे से चला आ रहा है। खास महल की 5वीं चाँदनी के पूर्व दिशा में बैठकर पश्चिम दिशा में देखने पर यह देहेलान और 500 भोम ऊपर तक जाती दिखाई दे रही है। इस देहेलान के पूर्व के दोनों कोनों (अगिन व ईशान) में 1–1 गोल व चौरस गुर्ज विद्यमान हैं। देहेलानों के प्रत्येक भोम में रंगबिरंगे थंभों, छज्जों व कठेड़ों की सुंदर शोभा दिख रही है, जिनके मध्य बेशुमार बैठकें बनी हैं। यहाँ बैठकर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ 16 धाराओं तथा चारों तरफ के सुंदर दृश्यों का आनंद लेते हैं। इन्हीं देहेलानों के पूर्व में 978 वें भोम से 981 वें भोम तक चार छज्जे निकले हैं, जिनसे 16 धाराएँ 480 भोम ऊपर से अधबीच के कुण्ड में गिरती हुई कर्णप्रिय मधुर गर्जना के साथ सुंदर मनमोहक दृश्य प्रस्तुत कर रही हैं। अधबीच के कुण्ड के चारों तरफ पानी की बारीक बूँदें उड़ते हुए धुंआधार जल प्रपात जैसा नजारा प्रस्तुत कर रही हैं।

इत जल गरजत , देखो श्रवनों दे सुख ।
कै मिहीं बूँदे फुही उछरत , होते चेहेन देखे सुख ।। बड़ी वृत्त 61/8

अधबीच के कुण्ड का पानी 784 स्तूनों (पाईपों) से नीचे उतरता है। फिर थंभों द्वारा तरहटी में पहुँच जाता है। साथ ही तरहटी की पश्चिम दिशा की नहर से खजाने के ताल का पानी भी आ रहा है। जिससे यहाँ से पानी का एक बड़ा पूर पूर्व दिशा में चलता है, जो आगे जाकर यमुनाजी का रूप धारण करता है।

जोए जमुना का जल , पहाड़ से उतरत ।
तले आया कुण्ड में , पहाड़ से निकसत ।। परि. 12/6

नक्शा नं.49 हजार हांस के महलों की छठी चाँदनी

हजार हांस के महलों की छठी चाँदनी (छत) के बाहरी व भीतरी किनार पर भोम भर ऊँची दीवाल है, जो घूमने–फिरने के वास्ते चौड़ी (मोटी) है। इस दीवाल के ऊपर रौंस बन गयी है, जिससे चाँदनी में जगह–जगह भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में रौंस की किनार पर कठेड़ा शोभायमान है। दोनों दीवालों के मध्य चाँदनी में बेशुमार बगीचे, नहरें, चेहेबच्चे शोभायमान हैं। बाहरी तरफ की दीवाल से लगकर 2,000 चौरस गुर्जों तथा 1,000 गोल गुर्जों की चाँदनी है। चौरस गुर्जों पर (चार थंभों के ऊपर) गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका की शोभा है। दो चौरस गुर्जों के मध्य के दरवाजे के ऊपर सुंदर मेहराबें शोभायमान हैं। गोल गुर्जों के ऊपर बैठकें (गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ) हैं। गोल गुर्जों, चौरस गुर्जों व दीवाल के बाहरी किनार पर कमर भर ऊँची दीवाल (कठेड़ा) पर लाल कांगरी की सुंदर शोभा है। इसी प्रकार भीतरी तरफ की चौड़ी दीवाल से लगकर 2,000 चौरस गुर्जों तथा 1,000 अष्ट मेहराबी चबूतरों की चाँदनी है। चौरस गुर्जों पर उसी प्रकार गुम्मटों की शोभा है। अष्ट मेहराबी चबूतरों की चाँदनी पर बैठकें हैं। इन सबके बाहरी किनार पर भी कमर भर ऊँची दीवाल पर कांगरी की शोभा है। इस चौड़ी दीवाल पर बैठकर या घूमते हुए श्रीराजश्यामाजी दूर–दूर के सुंदर दृश्यों का आनंद लेते हैं, बहुत हांस–विलास करते हैं।

नक्शा नं. 50 चारों दिशा के बड़े दरवाजे

हजार हांस के महलों की चारों दिशा के हांस में 300 कोस के चौड़े तथा 5 भोम ऊँचें, चार बड़े दरवाजे शोभायमान हैं। (वैसे तो एक हांस की जगह 400 कोस की थी किंतु 50–50 कोस की जगह दायें–बायें के गुर्जो ने ले ली है) इसके मध्य के 100 कोस में 5 भोम ऊँचा सोने का किवाड़ है, जिसकी स्वर्णिम आभा चारों तरफ झलकार कर रही है। इस किवाड़ के सामने 3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। इसके दायें–बायें 100–100 कोस के लंबे–चौड़े कमर भर ऊँचे दो बड़े चबूतरे विद्यमान हैं, जिनके चारों कोनों में 5 भोम ऊँचे 4–4 थंभ हैं। इसी प्रकार चारों बड़े दरवाजों के बाहरी व भीतरी तरफ, किवाड़ व 2–2 चबूतरे विद्यमान हैं।

बड़े द्वार बड़े चबूतरे , इत सोने के कमाड़ ।

जड़ाव चारों द्वारने , एक जवेर मोहोल पहाड़ ।।   परि. 13/73

इन दरवाजों से अंदर जाने पर दोनों तरफ (दायें–बायें) के बड़े त्रिपोलियों की पाँचों भोमें दिखायी दे रही हैं तथा प्रथम भोम की 4–4 चौरस हवेलियाँ भी दिखायी दे रही हैं। इन दरवाजों की छठी चाँदनी के ऊपर पाँच भोम के और ऊँचें महल हैं। जिससे इन बड़े दरवाजों की कुल ऊँचाई 10 भोम 11 वीं चाँदनी हो गयी है। 11 वीं चाँदनी में बाहरी व भीतरी तरफ चौरस गुर्जो पर 2–2 गुम्मट शोभायमान हैं। चाँदनी की किनार पर चारों तरफ कठेड़ा शोभायमान है।

नक्शा नं. 51 आकाशी महल

पुखराज की चाँदनी के मध्य तीसरे हिस्से में कमर भर ऊँचे चौरस चबूतरे पर अनंत रंगों की जगमगाहट से युक्त आकाश को छूता 1,000 भोम ऊँचा आकाशी महल शोभायमान है। चबूतरे की किनार पर चारों तरफ 1,000 कोस की चौड़ी रौंस है, जिसके भीतरी तरफ 13 (चौरस) हवेलियों की 13 हारें विद्यमान हैं। कुल 169 हवेलियाँ हैं। इनमें से मध्य की हवेली तथा इसके चारों दिशाओं की 6–6 हवेलियाँ (कुल 25 हवेलियाँ) अन्य हवेलियों की अपेक्षा बड़ी हैं।

तामें पचीस हवेली , ताको बड़ो विस्तार ।
तामें छै छै चारों तरफों , एक दरम्यान सुखकार ।। बड़ी वृत्त 53/20

चारों दिशा की 13–13 हवेलियों के सामने चबूतरे से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा शोभायमान है। इन हवेलियों के आगे, चबूतरे के चारों तरफ चाँदनी में रंगबिरंगे खुशबूदार फूलों के बगीचे, नहरें व चेहेबच्चे सुशोभित हो रहे हैं।

हर हवेली आगे बने , चेहेबच्चे फूलबाग बन ।
कै फुहारे उछरत , सो जानत दिल मोमिन ।।   बड़ी वृत्त 53/24

प्रत्येक दो हवेलियों के मध्य में थंभों की दो हारें व तीन गलियाँ हैं। प्रत्येक हवेली के चारों दिशा के मध्य में बड़े दरवाजे एवं दायें–बायें कमर भर ऊँचे चबूतरे हैं। एक दिशा के 13 हवेलियों के 26 चबूतरे बाहरी रौंस पर हैं, जिनकी ऊपर की भोमों में सुंदर झरोखे (छज्जे) बने हैं, जिससे ये चबूतरे चौखुंटे गुर्जों के रूप में ऊपर जाते दिखाई दे रहे हैं। इस प्रकार चारों दिशाओं में कुल 104 चौखूंटे गुर्ज शोभायमान हैं। इसी प्रकार एक दिशा में 12 त्रिपोलियों के सामने बाहरी रौंस पर 12 चौरस गुर्ज हैं। चारों दिशाओं के कुल 48 त्रिपोलियों के गुर्ज हुए। इसी प्रकार चारों कोनों में 5 पहल के चार गोल गुर्ज हैं। इसी प्रकार आकाशी महल के 1,000 भोम शोभायमान हैं।

नक्शा नं. 52,53–मध्य की व दिशा की बड़ी हवेलियाँ

मध्य की बड़ी हवेली:–यह हवेली 3600 कोस की लंबी–चौड़ी है। इसके चारों तरफ सर्वप्रथम दीवाल है, जिसमें चारों दिशाओं के मध्य में 400 कोस का बड़ा दरवाजा है, जिसमें से मध्य में 133 कोस में दरवाजा तथा दायें–बायें (दीवाल के सामने) 133–133 कोस के लंबे–चौड़े कमर भर ऊँचे दो चबूतरे हैं। चबूतरों के ऊपर 8 थंभ व 10 मेहराबें शोभायमान हैं। चबूतरों के पीछे, दीवाल के भीतरी तरफ, ऊपर की भोमों में जाने हेतु सीढ़ियाँ हैं। दरवाजे के दायें–बायें 4–4 महल हैं। प्रत्येक महल 400 कोस के लंबे–चौड़े हैं। कोने का महल दोनों दिशा में गिनाता है। प्रत्येक दो महलों के बीच थंभों की 2 हारें व 3 गलियाँ हैं। इनके भीतरी तरफ थंभों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ बगीचें, नहरें, चेहेबच्चे शोभायमान हैं। इन सबके मध्य में हवेली के तीसरे हिस्से में कमर भर ऊँचा चबूतरा है। इसके चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। चबूतरे की किनार पर पुनः थंभों की एक हार है, जिनकी मेहराबों में सुंदर हिण्डोले लटक रहे हैं। चबूतरे के मध्य में एक पानी का स्तून (पाईप) है, जो तरहटी से (मध्य के पेड़ के अंदर होता हुआ) आया है तथा 1,000 भोम और ऊपर आकाशी महल की चाँदनी तक गया है।

दिशा की बड़ी हवेलियाँ:– अन्य हवेलियों की शोभा भी मध्य की बड़ी हवेली के समान है किंतु लंबाई–चौड़ाई का फर्क है। मध्य की हवेली के चारों दिशा में जो 6–6 हवेलियाँ (कुल 24 हवेलियाँ) हैं, वें

3600 कोस की लंबी (मध्य की बड़ी हवेली के तरफ) तथा 2800 कोस की चौड़ी (दायें–बायें की छोटी हवेलियों की तरफ) हैं। जिससे लंबाई में तो दरवाजे के दायें–बायें 4–4 महल हैं किंतु चौड़ाई में दरवाजे के दायें–बायें 3–3 महल हैं। अंदर की बाकी शोभा समान है। किंतु पानी के स्तून नहीं हैं। अन्य छोटी हवेलियाँ 2800 कोस की लंबी–चौड़ी हैं। जिनमें चारों दिशा में दरवाजे के दायें–बायें 3–3 महल हैं।

एक महल की शोभाः–एक महल में सर्वप्रथम चारों तरफ घेरकर मंदिरों की एक हार है, जिसमें चारों दिशा के मध्य में बड़े दरवाजे तथा इसके दायें–बायें चबूतरे हैं। इनके भीतरी तरफ थंभों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ बेशुमार बगीचें, नहरें, चेहेबच्चे शोभायमान हैं। इन सबके मध्य तीसरे हिस्से में कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके किनार पर पुनः थंभों एक हार है, जिनकी मेहराबों में सुंदर हिण्डोले हैं। इस प्रकार आकाशी महल के हवेलियों व महलों के अंदर बगीचों, नहरों, चेहेबच्चों, फल–फूल के वृक्षों, हिण्डोलों की अद्‌भुत शोभा है।

कई अंदर नहरें फिरें , माहें हवेलियों चेहेबच्चे ।
खुसबोए फूल मेवे कई , माहें बैठक कई बगीचे ।। परि. 13/61

नक्शा नं. 54 आकाशी महल की चाँदनी

आकाशी महल की हजार भोम ऊपर चाँदनी में मध्य के तीसरे हिस्से में कमर भर ऊँचा चौरस चबूतरा है, जिसके चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा शोभायमान है। चबूतरे पर सुंदर पशमी गिलम बिछी हुई है, जिसके ऊपर सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। चबूतरे के चारों ओर, चाँदनी की किनार तक बेशुमार फल, फूल, घास के बगीचे, नहरें, चेहेबच्चे व फव्वारे शोभायमान हैं। जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ 2,000 भोम ऊपर चाँदनी के इस चबूतरे पर विराजमान होते हैं तो सारा आकाश जगमगा उठता है। ऐसा लगता है, मानो आकाश में आ गये हों।

मध्य मिने बड़ा चबूतरा , दरम्यान सिंहासन ।
हक हादी रूहें बैठत , होत आसमान रोशन ।। **बड़ी वृत्त 54/9**

चाँदनी की किनार पर चारों तरफ भोम भर ऊँची दीवाल है, जो घूमने–फिरने के लिए चौड़ी (मोटी)है। इस दीवाल के ऊपर रौंस बन गयी है, जिससे चाँदनी में जगह–जगह भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में रौंस की किनार पर कठेड़ा सुशोभित है। इस दीवाल से लगकर चारों दिशा में 104 चौखूंटे गुर्जों, 48 त्रिपोलियों के गुर्जों, तथा 4 गोल गुर्जों की चाँदनी आयी है। 104 चौखूंटे गुर्जों पर (चार थंभ पर) गुम्मट, कलश, ध्वजा आदि शोभायमान हैं। त्रिपोलियों के गुर्ज व गोल गुर्जो की चाँदनी पर बैठकें बनी हैं। समस्त गुर्जों तथा दीवाल की बाहरी किनार पर लाल कांगरी तथा कंगूरों की शोभा है, जो बिजली के बल्बों से भी कोट गुना ज्यादा जगमगा रही हैं। जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ यहाँ आते हैं, तो 8 लाख कोस ऊपर इस चाँदनी में चारों तरफ घूमते हुए सुंदर दृश्यों का आनंद लेते हैं।

कई कलश कई कंगूरे , आसमान में रोशन ।
खूबी हक के अर्स की , क्यों कहूँ जुबां इन ।। **परि. 13/76**

पुखराज की तरहटी से आ रहा स्तून (पानी का पाईप) मध्य के चबूतरे के नीचे खुला है तथा गुप्त रूप से चबूतरे के चारों कोनों से निकलकर चाँदनी के सब बगीचों में पानी पहुँचाकर, पुखराज की चाँदनी के सब बगीचों में पानी पहुँचाकर, पूर्व दिशा के बड़े दरवाजे व छज्जे के नीचे होकर पुखराजी ताल की तरफ जाता है।

नक्शा नं. 55 घाटी की तरहटी, महल एवं सीढ़ियाँ

पुखराज के गोल चबूतरे की पश्चिम दिशा में एक हांस से लगकर, एक हांस का लंबा–चौड़ा कुण्ड है, जो तीन भोम गहरा है। इस कुण्ड के चारों तरफ जल रौंस व पाल हैं। इस कुण्ड के पश्चिम दिशा में 400 कोस (एक हांस) चौड़ा तथा 4 लाख कोस लंबा, भोम भर ऊँचा घाटी का चबूतरा है, जिसकी दोनों किनार पर हांस–हांस (400 कोस) की दूरी पर गोल गुर्ज (चाँदे) हैं, जिनके दायें–बायें से सीढ़ियाँ उसी प्रकार

उतरी हैं। प्रत्येक दो गुर्जों के मध्य चबूतरें की दीवाल पर दरवाजे हैं, जिनके सामने तरहटी में जाने हेतु सीढ़ियाँ उतरी हैं। 400 कोस की चौड़ी तरहटी में मध्य में 200 कोस की चौड़ी नहर है, जिसके दायें–बायें 50–50 कोस में जल रौंस व पाल हैं।

घाटी के चबूतरे की पश्चिम दिशा में (रंगमहल के समान) भोम भर की सीढ़ियाँ हैं। सीढ़ियों के आगे (ऊपर) चौक है, जिसके दायें–बायें दो चौरस चबूतरे हैं, जिन पर 8 थंभ व 10 मेहराबें हैं। इन के ऊपर दो सुंदर गुम्मट शोभायमान हो रहे हैं। इनके आगे घाटी के 400 कोस चौड़े चबूतरे पर मध्य के 100 कोस में सीढ़ियाँ चढ़ी हैं तथा दायें–बायें 110–110 कोस में महल हैं, जो 10 मंदिर के लंबे–चौड़े हैं। प्रत्येक मंदिर 11 कोस के हैं। महलों के बाहरी तरफ 40–40 कोस की रौंस है। प्रथम हांस (400 कोस) में सीढ़ियाँ एक भोम चढ़ी हैं एवं दायें–बायें के महल भी एक भोम ऊँचें हैं। दूसरे हांस में सीढ़ियाँ दो भोम चढ़ गयी हैं एवं दायें–बायें के महल भी दो भोम ऊँचें हैं। इसी प्रकार प्रत्येक हांस (400 कोस) में एक–एक भोम सीढ़ियाँ चढ़ती गयी है तथा दायें–बायें महल भी 1–1 भोम ऊँचें होते गये हैं। दूसरे हांस से सीढ़ियों के नीचे भी महल बनते गये हैं। सीढ़ियों के दायें–बायें, महलों की छत पर, प्रत्येक हांस में 6–6 गुम्मट शोभायमान हैं। इस प्रकार हजार हांस (4 लाख कोस) में सीढ़ियों के दायें–बायें इन महलों की छत पर 6–6 हजार गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताका सुशोभित हो रहे हैं, जिनकी रंगबिरंगी तेजोमयी किरणें चारों तरफ झलकार कर रही है। ये सीढ़ियाँ पुखराज पहाड़ की चाँदनी के पश्चिम के बड़े दरवाजे के सामने लगी हैं।

चरनी दोए बड़ी कही , जो बड़े गुरज दरम्यान ।
आइयां जिमी से ऊपर लग, क्या करसी जुबां बयान ।। परि. 13/50

घाटी के चबूतरे पर पश्चिमी किनार से पूर्व की तरफ 890 हांस तक इसी प्रकार महल हैं। आगे पुखराज के गोल चबूतरे तक 110 हांस (44,000 कोस) में चबूतरे पर महल नहीं हैं। 890 वे हांस के महलों (जो कि 890 भोम ऊँचें हैं) की सातवीं भोम से पूर्व तरफ 44 कोस का छज्जा निकला है, जिसके ऊपर 1–1 मंदिर की दूरी पर थंभ हैं। इन थंभों की छत (8 वीं भोम) से पुनः 44 कोस का छज्जा निकला है। इस प्रकार 250 भोम तक प्रत्येक भोमों में 44–44 कोस के छज्जे बढ़ते गये हैं। पुखराज के समान ही आगे–आगे थंभ पीछे–पीछे महल बनते गये हैं। 250 भोम के बाद एक लम्बे छज्जे के द्वारा पुखराज के पश्चिम के पेड़ के 251 वें छज्जे से मिलान हुआ है। इस छज्जे के ऊपर भी महल व सीढ़ियाँ पूर्व वर्णनानुसार विद्यमान हैं। पश्चिम की घाटी के समान ही उत्तर की घाटी की भी शोभा है।

नक्शा नं. 56 बंगले और चेहेबच्चे

बंगले के चबूतरे के मध्य तीसरे हिस्से में आड़ी–खड़ी नहरों के मध्य 48 बंगलों की 48 हारें तथा 48 चेहेबच्चों की 48 हारें क्रमशः शोभायमान हैं। प्रत्येक बंगलों तथा चेहेबच्चों के चारों दिशा में नहरें एवं चारों कोनों में (छोटे) चेहेबच्चे हैं। इन चेहेबच्चों में 5–5 फव्वारें हैं। ये नहरें 125 मंदिर की चौड़ी हैं, जिसमें से मध्य में 25 मंदिर की चौड़ाई में पानी है तथा दायें–बायें 50–50 मंदिर में पाल है। दोनों पाल के 3–3 भाग हैं, मध्य के एक भाग में महल हैं, जिन पर गुम्मट, कलश आदि शोभायमान हैं। दायें–बायें के भाग के पुनः 3–3 भाग हुए। मध्य के भाग में फुलवाड़ी तथा दायें–बायें के भाग में रौंसें हैं। इस प्रकार नहरों व चेहेबच्चों की बेमिसाल शोभा है।

कब सुख लेसी बंगलों , जित नेहरें चलें चक्राव ।
बीच बीच बगीचे चेहेबच्चे , कई जल उतरे तले तलाव ।। परि. 26/11

ये बंगले और चेहेबच्चे, बड़ोवन तथा फीलपायों की छत के नीचे आये हैं। इसी छत के ऊपर पुखराजी ताल स्थित है।

एक चेहेबच्चाः–चार नहरों के मध्य 1600 मंदिर की लंबी–चौड़ी जगह है। इसके मध्य में 800 मंदिर की लंबी–चौड़ी जगह में चेहेबच्चा है, जिसमें से चारों तरफ 100 मंदिर की चौड़ी, भोम भर ऊँची पाल है एवं मध्य में 600 मंदिर का लंबा–चौड़ा चेहेबच्चा (ताल) है। पाल से चेहेबच्चा के कमर भर गहरे जल चबूतरा पर चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा शोभायमान है। पाल से बाहर की तरफ, चारों दिशा के मध्य से भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में पाल की किनार पर सुंदर

कठेड़ा है। पाल पर सुंदर सिंहासन एवं कुर्सियाँ रखी हैं, जिन पर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ बैठकर हांस–विनोद करते हैं। इस चेहेबच्चा के चारों तरफ 400 मंदिर के लं.–चौ. 12 बगीचे हैं, जिनमें बेशुमार नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारे चल रहे हैं। इन बगीचों के वृक्षों की ऊँचाई 30 भोम है, जो बंगले की 6 भोम (5 भोम ऊँचा बंगला व 1 भोम ऊँचा चबूतरा) के बराबर है।

नक्शा नं. 57 एक बंगला

चार नहरों के मध्य 1600 मंदिर का लंबा–चौड़ा चौक है, जिसके मध्य में 800 मंदिर का लंबा–चौड़ा भोम भर ऊँचा चबूतरा है। इसके चारों दिशा के मध्य से भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर सुंदर कठेड़ा है। चबूतरे की किनार पर चारों तरफ थंभों की एक हार है। ये थंभ 5–5 मंदिर की दूरी पर आये हैं। इनके भीतरी तरफ 100 मंदिर की चौड़ी जगह छोड़कर मंदिरों की एक हार है, जिसमें प्रत्येक दिशा में मध्य में मुख्य दरवाजे तथा दायें–बायें 300–300 मंदिर हैं। कुल 2400 मंदिर एवं 4 मुख्य दरवाजे हैं। इन मंदिरों की 5 भोमों के बराबर थंभों की एक ही भोम है। बहुत चौड़ी व ऊँची जगह होने से इसे दरबार कहा जाता है। यहाँ गिलम, सिंहासन व कुर्सियों की सुंदर शोभा है, जिनमें बैठकर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ चारों तरफ के सुंदर दृश्यों व शीतल सुगंधित हवा का आनंद लेते हैं।

चबूतरे के चारों तरफों , कठेड़ा गृद शोभाय ।
बैठक बिछौने तापर , ए शोभा सुखदाय ।। बड़ी वृत्त 65/10

इन मंदिरों के भीतरी तरफ थंभों की एक हार है, जिनकी भोमें मंदिरों की भोमों से मिलते हुए आयी हैं। इन थंभों के भीतरी तरफ एक कमर भर ऊँचा चौरस चबूतरा है, जिसके चारों दिशा के मध्य में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। चबूतरे की किनार पर पुनः थंभों की एक हार है। ये थंभ 5–5 मंदिर की दूरी पर हैं, जो मंदिरों के 5 भोम के बराबर ऊँचे हैं। इन थंभों तथा बाहर के थंभों को बंगला कहते हैं। मंदिरों व मंदिरों के भीतर के थंभों को बंगले का मंदिर कहते हैं। बंगले की 5 भोमें हैं, जिनमें मंदिरों की 25 भोमें हैं। चबूतरे के ऊपर छत सीधे बंगले की छठी चाँदनी पर है, जिससे मंदिरों की प्रत्येक भोमों से चबूतरे पर विराजमान युगल स्वरूप का दर्शन कर सकते हैं। चबूतरे पर अनेक रंगों व नंगों की चित्रकारी से युक्त सुंदर पशमी गिलम बिछी है, जिस पर सिंहासन व कुर्सियों की अपरंपार शोभा है। इन बंगलों के मंदिरों में भी हर प्रकार की सुख सामग्री, सेज्या, सिंहासन, हिण्डोले आदि विद्यमान हैं। जगह–जगह सोने की सीढ़ियाँ ऊपर की भोमों में चढ़ने हेतु हैं।

बिराजे बंगले , ऐ जो मोहल तले ताल ।
बारे हजार बड़ी रूह ले , हक सों खेलत माहें हाल ।। परि. 14/19

बंगले की 800 मंदिर की लंबी–चौड़ी छठी चाँदनी के मध्य 600 मंदिर का लं–चौ. कमरभर ऊँचा चबूतरा है, जिसके चारों कोनों में चार थंभ हैं। इनके ऊपर गुम्मट, कलश सुशोभित हो रहे हैं। बंगले के चारों कोनों के चेहेबच्चों के फव्वारे उछलकर, इस कलश की नोंक को छूकर एक–दूसरे में गिर रहे हैं। एक बंगलें के चारों तरफ 400 मंदिर के लंबे–चौड़े 12 बगीचे हैं। जिनमें बेशुमार नहरें, चेहेबच्चें, फव्वारें चल रहे हैं। इनमें अनेक प्रकार के फल–फूल, मेवों के रंगबिरंगे वृक्ष 1–1 मंदिर की दूरी पर कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं। इन वृक्षों की 30 भोमें हैं, जिनमें से नीचे की पाँच भोमें चबूतरे के बराबर हैं तथा ऊपर के 25 भोमों की डालियाँ, मंदिरों की 25 भोमों से मिली हुई हैं। फूल, फल, पत्तों के ही सुंदर मेहराबें व छत बने हैं। इन वनों में अनेकों जाति व रंगों के बेशुमार पशु–पक्षी रहते हैं। इन्हें देखने पर ऐसा लगता है जैसे जवेरों के ही पशु–पक्षी हों, जैसे इनके शरीर में अनेक रंगों व नंगों से चित्रकारी की गयी हो। इनके शरीर सुगंधि से भरपूर व अत्यंत कोमल हैं। सुंदर वस्त्राभूषणों से सजकर ये पशु–पक्षी अनेक प्रकार की मधुर वाणी निकालकर, नाच–गाकर, खेल–करतब दिखा कर धनी व सखियों को रिझाते हैं, आनंद में विभोर कर देते हैं। इसलिए इन्हें 'खूब–खुशालियाँ' भी कहते हैं।

कई रेहेत अंदर जानवर , कई विध बोलें बान ।
ए खुबी खुशाली हक की , जुदी–जुदी कई जुबान।। परि. 14/50
रूहों दिल चाहे बोलत , दिल चाही सोभा सुंदर।

दिल चाहे पेहरें भूखन , दिल चाहे वस्तर ।। परि. 14/75

ये सभी पशु–पक्षी रूहों (सखियों) के मन के ही स्वरूप हैं। अतः रूहों के मन में जो भी इच्छा होती है, बिगर कहे समझ जाते हैं और एक क्षण में मन की गति से वह चाहना (कार्य) पूर्ण कर आते हैं। सखियाँ मुख से एक शब्द भी कह नहीं पाती हैं, इतने में 'जी–जी' करते हुए हजारों खूब खुसालियाँ दौड़ पड़ते हैं।

स्वरूप रूहों के मन के , जो कछुए मन चाहे।
ऊपर तले माहें बाहेर , एक पल में काम कर आएँ ।। परि. 14/65

हे राज जी महाराज, इन बंगलों, चेहेबच्चों, वनों, पशु–पक्षियों, खूब–खुशालियों के बेशुमार सुख हमें कब दिखाओगे ।

नक्शा नं. 58 पुखराज पहाड़ का खड़ा दृश्य

एक पुखराज के नंग के अंदर अनेक रंगों की तेजोमयी झलकार से युक्त, आकाश को छूता 8 लाख कोस ऊँचा पुखराज पहाड़ पाँच पेड़ पर खड़ा है। जो नीचे सकड़ा (कम चौड़ा) है, भोम के साथ चौड़ाई भी बढ़ती गयी है। तले से ऊपर तक चौगिरद (चारों तरफ घेरकर) थंभों, देहेलानों की अद्भुत शोभा है, जिनमें सुंदर बैठकें बनी हैं।

सुख क्यों कहूँ पहाड़ पुखराज के, और कहा कहूँ मोहोल तले।
ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते , मोहोल तीसरे तिन उपले ।। परि. 26/1 पुखराज की हजार भोम ऊपर चाँदनी की किनार पर 5 भोम ऊँचें हजार हांस के महल हैं, जिनका प्रत्येक हांस अलग–अलग रंगों की झलकार से युक्त है। इनकी चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे हैं। चाँदनी के मध्य में अनेक रंगों की झलकार से युक्त आकाश को छूता हुआ 4 लाख कोस ऊँचा आकाशी महल शोभायमान है।

पुखराज की चाँदनी पर जाने के लिए उत्तर व पश्चिम दिशा में दो विशाल सीढ़ियाँ (घाटी) हैं। जिनके दोनों तरफ 6–6 हजार गुम्मटों, कलशों, ध्वजा, पताकाओं की जगमगाती शोभा दिखाई दे रही है। पुखराज पहाड़ के पूर्व दिशा में 980 भोम गहरा पुखराजी ताल है, जो बंगलों की छठी चाँदनी से प्रारंभ हुआ है। इस पुखराजी ताल में 20 भोम ऊपर से पानी की 4 धाराएँ गिरते हुए सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रही हैं। पुखराजी ताल के पूर्व में 496 भोम ऊँचा अधबीच का कुण्ड है, जिस पर 480 भोम ऊपर से 16 धाराएँ गिरती हुई, कर्णप्रिय गर्जना के साथ शोभायमान हो रही हैं। अधबीच के कुण्ड के पूर्व में 1 भोम ऊँचा ढ़पों चबूतरा है, जिसके पूर्व में 1 भोम ऊँचा मूल कुण्ड है।

नक्शा नं. 59 श्री यमुना जी, सात घाट, केल व बट का पुल

केल का पुल:– 500 मंदिर की चौड़ी यमुनाजी के ऊपर 500 मंदिर का लंबा–चौड़ा, 5 भोम ऊँचा केल पुल शोभायमान है। सर्वप्रथम जल की जमीन पर 11 थंभों की 11 हारें हैं। लंबाई में थंभों की 11 हारों के मध्य 10 घड़नाले हैं, जिनमें से दूध से भी उज्जवल श्रीयमुनाजी का निर्मल जल 10 धाराओं (नहरों) के रूप में निकल रहा है। इन थंभों की छत पर पुनः 11 थंभों की 11 हारें हैं। इसके उत्तर व दक्षिण दिशा की किनार पर (यमुनाजी की तरफ) थंभों के मध्य कठेड़ा शोभायमान है। इन थंभों की आड़ी (10 मेहराबों की 11 हारें)–खड़ी (10 मेहराबों की 11 हारें) कुल 220 मेहराबों में 220 हिंडोलें हैं। इसी प्रकार पाँचों भोमों की शोभा है। पाँचों भोमों के कुल मिलाकर 1100 हिण्डोले हैं। दूजी भोम से 5 वीं भोम तक चारों तरफ 50 मंदिर का चौड़ा छज्जा निकला है, जिसके किनार पर चारों तरफ थंभों की एक हार और है। इन थंभों के मध्य में चारों तरफ कठेड़ा शोभायमान है। इन थंभों की मेहराबों में हिंडोले नहीं हैं। यहाँ पर आकर सखियाँ श्रीयमुनाजी की शोभा निहारती हैं। छठी चाँदनी की किनार पर चारों तरफ सुंदर कठेड़ा है। मध्य में सुंदर

दुलीचे पर सिंहासन, कुर्सियाँ रखीं हैं। इस प्रकार एक सुंदर महल के रूप में यह केल पुल सुशोभित है, इसलिए इसे पुल महल भी कहा जाता है।

सातों घाट बीच में , पुल मोहोल तरफ दोए।
दोऊँ पाँच भोम छठी चाँदनी, क्यों कहूँ शोभा सोए।। परि. 7/1

पुल के दो तरफ वनों की शोभा है तथा दो तरफ यमुनाजी की शोभा है जिससे पुल के पाँचों भोमों में शीतल सुगंधित हवा बह रही है। श्री यमुनाजी पर पुलमहल के रंगबिरंगे प्रतिबिंब झलक रहे हैं। जल की तरंगों के हिलने के साथ, प्रतिबिंब से निकलने वाली किरणें भी लहरा रहीं हैं।

इत जल वाए के चलत जो पुर, सो मैं क्या कहूँ ताको नूर।
जल के जो उठत तरंग, ताकी किरना देखावे कई रंग।। परि.3/18

बट पुल की शोभा भी केलपुल के ही समान है। जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ यहाँ आते हैं तो पाँचों भोमों के हिंडोलों में झूलने का आनंद लेते हैं। सारे हिंडोले एक साथ आगे पीछे होते हैं। चार हिंडोले एक साथ आते हैं और चार सखियाँ ताली बजाती हैं। फिर चारों हिण्डोले घूमकर दूसरी दिशा में मुड़ जाते हैं तथा दूसरे चौक में फिर चार सखियाँ ताली बजाती हैं। इस प्रकार प्रत्येक चौक में क्रमशः 4–4 हिंडोलों की ताली पड़ती है। झूलते समय हिंडालों के कड़े–जंजीरों, सखियों के वस्त्राभूषणों तथा हंसी की आवाज से पुलमहल गूँज उठता है।

झूलत भांत लेहेरा लेत हैं , सुख की होत झकोर।
क्यूँ कहूँ सुख हिण्डोलन के, जो रूहें लेत ठौर ठौर।। बड़ी वृत्त 83/23

इसके पश्चात् चाँदनी में जाकर चारों तरफ के सुंदर दृश्य निहारते हुए हांस विनोद करते हैं। सिंहासन कुर्सियों में बैठकर प्रेममयी बातें करते हैं। 6 घड़ी खेल व हांस विनोद करने के बाद झीलना करने हेतु श्रीयमुनाजी के जल में प्रवेश करते हैं। कुछ सखियाँ श्रीराजश्यामाजी से बातें करते हुए साथ चलती हैं, कुछ सखियाँ पुल से ही यमुनाजी में कूदने लगती हैं। कोई सखी तैरते हुए पुल के नीचे चली जाती है, सामने से आती हुई दूसरी सखी मिलती है, फिर एक दूसरे का हाथ पकड़कर पुल के नीचे ही कई प्रकार से खेलने लगती हैं।

तले पुल के आवत , जुदी जुदी नहरों में दोय।
एक पकड़े हाथ दूजी का, रमें राह बीच रेहेत सोय।। बड़ी वृत्त 83/3

यमूनाजी के निर्मल जल में एक–एक वस्तु स्पष्ट दिख रही है। इस प्रकार एक घड़ी में झीलना करके एक घड़ी में मनचाहा श्रृंगार करते हैं, फिर सुखपालों में बैठकर रंगमहल की तरफ प्रस्थान करते हैं।

<u>सात घाटः</u>– दोनों पुलों के बीच, यमुनाजी के दोनों तरफ सात घाट शोभायमान हैं। केलपुल की तरफ से क्रमशः केल, लिबोई, अनार, अमृत, जांबू, नारंगी व बट के घाट हैं। यमुनाजी के दोनों तरफ सर्वप्रथम 250 मंदिर की चौड़ी जल रौंस है, जो अनेक प्रकार के रत्नों से जड़ित है। श्री यमुनाजी का जलस्तर जल रौंस के बराबर है। दोनों तरफ के जल रौंस से भीतरी तरफ, यमुनाजी के कमर भर गहरे जल चबूतरे पर जगह–जगह 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। दोनों जल चबूतरों की चौड़ाई 125–125 मंदिर की है। मध्य में 250 मंदिर की चौड़ाई में यमुनाजी भोम भर गहरी है। श्रीयमुनाजी का जल दूध से भी उज्जवल रंग का, स्वाद में मिश्री से भी मीठा, सुगंधि से भरपूर, अत्यंत निर्मल है।

सक नहीं जल उजले , मीठा ज्यों मिश्री ।
सक ना गिरदवाए बाग की, कई मोहोल जवेर जरी।। खि. 7/32

जल रौंस के बाहरी तरफ 250 मंदिर चौड़ी, कमर भर ऊँची पाल है। पाल के आगे 250 मंदिर की चौड़ी वन की रौंस है। पाल से जल रौंस व वन की रौंस पर जगह–जगह 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। वन की रौंस के आगे 500 मंदिर की चौड़ी पुखराजी रौंस है। वन की रौंस व पुखराजी रौंस की समान ऊँचाई है। पुखराजी रौंस के दोनों किनार पर बड़ोवन के वृक्षों की दो हारें हैं, जिनकी दो भोम तीसरी चाँदनी है। इसके आगे सात वन विराजमान हैं। श्री यमुनाजी के पाल पर, सातो वनों के सामने बड़ोवन के वृक्षों की पाँच हारें हैं। ये वृक्ष जिस वन के सामने हैं, उसी वन का रूप ले लिये हैं। बड़ोवन के वृक्षों की 5 भोम छठी चाँदनी है। प्रत्येक भोम में वृक्षों की सुंदर मेहराबों (डालियों) में हिण्डोलें शोभायमान हैं। इनकी प्रत्येक भोमों की रंगबिरंगी डालियाँ (फूल, फल, पत्ते) यमुनाजी के जल चबूतरे तक छायी हैं, जो अनेक रंगों की

चित्रकारी व कंचन में जड़े नंगों से युक्त चंद्रवा के समान दिख रहीं हैं। इनके जल पर पड़ते रंगबिरंगे प्रतिबिंब झलकार कर रहे हैं। इन वृक्षों के फल व फूल वातावरण को सुगंधित बना रहे हैं। इन वृक्षों के नीचे चौक (पाल) में नूरमयी रेती बिछी हुई है।

कहूँ फूल कहूँ फल बने , कहूँ पात रहे अति बन।
जुदी जुदी जुगतों मंडप, जानों बहु रंग मनी कंचन।। परि. 6/18

सातो घाटों की संधि में, जल रौंस पर, छः छूटक देहुरियाँ शोभायमान हैं, जिनकी बनावट रंगमहल की चौरस हवेलियों के समान ही है। किंतु इनके छत पर गुम्मट की शोभा होने से इन्हें देहुरी कहा गया है।

छुटक छुटक देहुरी , सातों घाटो माहें।
दोऊ किनारे जड़ाव ज्यों , क्यों कहूँ शोभा जुबाएँ।। परि. 12/19

केल घाट के वृक्षों की डालियाँ केल पुल से मिली हुयी हैं व बट घाट के वृक्ष की डालियाँ बट पुल से मिली हुयी हैं, जिससे दोनों पुलों व दोनों तरफ के सातों घाटों के मध्य, यमुनाजी एक तालाब के सामान दिखाई दे रही हैं। पाल के बड़ोवन के दो भोमों की डालियाँ पुखराजी रौंस के बड़ोवन के वृक्षों से मिली हुई हैं। इनकी भी डालियाँ सातों वनों के वृक्षों से मिली हैं। सातों वनों में से मध्य के तीन वनों (अनार, अमृत, जांबू) की डालियाँ रंगमहल के दो भोमों के झरोखों से मिली हुयी हैं। जिससे सखियाँ रंगमहल के झरोखों से निकलकर सातों घाटों, दोनों पुलों तक दौड़ते हुए चली जाती हैं और यमुनाजी की परिक्रमा लगा आती हैं।

उतर झरोखों से जाईये , दूजी भोम बन माहें ।
बन सोभे पशु पंखियों , कई हक जस गावें जुबाएँ ।। परि. 34/11
चल जाईये सातों घाट लग, खूबी देख होईये खुशाल।
कई विध हक जिकर करें , पशु पंखी अपने हाल ।। परि. 34/12

इस प्रकार यमुनाजी के दोनों तरफ वनों व देहुरियों की अपरंपार शोभा है। इन वनों में भी अनेकों जाति व रंगो के बेशुमार पशु–पक्षी, घूमते–फिरते, इश्क की मस्ती में डूबे पिया के गुणगान करते नजर आते हैं, जिससे इन वनों की शोभा और बढ़ जाती है।

शोभा लेत जिमी जंगल , माहे टोले कई खेलत।
ए खूब खिलौने हक के, ए बुजरक इन निसबत।। परि. 32/36

पाट घाटः– सातों घाटों के मध्य में, अमृत वन के सामने श्रीयमुनाजी के ऊपर 150 मंदिर का लं.–चौ. पाट घाट शोभायमान है। अक्षरधाम के तरफ भी इसी प्रकार पाट घाट है। दोनों पाट के घाटों के बीच में 200 मंदिर की जगह है। एक पाटघाट में सर्वप्रथम जल की जमीन में 4 थंभों की 4 हारें (16 थंभ) नीलवी की आयी हैं, जिन पर जल रौंस के बराबर छत (पाट) है। इस छत के ऊपर, किनार पर 12 थंभ हैं। जिनमें से चारों कोनों के थंभ नीलवी के हैं, पश्चिम दिशा के दो थंभ पाच के हैं, उत्तर दिशा के दो थंभ पुखराज के हैं, पूर्व दिशा के दो थंभ माणिक के हैं तथा दक्षिण दिशा के दो थंभ हीरे के हैं। पाट के तीन दिशा में थंभों के मध्य कठेड़ा शोभायमान है, चौथी तरफ जल रौंस है। पाट पर सुंदर पशमी गिलम बिछी है। पाट के 12 थंभों की चाँदनी (छत) पर, मध्य में चार थंभों के ऊपर सुंदर गुम्मट, कलश आदि सुशोभित हो रहे हैं। चाँदनी की किनार पर सुंदर कठेड़ा है। पाट घाट के रंगबिरंगे थंभों, कठेड़ों आदि के सुंदर प्रतिबिंब श्रीयमुनाजी के निर्मल जल में झलक रहे हैं, जिनकी किरणें जल से निकलकर आकाश तक जाती दिखाई दे रही हैं। जल के लहराने के साथ किरणें भी ऊपर–नीचे होती दिखाई दे रही हैं। ऐसा लग रहा है कि जल के अंदर एक और पाट घाट बन गया है। संध्या के समय जब पाट घाट पर श्रीराज श्यामाजी व सखियाँ विराजमान होते हैं, तो उस समय की शोभा कुछ और ही होती है।

सोभा बन संझा समे , फल फूल खुसबोए ।
साथ बैठा पाट ऊपर , बीच सुंदर स्वरूप दोए ।। परि. 5/21

श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ जब सात घाट में पधारते हैं, तब वनों में अनेक प्रकार से हांस विनोद करते हैं। कहीं कोई सखी श्रीराजश्यामाजी के साथ घूम रही है, कहीं कोई सखी श्रीराजजी से हँसते हुए बातें कर रही है। कहीं कुछ सखियाँ आपस में मिलकर खेल रामतें कर रहीं हैं। कहीं कोई सखी वनों में डाली पकड़कर, कूद कर चढ़ जाती है और डालियों व पत्तों के छत पर होकर चारों तरफ घूमती है। कहीं कोई

सखी शर्त लगाकर खेल कर रही है, कहीं सखियाँ बड़ोवन के पाँचों भोमों में हिंडोलों में झूल रहीं हैं। खेलते समय श्रीराजश्यामाजी व सखियों के सुंदर वस्त्राभूषणों की नूरमयी किरणें चारों ओर झिलमिल प्रकाश कर रही हैं।

सरूप फिरते वन में , रूहों संग हादी हक ।
वस्तर भूखन झलकत , सब भरे अंग इस्क ।। बड़ी वृत्त 80/26

कहीं कुछ सखियाँ पशु पक्षियों के साथ खेलने में लगी हैं। सुंदर पशु पक्षी अनेक प्रकार से खेल तमाशे दिखाकर, मधुर वाणी निकालकर सखियों को हँसा रहे हैं। इस प्रकार छः घड़ी तक अनेक प्रकार से हांस–विलास, खेल–रामतें करने के बाद श्रीराजश्यामाजी झीलना के लिए जल रौंस से 3 सीढ़ी उतरकर कमरभर गहरे जल चबूतरे पर आते हैं। इस समय कुछ सखियाँ श्रीराजश्यामाजी के साथ हैं, कुछ सखियाँ वनों के ऊपर के भोमों से यमुनाजी में छलांग लगा रहीं हैं। कोई सखी कूदने के लिए दूसरी सखी को जोर से आवाज देकर बुला रही है। कहीं दो सखियाँ होड़ लगाकर दौड़ते हुए जल में कूद रहीं हैं। कहीं दो सखियाँ हाथ से हाथ जोड़कर एक साथ जल में कूद रहीं हैं। देखो उनका कूदना, गिरने के बाद भी वे अलग नहीं हुईं, तब श्रीराजश्यामाजी इनकी तारीफ करते हैं। कभी जल में खेलती हुई कोई सखी श्रीराजजी को भी बुलाने लगती है, राजजी सुनकर हँसने लगते हैं।

ठेकत हैं कई जल में , और कूद चढ़ें कई डार ।
खेल करें कई भांत सों , सब अंगों चंचल होसियार ।। परि. 6/47

इस समय कुछ सखियाँ जल में खेलने में मग्न हैं, तो कोई सखी श्रीराजजी का सुंदर स्वरूप, मुखारविंद, नैन आदि निहारने में खोई हुई है। इतने में क्या देखते हैं कि कुछ सखियाँ एक दूसरे पर पानी के छींटें डालते हुए हंसी कर रही हैं। इतने में देखते ही देखते श्रीराजश्यामाजी भी इस जलक्रीड़ा में शामिल हो जाते हैं, कुछ सखियाँ राजजी के तरफ हो गयीं, कुछ श्यामाजी के तरफ हो गयीं। पानी ऐसा छिड़कती हैं कि जैसे मूसलाधार बारिश हो रही हो। जैसे ही राजजी ने जल छिड़कना शुरू किया, सब हारकर भागने लगीं। इस प्रकार एक घड़ी तक जल–क्रीड़ा का आनंद लेने के बाद छूटक देहुरी में मनचाहा श्रृंगार सजती हैं।

कहाँ गये सुख जोए के , जमुना जरी किनार ।
कहाँ सुख जल कहाँ झीलना, कहाँ नित नये सिनगार।। परि. 21/20
झीलन स्यामा संग राज सों , साथे किए जल केलि ।
इन समें के विलास की , क्यों कहूँ रंग रेलि ।। परि. 5/18

नक्शा नं. 60 बट का घाट

नारंगी घाट की दक्षिण दिशा में बट घाट की जगह में, पाल पर बड़ोवन के वृक्षों की 5 हारें नहीं हैं, यहाँ पाल की (500 मंदिर लं. व 250 मंदिर चौ.) व वन की रौंस (500 मं. लं. व 250 मं. चौ.) की जगह में 500 मंदिर का लंबा–चौड़ा कमर भर ऊँचा चौरस चबूतरा है। जिसके मध्य में पाँच भोम ऊँचा बट का एक बहुत ही विशाल वृक्ष है। यह वृक्ष चबूतरे के बराबर लंबा–चौड़ा है। इसके चारों तरफ बड़वाई रूपी थंभों की 4 हारें हैं। जो आड़ी खड़ी रूप में देखने पर 9 बड़वाईयों की 9 कतारें दिखती हैं। इनके मध्य फूल, फल, डालियों से सुंदर मेहराबें तथा छत बन गयी हैं। इसी प्रकार बट के वृक्ष की पाँचों भोमें शोभायमान हैं, जो एक बहुत बड़े मंदिर (देहुरी) के समान दिखायी दे रही हैं।

अचरज बन इन घाट , शोभित ज्यों मंदिर ।
बेल पात फूल फल छांहे , ऐ शोभित अति सुंदर ।। परि. 21/10

इसके थड़ के भीतर से ऊपर के भोमों में जाने हेतु सीढ़ियाँ चढ़ी हैं। इस वृक्ष की पाँचों भोमों में बड़वाई के थंभों के मध्य की मेहराबों में सुंदर हिण्डोले विद्यमान हैं। एक भोम में 8 आड़ी मेहराबों की 9 कतारें व 8 खड़ी मेहराबों की 9 कतारें हैं। कुल 144 मेहराबों में 144 हिण्डोलें हैं। पाँचों भोम के 720 हिण्डोले हुए। छठी चांदनी की किनार पर चारों तरफ कठेड़ा शोभायमान है।

श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ जब यहाँ आते हैं, तो बट के वृक्ष के नीचे रेती में या ऊपर के भोमों में चढ़कर अनेक प्रकार से हाँस विनोद, खेल रामतें करते हैं। फिर पाँचों भोमों के सुंदर हिण्डोलों में झूलने का आनंद लेते हैं।

तरफ चारों फिरते हिण्डोले , उपली भोम लग जोए ।
धाम तालाब जमुना नारंगी , सखियाँ हींचत बट पर सोए ।। परि. 6/48

<u>बट पुल से हौजकौसर तक की शोभा</u> :–बट पुल की शोभा केल पुल के समान ही है। बट पुल से यमुनाजी के अगिन कोण के मरोड़ तक, यमुनाजी के दोनों तरफ पाल पर, उसी प्रकार 5 महल व 4 चबूतरे क्रमशः विद्यमान हैं। इनकी मेहराबें जल पर भी बनी हैं, जिन पर भी हिण्डोलें लटक रहें हैं। मरोड़ के चारों कोनों में चार मोहोल शोभायमान हैं। इनकी मेहराबों में चार हिण्डोलें हैं, जिनमें से 2 जल पर हैं व 2 पाल पर हैं। मरोड़ के पास पुखराजी रौंस के बाहरी तरफ 250 मंदिर की चौड़ाई में रेती रमण है। जहाँ श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ खेलते हैं। मरोड़ से हौजकौसर ताल तक, यमुनाजी के दोनों तरफ के पालों (के दोनों किनार) पर थंभों की 2–2 हारें हैं। जिनकी चाँदनी पर 90–90 देहुरियाँ हैं, जो अनेक रंगों के गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताकाओं से सुशोभित है। यह चाँदनी हौजकौसर ताल के चौरस पाल से मिली हुई है, जिससे इस चाँदनी से चौरस पाल पर सीधे आ–जा सकते हैं।

जमुना जरी किनार पर , कई द्योहरियाँ तालाब ।
भांत भांत रंग झलकत , यों कई जवेर जड़ाव ।। सनंध 41/6

<u>नक्शा नं. 61 हौज कौसर तालाब</u>

रंगमहल की दक्षिण दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर एक हीरे के अंदर अनेक रंगों की तेजोमयी झलकार से युक्त हौजकौसर ताल शोभा ले रहा है। यह ताल 128 हांस का है। प्रत्येक हांस 500 मंदिर का लंबा है। हौज कौसर ताल को घेरकर सर्वप्रथम 500 मंदिर की चौड़ी जल रौंस है। इसके बाहरी तरफ भोम भर ऊँची 1000 मंदिर की चौड़ी 128 हांस की पाल है, जिसे चौरस पाल कहते हैं। इसके चौड़ाई में 250–250 मंदिर के चौड़े चार भाग हैं। प्रथम भाग में चारों तरफ कटी पाल व 124 छोटी देहुरियाँ हैं। द्वितीय भाग में चारों तरफ 128 बड़ी देहुरियाँ एवं तीन दिशा में घाट की सीढ़ियाँ हैं। तीसरे भाग में पड़साल है तथा चौथे भाग में चारों दिशा में चार घाट हैं। पूर्व दिशा में 16 देहुरी का घाट है, उत्तर दिशा में 9 देहुरी का घाट है, दक्षिण दिशा में 13 देहुरी का घाट है तथा पश्चिम दिशा में झुण्ड का घाट है। चौरस पाल के बाहरी तरफ 250 मंदिर की चौड़ाई में चारों तरफ घेरकर भोम भर की संक्रमणिक सीढ़ियाँ उतरी हैं। इसके बाहरी तरफ 500 मंदिर की चौड़ी ढ़लकती पाल है। ढ़लकती पाल के बाहरी तरफ, कमर भर नीचे, वन की रौंस एवं पुखराजी रौंस हैं। ढ़लकती पाल से हांस–हांस के मध्य भाग में वन की रौंस पर 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। पुखराजी रौंस पर बड़ोवन के वृक्षों की दो हारें विद्यमान हैं। पुखराजी रौंस से आगे वन की जमीन पर भी हांस–हांस के मध्य भाग में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं।

हौजकौसर ताल की दोनों पालों पर, चारों तरफ घेरकर बड़ोवन के वृक्षों की 5 हारें शोभायमान हैं। जिनमें से दो हारें ढ़लकती पाल पर हैं व तीन हारें चौरस पाल पर हैं। ढ़लकती पाल पर बाहरी किनार से भीतरी तरफ 250 मंदिर की दूरी पर वृक्षों की पहली हार है, इसके भीतरी तरफ 250 मंदिर की दूरी पर संक्रमणिक सीढ़ियों से लगती हुई वृक्षों की दूसरी हार है। तीसरी हार चौरस पाल की बाहरी किनार पर संक्रमणिका सीढ़ियों से लगती हुई है। इसके भीतरी तरफ 250–250 मंदिर की दूरी पर वृक्षों की चौथी व पांचवी हारें क्रमशः विद्यमान हैं। इन पाँचों हारों में वृक्ष, हांस–हांस के मध्य भाग में विद्यमान हैं। इन वृक्षों की रंगबिरंगी डालियाँ, फूल, फल, पत्ते आपस में सुंदर मेहराब के रूप में मिलकर सुंदर चंद्रवा के समान छत बना दिए हैं। इसी प्रकार इन वृक्षों की ऊपराऊपर पाँच भोमें हैं। प्रत्येक भोमों में इनकी मेहराबों में सुंदर हिंडोलें हैं। इस प्रकार हौजकौसर ताल के चारों तरफ पाल, वृक्षों व देहुरियों की अद्भुत शोभा है।

एक हीरे की पाल है , तिनमें कई मोहलात ।
गिरद द्योहरी कई वन हैं , क्यों कहूँ फल फूल पात ।। परि. 8/2

कई रंग इन दरखतों , अनेक रंग इन पात ।
अनेक रंग फल फूल में , याकी इतही होवे बात ।। परि. 8/31

नक्शा नं. 62 पाल अंदर के महल

हौजकौसर ताल के चारों तरफ जो भोम भर ऊँची चौरस पाल है, यह अंदर से पोली है। यह पाल 1000 मंदिर की चौड़ी है, जिसमें से प्रथम भाग के 250 मंदिर की चौड़ी जगह में कटी पाल की सीढ़ियाँ हैं। बाकी 750 मंदिर चौड़ी चौरस पाल के नीचे बेशुमार महल हैं, जिन्हें पाल अंदर के महल कहते हैं। इन 750 मंदिर में से 125–125 मं. चौड़े छः भाग हुए। संक्रमणिक सीढ़ियों से लगते हुए प्रथम भाग में मंदिरों की एक हार है। इनमें दिखने में 3–3 किंतु गिनती के 2–2 दरवाजे हैं। बाहरी तरफ दरवाजा नहीं है क्योंकि वहाँ संक्रमणिक सीढ़ियों की दीवाल है। इन मंदिरों के भीतरी तरफ तीन भाग में थंभों की दो हारें व तीन गलियाँ हैं। इनकी मेहराबों में सुंदर झूले हैं। इनके भीतरी तरफ पाँचवे भाग में मंदिरों की दूसरी हार है। जिनमें दिखने में 4–4 किंतु गिनती के 3–3 दरवाजे हैं। इन मंदिरों में हर प्रकार की सुख सामग्री सेज्या, सिंहासन, वस्त्राभूषणों की आलमारी आदि विद्यमान हैं। इनके भीतरी तरफ छठे भाग में एक गली है। इसके भीतरी तरफ कटी पाल है, जिनके सीढ़ियों के मध्य अनेकों दरवाजे हैं, जिनमें से होकर हम पाल अंदर के मोहलात से जल रौंस में आ–जा सकते हैं। पूर्व में 16 देहुरी के घाट के नीचे ये महल व थंभ नहीं हैं।

अब क्यों कहूँ पाल अंदर की , कई थंभ कई मोहलात ।
कई देहलाने कई मंदिर , ऐ खूबी कही न जात।। परि. 8/87

नक्शा नं. 63 सोलह देहुरी का घाट

हौजकौसर ताल के पूर्व दिशा में चौरस पाल पर 16 देहुरी का घाट है। श्री यमुनाजी का जल इसके नीचे होते हुए हौजकौसर ताल में प्रवेश करता है। सर्वप्रथम जल की जमीन पर 5 थंभों की 9 हारें हैं। मध्य में कुण्ड की जगह में 1 थंभ नहीं है। कुल 44 थंभ हैं। पूर्व दिशा के 5 थंभों की चार मेहराबों के नीचे होकर श्री यमुनाजी का जल प्रवेश करता है। पूर्व के इन 5 थंभों के ऊपर 250 मंदिर की चौड़ी 1000 मंदिर की लंबी जल रौंस है, जो यमुनाजी के दोनों तरफ के जल रौंस से मिली हुयी है। इन 5 थंभों के भीतरी तरफ (पश्चिम) में 250 मंदिर की दूरी पर 5 थंभों की दूसरी हार है। तीसरी हार से लेकर आठवीं हार तक के थंभों की हारें 125–125 मं. की दूरी पर हैं। आठवीं हार के पश्चिम में नवमी हार 750 मं. की दूरी पर है, जिनके 5 थंभों की 4 मेहराबों के नीचे से होकर यमुनाजी का जल, हौजकौसर ताल का रूप धारण कर लेता है। इन थंभों की छत (प्रथम भोम) में पूर्व व पश्चिम के 5–5 थंभों को छोड़कर शेष 34 थंभों के ऊपर, कमर भर ऊँचा चबूतरा है। जिस पर पुनः 5 थंभों की 7 हारें हैं, मध्य में कुण्ड की जगह में थंभ नही है। कुल 34 थंभ हैं। इनमें से पूर्व व पश्चिम के 5–5 थंभों को झरोखे के थंभ कहा जाता है। क्योंकि पूर्व के थंभों के पास खड़े होकर (पूर्व दिशा में) देखने पर श्री यमुनाजी का जल तीव्र गति से प्रवेश करता दिख रहा है तथा पश्चिम के थंभों के पास खड़े होकर (पश्चिम दिशा में) देखने पर श्री यमुना जी हौजकौसर ताल में समाती दिख रही हैं।

तले जाली द्वारें पाल में , जित जल रह्या समाए ।
इत बैठ झरोखों देखिए , जानों पूर आवत है धाए ।। परि. 8/54

इन थंभों के मध्य में 1 थंभ व 250 मंदिर की लं.–चौ. छत नहीं है, जिससे यह 250 मंदिर का लं.–चौ. कुण्ड जैसा दिखाई पड़ता है। इसके चारों दिशा में थंभों के मध्य कठेड़ा है, जिसके चारों तरफ (देहलान) में गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। इन 34 थंभों के दायें–बायें पाल अंदर के महल, थंभ व हिण्डोलें दिखाई पड़ रहे हैं। पूर्व के झरोखे के थंभों के दायें–बायें 250–250 मंदिर की चौड़ी अक्सी मेहराबें (दीवालें) हैं, जिनमें 2–2 दरवाजे हैं। एक दरवाजा पाल अंदर की मोहलात में जाने के लिए है व दूसरा दरवाजा देहलान में जाने के लिए है। इन दरवाजों के सामने श्रीयमुनाजी की जल रौंस पर 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं।

पश्चिम के झरोखे के 5 थंभों की 4 मेहराबों के दायें–बायें 125–125 मं. की चौड़ी 1–1 मेहराबें और हैं। इन 6 मेहराबों के पश्चिम में, 250 मंदिर की दूरी पर, 4 थंभों पर 250–250 मंदिर की चौड़ी 3 मेहराबें शोभायमान हैं। इनके आगे ताल के जल रौंस पर 3 सीढ़ियाँ उतरी हैं।

पूर्व व पश्चिम के झरोखों के 5–5 थंभों को छोड़कर, मध्य के शेष 24 थंभों के ऊपर दूजी भोम (चौरस पाल) में 500 मंदिर का लं.–चौ. कमर भर ऊँचा चौरस चबूतरा है, जिस पर 5 थंभों की 5 हारें हैं। इसके चारों तरफ 125 मंदिर की चौड़ी रौंस है। चबूतरे से रौंस पर चारों दिशा के मध्य में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा है। पूर्व के रौंस की पूर्वी (बाहरी) किनार पर कठेड़ा है, जहाँ से श्रीयमुनाजी तीव्र गति से आते दिख रही हैं। पश्चिम की रौंस के पश्चिम में 250 मंदिर का चौ. व 750 मंदिर का लंबा चौक है, जिसके दायें–बायें कटी पाल की भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। इस चौक के पश्चिमी किनार पर कठेड़ा है, जहाँ से सुंदर हौजकौसर ताल दिख रहा है। इन 25 थंभों की छत पर 4 देहुरियों की 4 हारें हैं। जिनमें गुंमट, कलश, ध्वजा, पताकाओं की अपार शोभा है। 16 देहुरी होने से इसे 16 देहुरी का घाट कहते हैं। इस छत के चारों तरफ 125 मंदिर का चौड़ा छज्जा निकला है, जिसकी किनार पर कठेड़ा है। इस छज्जे पर नैऋत्य तथा वायब्य कोने पर दो देहुरियाँ हैं। जिनकी गिनती 128 बड़ी देहुरियों में होती है। इस प्रकार यमुनाजी व ताल के मध्य, जल के ऊपर यह घाट अत्यंत शोभा ले रहा है।

जमुना तरफ ताल के , जित जल भिल्या माहें जल ।
दयोहरियाँ इन बंध पर , जल पर शोभित महल ।। परि. 8/53

नक्शा नं. 64 झुण्ड का घाट, नौ एवं तेरह देहुरी के घाट

झुण्ड का घाटः– हौजकौसर ताल के पश्चिम दिशा में ढ़लकती पाल से लगते हुए, वन की रौंस पर 250 मंदिर के लं.–चौ. कमर भर ऊँचें दो चबूतरे हैं जिनके मध्य में 250 मं. का लं.–चौ. चौक है। चबूतरों के तीन दिशा से सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। चौक से ढ़लकती पाल पर 3 सीढ़ियाँ चढ़ी हैं। इन चबूतरों से लगकर ढ़लकती पाल पर 250 मं. की लंबी–चौड़ी दो देहुरियाँ हैं, जिनमें भोम भर ऊँचे 4–4 थंभों के ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताकाओं की सुंदर शोभा है। इन देहुरियों के मध्य में 250 मंदिर का लं.–चौ. चौक है। इन दोनों देहुरियों में कुल 8 थंभ व 10 मेहराबें हैं, 4–4 मेहराबें दोनों चबूतरों में व 2 मेहराबें मध्य चौक में हैं। यह झुण्ड के घाट का दरवाजा कहलाता है। जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ हौजकौसर ताल आते हैं, तो इसी द्वार से प्रवेश करते हैं। तब सखियाँ चारों ओर की शोभा देखकर बहुत आनंदित होती हैं।

जब आवत इत अर्श से , चढ़िये इन घाट ताल ।
चबूतरे दोए दयोहरी , सीढ़ियाँ चढ़ते होत खुशाल ।। परि. 8/3

इन देहुरियों के ठीक सामने चौरस पाल के ऊपर चौथे भाग में (ताल की तरफ से) 250 मंदिर के लं.–चौ. कमर भर ऊँचें दो चबूतरे हैं। जिनके मध्य में 250 मं. का लं.–चौ. चौक है। एक चबूतरे के एक दिशा में 4 भाग हैं। मध्य के दो भाग में द्वार है, जिसके सामने 3 सीढ़ियाँ उतरी हैं तथा दायें–बायें के 1–1 भाग में 8–8 वृक्ष दीवाल के रूप में शोभायमान हैं। इसी प्रकार दोनों चबूतरों के चारों दिशा में द्वार व वृक्षों की दीवालें विद्यमान हैं। दोनों चबूतरों के कुल मिलाकर 16 दीवालें व 10 मेहराबें हैं। जिनमें से दो मेहराबें मध्य चौक की हैं। इसी प्रकार रंगबिरंगे फल, फूल, पत्तों, डालियों के ऊपराऊपर 5 भोम छठी चांदनी बन गयी है। वृक्षों का झुण्ड होने से इसे झुण्ड का घाट कहते हैं। जब श्री राजश्यामाजी व सखियाँ हौजकौसर ताल में आते हैं, तब इस झुण्ड के घाट में बैठकर शीतल सुगंधित हवा के बीच हांस विनोद करते हैं।

जब हक आवत ताल को , आए विराजत इत ।
सो खेल जल का करके , ऊपर सौक को बैठत ।। परि. 8/29

झुण्ड के घाट के दोनों चबूतरों के ठीक सामने पड़शाल के आगे, चौरस पाल के दुसरे भाग में 250 मंदिर की लंबी–चौड़ी दो देहुरियाँ हैं, जिनके मध्य में 250 मंदिर की चौड़ाई में घाट की भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। इन देहुरियों व सीढ़ियों के सामने चौरस पाल के प्रथम हिस्से में 750 मं. का लंबा व 250 मं. का चौड़ा चौक है। जिसके दायें–बायें कटी पाल की भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। इस चौक के पूर्वी

किनार पर कठेड़ा है, जहाँ से ताल की सुंदर शोभा दिखाई दे रही है। घाट की सीढ़ियों से उतर कर 250 मंदिर चौड़ी जगह पारकर के 3 सीढ़ी उतर कर जल रौंस पर आ जाईये।

नौ देहुरी का घाटः–हौजकौसर ताल के उत्तर दिशा में चौरस पाल के चौथे भाग में 500 मंदिर का लंबा व 250 मंदिर का चौड़ा कमर भर ऊँचा चौरस चबूतरा है। चबूतरे के किनार पर 8 थंभ हैं। चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में थंभों के मध्य कठेड़ा शोभायमान है। इन थंभों की चांदनी में 3 देहुरियों की 3 हारें हैं, कुल नौ देहुरियाँ हैं इसलिए इसे नौ देहुरी का घाट कहते हैं। देहुरियों में गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताकाओं की शोभा अपरंपार है। चाँदनी की किनार पर कठेड़ा शोभायमान है। नौ देहुरी के घाट के चारों कोनों में चार बड़ोवन के वृक्ष हैं, जिनकी शीतल छाया घाट पर हो रही है। इस चबूतरे के सामने, पड़साल के आगे, चौरस पाल के दूसरे भाग में झुण्ड के घाट के समान ही दो देहुरियाँ व मध्य में घाट की सीढ़ियाँ शोभायमान हैं।

तेरह देहूरी का घाटः– यह घाट हौज कौसर तालाब के दक्षिण दिशा में शोभायमान है। इसकी सारी शोभा 9 देहुरी के घाट के समान ही है, अंतर केवल इतना है कि चबूतरे के 8 थंभों की छत पर 9 देहुरियों की जगह 13 देहुरियाँ हैं। यहाँ तीन गुम्मटों की तीन हारों के बीच–बीच में 2 गुम्मटों की 2 हारें भी (3–2–3–2–3) हैं। इनके आगे चौरस पाल के दूसरे भाग में दो बड़ी देहुरियों के बीच में घाट की सीढ़ियाँ उसी प्रकार शोभायमान हैं।

,

नक्शा नं. 65–128 बड़ी देहुरियाँ, कटी पाल व 124 छोटी देहुरियाँ

चौरस पाल के दूसरे भाग में चारों तरफ हांस–हांस के कोनों में 250 मंदिर की लंबी–चौड़ी 128 बड़ी देहुरियाँ हैं। प्रत्येक देहुरियों में चारों कोनों में भोम भर ऊँचें चार थंभ हैं जिनके मध्य चार मेहराबें हैं। इनकी छत पर गुंमट, कलश, ध्वजा, पताकाओं की बेमिसाल शोभा है। इन देहुरियों के सामने, ताल की तरफ (चौरस पाल के प्रथम भाग में) 250 मंदिर का लं.–चौ. चांदा है। चांदे के ताल के तरफ की किनार पर कठेड़ा है। इन देहुरियों व चांदों पर सुंदर बैठक बनी है।

पाल ऊपर जो द्योहरी , बीच कठेड़ा सबन ।
ए बैठक शोभा लेत है , कहा कहूँ जुबां इन ।। परि. 8/41

इन चांदों के नीचे पाल अंदर की मोहलात में जाने के लिए बड़े दरवाजे हैं। इन दरवाजों से जल रौंस पर 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। चांदों के दायें बायें भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। इन सीढ़ियों के बाहरी (चौरस पाल की) तरफ दीवाल है, एवं ताल की तरफ कांगरी युक्त कमर भर ऊँची दीवाल है। जहाँ आमने–सामने दो तरफ से सीढ़ियाँ उतरी हैं, वहाँ चौक पर छोटे द्वार हैं, जिसके चारों कोनों में चार थंभ हैं, जिनके ऊपर चार मेहराबें हैं। दो मेहराबें सीढ़ियों की तरफ हैं, एक मेहराब जल रौंस की तरफ है तथा एक मेहराब पाल अंदर के महलों की तरफ है, जिनमें से होकर पाल अंदर के महलों में से जल रौंस पर आ–जा सकते हैं। इन मेहराबों की छत पर छोटी देहुरी है। इसी प्रकार चारों तरफ कुल 124 छोटी देहुरियाँ है, चारों घाटों की वजह से चार देहुरियाँ कम हो गयी हैं।

जल रौंस से ताल के कमर भर गहरे जल चबूतरे पर हांस–हांस के मध्य भाग में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में सुंदर कठेड़ा शोभायमान है। चौरस पाल के बड़ोवन के पाँचवी हार के वृक्षों ने कटी पाल व जल रौंस को उलंघकर जल चबूतरे तक छाया प्रदान किया है। जल चबूतरे से आगे जल के जमीन तक घेरकर सीढ़ियाँ उतरी हैं। हौजकौसर ताल के निर्मल जल में एक–एक वस्तु स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। अनेक प्रकार के व अनेक रंगों के कमल के फूल ताल में खिले हुए दिख रहे हैं। महामतिजी (लालदासजी) के बड़ी वृत्त के अनुसार हौजकौसर ताल के 128 हांस, 128 रंगों की झलकार से युक्त हैं। जिस रंग के हांस में कमल का फूल होता है, वह उसी रंग का दिखता है। जल में अनेक प्रकार के सुंदर जीव–जंतु हैं, वे भी उस हांस के रंग के अनुसार ही दिखते हैं।

इत रंग जवेरन के , हांस हांस के होय ।

सामे वही रंग सोभित , बिन मोमिन न जाने कोय ।। बड़ी वृत्त 89/56
जल के जेते जानवर , जिन रंग तले निकसत ।
तैसा ही रंग भासत , सुख शोभा कहूँ क्यों इत ।। बड़ी वृत्त 89/57

ये जल के जीव भी धनी व सखियों को रिझाने में पीछे नहीं रहते हैं। दिन–रात जल के किनारे 'पिया–पिया','धनी–धनी' करते हुए धनी के गुणगान करते रहते हैं। छोटे जीव मेंढ़क, मछली, कछुआ आदि से लेकर बड़े मगरमच्छ आदि भी अनेक प्रकार से मधुर वाणी सुनाकर, खेल करतब दिखाकर धनी को रिझाते हैं। अपने पूरे जुत्थ (समूह) के साथ मिलकर अनेक कलाओं से नाचते–कूदते हैं। अलग–अलग प्रकार के जीव इस प्रकार गाते हैं कि सबका स्वर एक समान रहता है।

जल में जीव बसत हैं , सो सुंदर सोभा अमान ।
फौज बाँध आगूं धनी के , खेल करें कई तान।। परि. 28/22
मच्छ कच्छ मुरग मेंढ़क , कई रंग करें अपार ।
जुदी जुदी बानी बोलत , स्वर राखत एक समार।। परि. 28/23

श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ जब यहाँ आते हैं, तब सखियाँ दोनों पालों पर अनेकों प्रकार से दौड़ती–कूदती हैं। ये पालें एक हीरे की हैं, यहाँ पर जरा भी रेती नहीं है। अतः इतनी चिकनी है कि सखियों को यहाँ दौड़ने–खेलने में बहुत आनंद आता है। कभी बड़ोवन की डालियाँ पकड़कर लटक जाती हैं, कभी बड़ोवन के ऊपर के भोमों में चढ़ जाती हैं। फिर सब सखियाँ मिलकर अपने प्राण प्रियतम के साथ झूला–झूलती हैं।

ए भोम इन विध की , पाऊं ना खूंचत रेत ।
खेलत हैं इत रूहें , नए नए सुख लेत ।। परि. 8/68
ऊपर बन बुजरक , कई हिण्डोले हींचत ।
कई डारी बन झूमत , कई विध खेल करत।। परि. 8/83

इसके पश्चात् ताल में झीलना करते हैं। साथ ही अनेकों प्रकार के जल के जीवों व जल के जहाजों पर सवारी का आनंद लेते हैं। उनमें बैठकर टापूमहल के चारों ओर घूमते हैं। फिर श्रृंगार करके धनी झुण्ड के घाट में कुछ देर बैठते हैं।

नक्शा नं. 66 टापू महल

17,500 मंदिर के लंबे–चौड़े हौजकौसर ताल के मध्य में 6,000 मंदिर का लंबा चौड़ा, 64 पहल का, 3 भोम ऊँचा टापूमहल शोभायमान है। ताल को पार करके टापूमहल में जाने के लिए जल में अनेकों प्रकार के जहाज, नौकाएँ, स्टीमर हैं। साथ ही सखियाँ अनेकों प्रकार के जल के व आसमान के जीवों पर भी सवारी करके जाती हैं।

टापूमहल के चारों तरफ जल रौंस है। जल रौंस से ताल के कमर भर गहरे जल चबूतरे पर हांस–हांस के मध्य भाग में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में सुंदर कठेड़ा शोभायमान है। जल चबूतरे से आगे जल के जमीन तक घेरकर सीढ़ियाँ उतरी हैं। जल रौंस के भीतरी तरफ 64 हांस का, कमर भर ऊँचा चबूतरा है। चबूतरे के हांस हांस के मध्य से जल रौंस पर 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा है। कठेड़े के भीतरी तरफ परिक्रमा की रौंस की जगह छोड़कर मंदिरों की एक हार है जिसके 64 हांस हैं। हांस हांस की संधि में रौंस पर 64 गुर्ज हैं। सभी हांस 250 मंदिर के लंबे हैं, किंतु चारों दिशा के हांस 750 मंदिर के लंबे हैं, जिनमें मध्य में 250 मंदिर का दरवाजा है, जिसके दायें–बायें 250–250 मं. के लं.–चौ. चबूतरे हैं। इन चबूतरों पर 8 थंभ व 10 मेहराबें हैं। इन चबूतरों के दायें–बायें के गुर्ज आधे हैं अर्थात् ये गुर्ज साढ़े 62 मंदिर के लंबे व 125 मंदिर के चौड़े हैं जबकि अन्य गुर्ज 125 मं. के लंबे–चौड़े हैं। दिशा के हांस को छोड़कर बाकी 60 हांस में 60 मंदिर हैं। इन मंदिरों में दिखने में 6–6 किंतु गिनने के 4–4 दरवाजे हैं। इनमें से दायें–बायें संधि की व भीतर की दीवालों में 1–1 दरवाजा है तथा बाहर की दीवाल में 3–3 दरवाजे हैं, जिनमें से दो दरवाजे दो गुर्जों में जाने के लिए हैं। गुर्जों में दिखने में

5–5 किंतु गिनने के 4–4 दरवाजे हैं। इनमें से तीन दरवाजे रौंस की तीनों दीवालों में हैं व दो दरवाजे अंदर की दीवाल में हैं, जिन से मंदिरों में आ जा सकते हैं। प्रत्येक दो गुर्जों के मध्य परिक्रमा की रौंस में सुंदर वन शोभायमान हैं। इस प्रकार ताल के मध्य 64 गुर्जो से युक्त टापूमहल 64 पांखड़ी वाले कमल के फूल के समान दिखाई दे रहा है।

ज्यों एक फूल चौसठ पांखड़ी , चार द्वार बने गिरदवाए ।
गुरज साठ बने तिन पर , ए खूबी कही न जाए ।। परि. 9/3

ताल के जल की लहरें जब इन गुर्जों व मंदिरों से टकराती हैं, तो करोड़ों मणियों का प्रकाश चारों ओर जगमगा उठता है।

"जल मोहोल तले जो खलके , मंदिर कोट प्रकाश मनी झलके।" परि. 3/42

इन मंदिरों के भीतरी तरफ 64 थंभों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ मंदिरों की दूसरी हार है, जिसमें 60 मंदिर व 4 दरवाजे हैं। इन मंदिरों में दिखने में 4–4 किंतु गिनने के 3–3 दरवाजे हैं। इनके भीतरी तरफ 64 थंभों की दूसरी हार है। इनके भीतरी तरफ एक कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके किनार पर थंभों की तीसरी हार है। चबूतरे के चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में थंभों के मध्य कठेड़ा शोभायमान है। चबूतरे के तीन भाग हुए, मध्य के एक भाग में पानी का कुण्ड है। इसके चारों तरफ दूसरे भाग में बगीचें, नहरें, चेहेबच्चें, फव्वारें शोभायमान हैं। इनके चारों तरफ, तीसरे भाग में बैठक है, जिसमें गिलम, सिंहासन व कुर्सियों की अपरंपार शोभा है। इसी प्रकार टापूमहल के तीन भोम हैं किंतु ऊपर के दो भोमों में चबूतरे पर कुण्ड व बगीचे नहीं हैं।

महामत कहे मोमिन को , गेहरा गंभीर जल देख ।
टापू बन्यो बीच हौज के , सोभित अति विसेख ।। परि. 8/101

नक्शा नं. 67 टापू महल की चाँदनी

चाँदनी के मध्य में एक कमर भर ऊँचा गोल चबूतरा है, इसके चारों दिशा से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा शोभायमान है। चबूतरे पर सुंदर पशमी गिलम बिछी है, जिस पर सुंदर सिंहासन व 6,000 कुर्सियाँ रखी हैं। 1–1 कुर्सी में 2–2 सखियाँ बैठती हैं। चाँदनी की किनार पर भी चारों तरफ कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिस पर चारों तरफ कुल 3,000 कुर्सियाँ रखी हैं, जिनमें से 1–1 कुर्सी पर 4–4 सखियाँ बैठतीं हैं। इस चबूतरे से भीतरी तरफ, हांस हांस के मध्य भाग में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। 60 गुर्जों (दरवाजे के दायें–बायें के दो आधे गुर्जों को एक गिना गया है) व दरवाजों के चबूतरों (चौखूंटे गुर्जों) की चांदनी भी यहाँ तक आयी है। इनके व चबूतरे के बाहरी किनार पर लाल कांगरी युक्त कमर भर ऊँची दीवाल शोभायमान है। कांगरी, जगमगाते हुए बिजली के बल्बों के समान दिख रही है। 60 गुर्जों की चाँदनी पर 60 बड़ी कुर्सियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक कुर्सी में 200–200 सखियाँ बैठती हैं। शुक्ल पक्ष की चौदस को चाँदनी रात में श्रीराजश्यामाजी यहाँ मध्य चबूतरे पर सिंहासन पर विराजमान होते हैं। तब कभी सखियाँ मध्य चबूतरे पर ही (6,000 कुर्सियों में) धनी के पास बैठती हैं, कभी चाँदनी के किनार के चबूतरे पर (3,000 कुर्सियों में) बैठती हैं, तो कभी गुर्जो की चाँदनी पर बड़े कुर्सियों पर बैठती हैं। श्रीराजजी महाराज, सखियों को कई प्रकार से प्रेममयी बातें करते हुए आनंद देते हैं। अपनी अमृतमयी नजरों से अमीरस का पान करवाते हैं तथा कई प्रकार से हांस विनोद करते हैं।

चाँद चौदमी रात का , बैठे चाँदनी नूरजमाल ।
सनमुख सबे बैठाए के , करें खावंद रूहें खुसाल ।। परि. 9/28
अमृत खसम रूहन पर , नूर नजरों सींचत ।
सो रस रूहें रब का , सनमुख रोसन पीवत ।। परि. 9/29

इस समय सखियाँ चारों तरफ के सुंदर दृश्यों को निहारते हुए भी आनंद लेती हैं। चारों तरफ अनेकों रंगों के प्रतिबिंब से युक्त, ताल की शोभा अद्भुत दिख रही है। चारों तरफ पाल पर देहुरियों तथा बड़ोवन के वृक्षों के पाँचों भोमों की शोभा भी बहुत सुंदर दिख रही है।

जब खूबी ताल यों देखिये , चढ़ चाँदनी पर ।

फिरती पाल बन द्योहरी , जल सोभित अति सुंदर ।। परि. 9/8

नक्शा नं. 68 24 हांस का महल

हौजकौसर ताल के दक्षिण दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर 24 हांस का महल शोभायमान है। सर्वप्रथम 24 हांस का, भोम भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके चारों दिशा के मध्य से भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा शोभायमान है। कठेड़े के भीतरी तरफ परिक्रमा की रौंस की जगह छोड़कर मंदिरों की एक हार है, जिसके 24 हांस हैं। चारों दिशा के हांस 1,000 मंदिर के लंबे हैं, जिनमें बड़े दरवाजे हैं। बाकी 20 हांस 500 मंदिर के लंबे हैं, जिनमें 20 मंदिर विद्यमान हैं। हांस हांस की संधि में बाहरी रौंस पर 24 गुर्ज हैं। जिनमें दिखने में 5–5 किंतु गिनती के 4–4 दरवाजे हैं। मंदिरों में दिखने में 6–6 किंतु गिनती के 4–4 दरवाजे हैं। इनमें से दो दरवाजे गुर्जों में जाने के लिए हैं। इन मंदिरों के भीतरी तरफ 24 थंभों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ मंदिरों की दूसरी हार है, जिसमें 20 मंदिर व 4 बड़े दरवाजे हैं। इन मंदिरों में दिखने में 4–4 किंतु गिनती के 3–3 दरवाजे हैं। इनके भीतरी तरफ 24 थंभों की दूसरी हार है। इनके भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा गोल चबूतरा है, जिसकी किनार पर थंभों की तीसरी हार है। चबूतरे के चारों दिशा से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में थंभों के मध्य कठेड़ा है। इस चबूतरे के तीन भाग हुए, मध्य में एक भाग में पानी का कुण्ड है। कुण्ड के मध्य में एक पानी का पाईप है, जो छठी चाँदनी में जाकर चेहेबच्चा बन गया है। कुण्ड के चारों तरफ दूसरे हिस्से में बगीचे, नहरें, चेहेबच्चें शोभायमान हैं। इसके चारों तरफ (कठेड़े तक) तीसरे हिस्से में बैठक बनी है, जिस पर सुंदर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। इसी प्रकार ऊपराऊपर पांच भोम हैं, किंतु ऊपर की भोमों में चबूतरे पर कुण्ड व बगीचे नहीं हैं।

नक्शा नं. 69 बड़ा दरवाजा व जमीन पर बगीचों के दृश्य

बड़ा दरवाजा :– चारों दिशा के दरवाजे के हांस जो 1,000 मंदिर लंबे हैं, उनके मध्य में 250 मंदिर का लंबा दरवाजा है। दरवाजे के दायें बायें (दीवाल के सामने) 250–250 मंदिर के लं.–चौ. कमर भर ऊँचे दो चबूतरे हैं। दोनों चबूतरों पर कुल 8 थंभें व 10 मेहराबें शोभायमान हैं। चबूतरों के दायें–बायें 125–125 मंदिर की जगह गुर्जों ने ले ली है।

बगीचों का दृश्यः– 24 गुर्जों के सामने, चबूतरे से भोम भर नीचे रौंस पर 24 कुण्ड हैं। इन्हीं कुण्डों पर छे भोम ऊपर से पानी, धाराओं के रूप में गिरता है। इन कुण्डों के सामने आड़ी–खड़ी 24 नहरों की 24 हारें हैं, तथा 24 तालों की 24 हारें हैं। ये नहरें व ताल भोम भर गहरे हैं। इन नहरों के दोनों तरफ व ताल के चारों तरफ, पाल पर दो भोम ऊँचे महल हैं। इन आड़ी–खड़ी नहरों के बीच–बीच में 24 बगीचों की 24 हारें है। प्रत्येक बगीचे के चारों दिशा में नहरें व चारों कोनों में ताल हैं। इन बगीचों में दो भोम ऊँचे वृक्ष हैं। बगीचों व महलों की छत, नहरों व ताल पर नहीं है, अर्थात् नहरें व ताल ऊपर से खुले हैं। जब सभी ताल पड़ चुके, तब ईशान कोने के दो तालों से दो बड़ी नहरें निकली हैं, जो दोनों तरफ से घूमकर दक्षिण में जवेरों की नहरों में मिल गयी हैं। सभी नहरों का पानी इस बड़ी नहर में आकर, जवेरों की नहर में चला जाता है।

नक्शा नं. 70 छठी चाँदनी

छठी चाँदनी के मध्य में एक कमर भर ऊँचा गोल चबूतरा है, जिसके मध्य में एक चेहेबच्चा है। इस चेहेबच्चे में 25 फव्वारें हैं जिसमें से एक फव्वारा मध्य में है, जिसका पानी उछलकर उसी चेहेबच्चे में गिरता है। बाकी 24 फव्वारे चेहेबच्चे की किनार पर, गुर्जों के सामने हैं, जिनका पानी उछलकर 24 गुर्जों के कुण्डों में गिरता है। इस चेहेबच्चे के चारों तरफ बेशुमार बगीचे शोभायमान हैं। इस चेहेबच्चे से 24 नहरें निकली हैं, जो 24 गुर्जों के कुण्डों में मिल गयी हैं। चाँदनी की किनार पर कमर भर ऊँचा चबूतरा है। 24 गुर्जों की चाँदनी भी इस चबूतरे तक आयी है, जिन पर कमर भर गहरे कुण्ड हैं, जिन्हें गुर्जों का कुण्ड

कहते हैं। इस चबूतरे व गुर्जों के बाहरी किनार पर कमर भर ऊँची लाल कांगरी शोभायमान है। इन 24 कुण्डों से पानी 24 धाराओं के रूप में 6 भोम नीचे जमीन के कुण्डों में गिरता है।

चौबीस फुहारें बीच में , परें चौबीस गुरजें ।
तासों परें चौबीस चादरें , गिरद परें कुण्डें ।। बीतक 69/7

नक्शा नं. 71 24 हांस के महल का खड़ा दृश्य

अनेक रत्नों की नक्शकारी व अनेक रंगो की झलकार से युक्त, भोम भर ऊँचे चबूतरे पर विद्यमान पांच भोम ऊँचा 24 हांस का महल, अत्यंत सुंदर सुशोभित हो रहा है। यह महल चारों तरफ से फव्वारों व झरनों से ढका होने के कारण शीतलता के साथ साथ अत्यंत सुंदर शोभा प्रदान कर रहा है। इस महल के चारों तरफ दो भोम ऊँचे महलों व वृक्षों की भी अद्‌भुत शोभा दिख रही है।

नक्शा नं. 72 जवेरों के महल के नौ फिरावे

पूर्व वर्णित शोभा (रंगमहल, सातघाट, यमुनाजी, अक्षरधाम, पुखराज पहाड़, हौजकौसर, 24 हांस का महल, कुंज–निकुंज, पं. चौगान, बड़ोवन) को चारों तरफ से घेरकर, एक हीरे के नंग के अंदर अनेक रंगों की झलकार से युक्त, जवेरों के महल के नौ फिरावे शोभायमान हैं। आड़ी–खड़ी नहरों के मध्य 124 चौकों की 9 हारें (फिरावे) चारों तरफ हैं। इन चौकों में जवेरों के महल हैं। प्रथम फिरावे के महल, 4 पहल के व 4 भोम ऊँचे हैं। दूसरे फिरावे के महल, 8 पहल के व 8 भोम ऊँचें हैं। तीसरे फिरावे के महल, 16 पहल के व 16 भोम ऊँचें हैं। चौथे फिरावे के महल, 32 पहल के व 32 भोम ऊँचे हैं। पाँचवे फिरावे के महल, 64 पहल के व 64 भोम ऊँचे हैं। इनके आगे के (6वें से 9 वें) फिरावे के महल कम होते हुए क्रमशः 32, 16, 8, 4 भोम व पहल के हैं। इस प्रकार जवेरों के महल चारों तरफ स्टेडियम के सीढ़ियों की भांति सुशोभित हो रहे हैं।

नक्शा नं. 73 चार पहल की हवेली

चार नहरों के मध्य चौक में मध्य के तीसरे हिस्से में एक भोम भर ऊँचा गोल चबूतरा है। चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा है। कठेड़े के भीतरी तरफ रौंस की जगह छोड़कर महलों की एक हार गोलाई में है। जिसमें 64 महल तथा (चारों दिशा में) चार बड़े दरवाजे हैं। ये दरवाजे 400 कोस के चौड़े हैं, जिसमें से मध्य में 133 कोस का दरवाजा व दायें–बायें दीवाल के सामने 133 कोस के लं.–चौ. दो कमर भर ऊँचे चबूतरे हैं, जिन पर 8 थंभ व 10 मेहराबें हैं। ये महल वैसे तो गोलाई में हैं, किंतु हवेली के चारों कोनों में चार गुर्ज होने की वजह से चार पहल की हवेली दिखती है। ये चारों गुर्ज 200 कोस के लं.–चौ. हैं, जो कोने के दो महलों की संधि में हैं। इन गुर्जों में दिखने में 5–5 किंतु गिनने के 4–4 दरवाजे हैं। प्रत्येक दो गुर्जों के मध्य एक बड़ा दरवाजा व 16 महल हैं। इन चारों गुर्जों के सामने, चबूतरे से लगकर भोम भर नीचे चार कुण्ड हैं, जिनके सामने चार नहरें निकली हैं, जो बड़ी नहरों में जाकर मिल गयी हैं। बड़ी नहरों व इन नहरों की संधि में 1–1 चेहेबच्चे हैं। हवेली के चारों तरफ इन चार नहरों के मध्य चार बगीचे हैं, जिनमें बेशुमार नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारे शोभायमान हैं। इन बगीचों के वृक्ष पाँच भोम ऊँचे हैं।

64 महलों की हार के भीतरी तरफ 68 थंभों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ महलों की दूसरी हार है, जिसमें 64 महल व चार बड़े दरवाजे हैं। इनके भीतरी तरफ 68 थंभों की दूसरी हार है। इनके भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चबूतरा है , जिसके किनार पर 68 थंभों की तीसरी हार है। इस चबूतरे के तीन भाग है, मध्य में एक भाग में चेहेबच्चा है, जिसके जल चबूतरे पर चारों दिशा से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। चेहेबच्चे के मध्य में एक पानी का पाईप है, जो पाँचवी चाँदनी में जाकर खुला है। दूसरे भाग में चेहेबच्चे के चारों तरफ बगीचों की शोभा है। बगीचों के चारों तरफ, तीसरे भाग में सुंदर

पशमी गिलम के ऊपर सिंहासन व कुर्सियों की शोभा है, जहाँ श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ बैठकर हांस–विनोद करते हैं। इसी प्रकार चारों भोमों की शोभा है। किंतु ऊपर के भोमों में चबूतरे पर बगीचे व कुण्ड नहीं हैं।

नक्शा नं. 74 एक महल की शोभा

एक हवेली में 64 महलों की जो दो हारें हैं, उनमें से एक महल का वर्णन यहाँ किया जा रहा है। एक महल 9 सौ कोस का लंबा–चौड़ा है। चारों दिशा के मध्य में 100 कोस का बड़ा दरवाजा है, जिसमें से 33 कोस का चौड़ा दरवाजा व दायें–बायें (दीवाल के सामने) 33–33 कोस के लं.–चौ. दो कमर भर ऊँचे चबूतरे हैं। इस दरवाजे के दायें–बायें 100–100 कोस के लं.–चौ. 4–4 मंदिर हैं। कोने का मंदिर दोनों तरफ गिना जाता है। इन मंदिरों में दिखने में 4–4 किंतु गिनती के 3–3 दरवाजे हैं। चूँकि सभी महल आपस में जुड़े हुए हैं, इसलिए दो दिशा के मंदिर व दरवाजे, दूसरे महलों के मंदिरों व दरवाजों से जुड़े हैं, जिससे संधि के बड़े दरवाजों के बाहर चबूतरे नहीं हैं। इन मंदिरों के भीतरी तरफ थंभों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके किनार पर पुनः थंभों की हार है। चारों दिशा में सीढ़ियों की जगह छोड़कर कठेड़ा है। चबूतरे पर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं।

नक्शा नं. 75 आठ पहल की हवेली

चार पहल की हवेलियों के पहले फिरावे को चारों तरफ से घेरकर दूसरे फिरावे में आठ पहल की हवेलियाँ हैं। इनकी सारी शोभा चार पहल की हवेलियों के समान ही है। उसी प्रकार 64 महलों की हार है किंतु अंतर इतना है कि यहाँ हवेली के चारों तरफ 8 गुर्ज हैं, जिससे यह 8 पहल का दिखाई देता है। प्रत्येक दो गुर्जों के मध्य 8 महल हैं। इस हवेली की ऊँचाई 8 भोम की है। आठ गुर्जों के सामने चबूतरे से भोम भर नीचे आठ कुण्ड हैं, जिनसे आठ नहरें निकली हैं। जिनके मध्य में आठ बगीचे हैं, जिनके वृक्ष नौ भोम ऊँचे हैं।

नक्शा नं. 79 आठ पहल के हवेली की चाँदनी

यहाँ एक आठ पहल की हवेली की चाँदनी का वर्णन किया जा रहा है। चाँदनी के मध्य में एक कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके मध्य में एक चेहेबच्चा है। चारों दिशा से चाँदों के द्वारा चेहेबच्चे में सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। इस चेहेबच्चे में नौ फव्वारे हैं। एक फव्वारा मध्य में है, जिसका पानी उछलकर उसी चेहेबच्चे में गिरता है। बाकी आठ फव्वारे चेहेबच्चे की किनार पर हैं, जिनका पानी उछलकर आठ गुर्जों के कुण्डों में गिरता है। इन फव्वारों के सामने (चबूतरे से) आठ नहरें निकली हैं, जो आठ गुर्जों के कुण्डों में मिल गयी हैं। चबूतरे के चारों तरफ, इन नहरों के मध्य बेशुमार बगीचे हैं। चाँदनी की किनार पर कमर भर ऊँचा चबूतरा है। आठों गुर्जों की चाँदनी भी इससे लगकर आई है, जिनके ऊपर कमर भर गहरे कुण्ड हैं। इन चबूतरों व गुर्जों की बाहरी किनार पर कमर भर ऊँची लाल कांगरी जगमगा रही है। आठों गुर्जों के कुण्डों से 8 धाराओं के रूप में पानी 9 भोम नीचे जमीन पर बने कुण्डों में गिरता है। फिर 8 नहरों के रूप में आगे जाता है। इसी प्रकार सभी हवेलियों की चाँदनी है, फर्क सिर्फ इतना है कि पहल व भोम के अनुसार फव्वारे, नहरें व गुर्जों के कुण्ड कम ज्यादा हैं। जैसे 4 पहल की हवेली की चाँदनी में 5 फव्वारे, 4 नहरें, 4 गुर्जों के कुण्ड व 4 धाराएँ आगे 5 भोम नीचे गिरती हैं। चूँकि जवेरों के महल एक हीरे के हैं, इसलिए हवेली की दीवालों, दरवाजों, थंभों सब में पानी की नहरें चलती दिखती हैं। इसलिए इसे जवेरों की नहरें कहते हैं।

नक्शा नं. 76 सोलह पहल की हवेली

आठ पहल की हवेलियों को चारों तरफ से घेरकर तीसरे फिरावे में 16 पहल की हवेलियाँ है। इस हवेली में 64 महलों के चारों तरफ 16 गुर्ज हैं। प्रत्येक दो गुर्जो के मध्य 4 महल हैं। इस हवेली की ऊँचाई 16

भोम है। चाँदनी के चेहेबच्चे में 17 फव्वारे हैं, जिनमें से 16 फव्वारे उछलकर 16 गुर्जों के कुण्डों में गिरते हैं। इन कुण्डों से 16 धाराएँ 17 भोम नीचे 16 कुण्डों में गिरती हैं। आगे 16 नहरों के बीच 16 बगीचे हैं जो 17 भोम ऊँचे हैं।

नक्शा नं. 77 बत्तीस पहल की हवेली

16 पहल की हवेलियों को चारों तरफ से घेरकर चौथे फिरावे में 32 पहल की हवेलियाँ हैं। इस हवेली में 32 गुर्ज हैं। प्रत्येक दो गुर्जों के मध्य 2 महल हैं। इस हवेली की ऊँचाई 32 भोम है। चाँदनी के चेहेबच्चे में 33 फव्वारे हैं, जिनमें से 32 फव्वारे उछलकर 32 गुर्जों के कुण्डों में गिरते हैं। इन कुण्डों से 32 धाराएँ 33 भोम नीचे 32 कुण्डों में गिरती हैं। आगे 32 नहरों के बीच 32 बगीचे हैं जिनमें 33 भोम ऊँचे वृक्ष हैं।

नक्शा नं. 78 चौसठ पहल की हवेली

32 पहल की हवेलियों को चारों तरफ से घेरकर पाँचवे फिरावे में 64 पहल की हवेलियाँ हैं। इस हवेली में 64 गुर्ज हैं। प्रत्येक दो गुर्जों के मध्य 1 महल है। इस हवेली की ऊँचाई 64 भोम है। चाँदनी के चेहेबच्चे में 65 फव्वारे हैं, जिनमें से 64 फव्वारे उछलकर 64 गुर्जो के कुण्डों में गिरते हैं। इन कुण्डों से 64 धाराएँ, 65 भोम नीचे 64 कुण्डों में गिरती हैं। आगे 64 नहरों के बीच 64 बगीचे हैं जिनमें 65 भोम ऊँचे वृक्ष हैं।

नक्शा नं. 80–81 माणिक पहाड़ : बड़ा दरवाजा तथा हवेलियाँ

रंगमहल की दक्षिण दिशा में, जवेरों के महलों के बाहरी तरफ, एक माणिक नंग के अंदर अनेक रंगों की चित्रकारी व नक्शकारी से युक्त, लालिमा बिखेरता हुआ 12,000 भोम ऊँचा माणिक पहाड़ शोभायमान है। जिसके अंदर अनेक प्रकार के बेशुमार महल, वन, नहरें, ताल, झरनें, हिण्डोले शोभायमान हैं।

पहाड़ माणिक मोहोल कई , यों पहाड़ मोहोल अनेक ।
सब अपार अलेखे इन जिमी , कहां लों कहूँ विवेक ।। परि. 24/1

यह पहाड़ दुनिया के पत्थर के पहाड़ों के समान उबड़–खाबड़, अव्यवस्थित नहीं है, बल्कि यह एक माणिक नंग का पहाड़ है, जो व्यवस्थित रूप से सुंदर आकृति लिए हुए है। पहाड़ के चारों तरफ की जमीन भी समतल है, जिसमें व्यवस्थित व कतारबद्ध रूप से सुंदर वन शोभायमान हैं।

जिमी गिर्दवाए पहाड़ों की , सब देखत बराबर ।
पहाड़ भी सीधे सब तरफों, जानो हके किए दिलधर ।। परि. 24/8

यह दुनिया के पहाड़ों के समान पूरा ठोस नहीं है। इस पहाड़ के अंदर कई महल हैं। कई महल पहाड़ के ऊपर हैं। कई वन पहाड़ के ऊपर हैं, तो कई वन पहाड़ के चारों तरफ जमीन में हैं। इस प्रकार इस पहाड़ की शोभा अपरंपार है।

कई मोहल पहाड़ों मिने , कई मोहल पहाड़ों ऊपर ।
जो बन पहाड़ या जिमिएँ , सो इन जुबाँ कहूँ क्यों कर ।। परि. 24/9

12,000 हांस का एक भोम भर ऊँचा चबूतरा है, जिस पर 12,000 भोम ऊँचा माणिक पहाड़ विद्यमान है। प्रत्येक भोम तथा प्रत्येक हांस 400 कोस के हैं। चबूतरे से चारों दिशा में भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा है। कठेड़े के भीतरी तरफ 400 कोस की चौड़ी रौंस की जगह छोड़कर, चारों तरफ घेरकर 12,000 हांस की, एक मंदिर की मोटी दीवाल है। इस दीवाल के हांस–हांस के कोनों में 100–100 कोस के चौड़े 12,000 गोल गुर्ज हैं। चारों दिशा के 1–1 हांस में चार बड़े दरवाजे हैं, जिनमें 100 कोस का लंबा मध्य में दरवाजा है, जिसके दायें–बायें (दीवाल के सामने) 100–100 कोस के लंबे–चौड़े दो चबूतरे हैं, जिन पर 8 थंभ व 10 मेहराबें हैं। इनके ऊपर की भोमों में झरोखे बने हुए हैं, जिससे ये चबूतरे चौखूंटे गुर्जों के रूप में 12,000 भोम ऊपर जाते दिखाई दे रहे हैं। प्रत्येक हांस के मध्य में छोटे दरवाजे 33 कोस के हैं, जिनके दायें–बायें 33–33 कोस के लं.–चौ. दो चबूतरे हैं। 12,000 हांस के

24,000 चबूतरे उसी प्रकार 24,000 चौखूंटे गुर्जो के रूप में ऊपर जाते दिखाई दे रहे हैं। इस प्रकार बाहरी रौंस पर 24,000 छोटे चौखूंटे गुर्ज, 8 बड़े चौखूंटे गुर्ज तथा 12,000 गोल गुर्ज शोभायमान हैं।

साथजी देखो मोहोल मानिक , जो कहे द्वार बारे हजार ।
सोभा सुंदरता इनकी , ए न आवे बीच सुमार ।। परि. 44/1

एक मंदिर की चौड़ी दीवाल के भीतर सर्वप्रथम थंभों की दो हारें चारों तरफ घेरकर आयी हैं। इनके भीतरी तरफ 12,000 हवेलियों की 12,000 हारें हैं। चारों मुख्य दरवाजों के सामने प्रथम हवेली चौरस है। इसके पश्चात् चारों तरफ क्रमशः गोल व चौरस हवेलियाँ आती गयी हैं। एक हवेली 300 कोस की लंबी–चौड़ी है। प्रत्येक दो हवेलियो के मध्य में त्रिपोलिया (थंभों की दो हारें व तीन गलियाँ) हैं। इन थंभों की मोटाई एक महल के बराबर है, जिनके भीतर बेशुमार महल, मंदिर, कोठरियाँ, नहरें, चेहेबच्चे, बगीचे शोभायमान हैं, मानो कि ये थंभ नहीं, महल ही हों। हवेली के एक दिशा में ऐसे 10 थंभ हैं। प्रत्येक हवेली के चारों कोनों में, त्रिपोलियों के मध्य के चौक में, 4 थंभों के बीच 33 कोस के लंबे–चौड़े कुण्ड हैं। इन 4 थंभों की मेहराबों में 4 हिण्डोले हैं। इसी प्रकार सभी हवेलियों के कोनों में कुण्ड व हिण्डोले हैं। एक कुण्ड से दूसरे कुण्ड तक गुप्त रूप से नहरें जाती हैं। इन हवेलियों के भीतरी तरफ की शोभा का वर्णन नक्शा नं. 87 में किया गया है।

नक्शा नं. 82 एक हवेली की शोभा

एक हवेली 300 कोस की लंबी–चौड़ी है। इसके चारों तरफ सर्वप्रथम एक दीवाल है, जिस पर चारों दिशा में 400 कोस की ऊँची 1–1 अक्शी मेहराबें हैं। इस दीवाल में चारों दिशा के मध्य में 1 महल का चौड़ा दरवाजा है, जिसके दायें–बायें 1–1 महल का लं.–चौ. कमर भर ऊँचा चबूतरा है। दोनों चबूतरों पर कुल 8 थंभ व 10 मेहराबें हैं। इस दीवाल के भीतरी तरफ 12,000 महलों की एक हार है। दरवाजे के सामने महल नहीं हैं। प्रत्येक दो महलों के बीच त्रिपोलियाँ (थंभों की दो हारें व तीन गलियाँ) हैं। प्रत्येक महलों के चारों दिशा में बड़े दरवाजे हैं। बाहरी तरफ के दरवाजों के सामने, हवेली की दीवाल पर भी दरवाजे हैं।

इन महलों के भीतरी तरफ थंभों की एक हार है। ये थंभ, बाहर के थंभों के समान ही मोटे एवं ऊँचे हैं। इन थंभों के भीतरी तरफ 12,000 बगीचों की एक हार है। प्रत्येक बगीचों में नहरों, चेहेबच्चों, फव्वारों की अपरंपार शोभा है। इन बगीचों के भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसकी किनार पर थंभों की एक हार और है। ये थंभ भी बाहर के थंभों के समान मोटे व ऊँचें हैं। इन थंभों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोले हैं। चबूतरे से चारों दिशा के मध्य में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा शोभायमान है। चबूतरे के मध्य तीसरे हिस्से में बगीचें, नहरें, चेहेबच्चे विद्यमान हैं। चबूतरे से खड़े होकर देखने पर हवेली की छत 400 कोस की ऊँचाई पर दिखाई दे रही है, जबकि 12,000 महलों की छत इससे नीचे मात्र 300 कोस की ऊँचाई पर दिखाई दे रही है। गोल हवेली की शोभा भी इसी प्रकार है, अंतर सिर्फ इतना है कि गोल हवेली में महल, बगीचे, चबूतरे सब गोलाई में आये हैं।

नक्शा नं. 83 एक महल की शोभा

प्रत्येक महल के चारों तरफ सर्वप्रथम एक दीवाल है, जिस पर चारों दिशा में 300 कोस की ऊँची 1–1 अक्सी मेहराबें हैं। इस दीवाल में, चारों दिशा के मध्य में 1 मंदिर का चौड़ा दरवाजा तथा दायें–बायें 1–1 मंदिर का लं.–चौ. चबूतरा है। इस दीवाल के भीतरी तरफ 12,000 मंदिरों की एक हार है। दरवाजे के सामने मंदिर नहीं हैं। प्रत्येक दो मंदिरों के बीच में त्रिपोलियाँ हैं। इन मंदिरों के चारों दिशा के मध्य में मुख्य दरवाजे व दायें– बायें चबूतरे हैं। बाहरी तरफ के मुख्य दरवाजों के सामने महल की दीवाल में भी दरवाजो हैं।

इन मंदिरों के भीतरी तरफ एक हार थंभों की है। ये थंभ, महल के बाहर के थंभों के समान मोटे व ऊँचें हैं। इनके भीतरी तरफ 12,000 बगीचों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके किनार पर पुनः थंभों की एक हार है। इन थंभों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोले हैं। चबूतरे के मध्य में

तीसरे हिस्से में बगीचे, नहरें व चेहेबच्चे शोभायमान हैं। चबूतरे से खड़े होकर देखने पर महल की छत तो 300 कोस की ऊँचाई पर दिखाई दे रही है, जबकि 12,000 मंदिरों की छत 200 कोस की ऊँचाई पर ही दिखाई दे रही है, अर्थात् महलों की छत से नीचे दिखाई दे रही है।

नक्शा नं. 84, 85 मंदिर एवं कोठरियों की शोभा

प्रत्येक मंदिर के चारों तरफ सर्वप्रथम एक दीवाल है, जिस पर चारों दिशा में 200 कोस की ऊँची चार अक्शी मेहराबें हैं। इस दीवाल में चारों दिशा के मध्य में 1 कोठरी का चौड़ा दरवाजा तथा दायें–बायें 1–1 कोठरी का लं.–चौ. चबूतरा है। इस दीवाल के भीतरी तरफ सर्वप्रथम 12,000 कोठरियों की एक हार है। दरवाजे के सामने कोठरियाँ नहीं हैं। प्रत्येक दो कोठरियों के बीच में त्रिपोलियाँ हैं। इन कोठरियों के चारों दिशा में दरवाजे हैं। बाहरी तरफ के दरवाजों के सामने मंदिर की दीवाल में भी दरवाजे हैं।

इन कोठरियों के भीतरी तरफ एक हार थंभों की है। ये थंभ मंदिर के बाहर के थंभों के समान मोटे व ऊँचें हैं। इनके भीतरी तरफ 12,000 बगीचों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके किनार पर पुनः थंभों की एक हार है। इन थंभों की मेहराबों में सुंदर हिण्डोले हैं। चबूतरे के मध्य में तीसरे हिस्से में बगीचे, नहरें व चेहेबच्चे शोभायमान हैं। चबूतरे से खड़े होकर देखने पर मंदिर की छत तो 200 कोस की ऊँचाई पर दिखाई दे रही है, जबकि 12,000 कोठरियों की छत 100 कोस की ऊँचाई पर दिखाई दे रही है, अर्थात् मंदिर की छत से नीचे दिखाई दे रही है।

नक्शा नं. 86–एक हवेली के बाहरी दीवाल का दृश्य

एक हवेली के एक दिशा की दीवाल में दो बड़े अक्सी थंभों पर एक बड़ी मेहराब है, जो 300 कोस की चौड़ी व 400 कोस की ऊँची है। हवेली की इस मेहराब के नीचे, मध्य में 1 महल का चौड़ा दरवाजा है, जिसके दायें–बायें 1–1 महल के लं–चौ. कमरभर ऊँचे चबूतरे हैं। इनके दायें–बायें 1500–1500 महलों की अक्सी मेहराबें हैं, जो 300 कोस की ऊँची हैं। महलों की इन प्रत्येक मेहराबों के नीचे, मध्य में 1 मंदिर का चौड़ा दरवाजा है, जिसके दायें–बायें मंदिरों की 1500–1500 अक्शी मेहराबें हैं, जो 200 कोस की ऊँची हैं। मंदिरों की इन प्रत्येक मेहराबों के नीचे कोठरियों की 3000–3,000 अक्शी मेहराबें हैं, जो 100 कोस की ऊँची हैं।

नक्शा नं. 87 माणिक महल एवं मध्य का चबूतरा

12,000 हवेलियों की 12,000 हारों के भीतरी तरफ 12,000 बगीचों की एक हार है। इन बगीचों में नहरों, चेहेबच्चों, फव्वारों की अपरंपार शोभा है। इन बगीचों के भीतरी तरफ एक हांस (400 कोस) का चौड़ा, 12,000 हांस का चारों तरफ घेरकर, भोम भर ऊँचा चबूतरा है। चबूतरे के प्रत्येक हांस के मध्य से, बाहरी व भीतरी तरफ भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। इस चबूतरे पर (12,000 हवेलियों की सीध में) 12,000 माणिक महलों की एक हार है। प्रत्येक दो महलों के मध्य में त्रिपोलिया हैं। इन त्रिपोलियों के बाहरी तरफ गोल गुर्ज हैं। प्रत्येक माणिक महल के बाहरी व भीतरी दीवाल में 2–2 दरवाजे एवं 1–1 झरोखा है। दायें–बायें की दीवाल में 1–1 दरवाजा है। इस प्रकार अनेक रंगों के झिलमिल प्रकाश से युक्त माणिक महल की 12,000 भोमें शोभायमान हैं।

मानिक मोहोल रतनमय , झलकत जोत आकाश ।
नूर पूरन पूर भरया , खोल देख नैन प्रकाश ।। परि. 44/5

इन महलों के भीतरी तरफ, भोम भर नीचे 12,000 बगीचों की एक हार है। इन बगीचों के भीतरी तरफ भोम भर ऊँचा 12,000 हांस का गोल चबूतरा है। इसके प्रत्येक हांस के मध्य से चारों तरफ भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा है। चबूतरे की किनार पर 12,000 थंभों की

एक हार है। ये थंभ 11,980 भोम ऊँचे हैं। इनकी मेहराबों में 11,980 भोम ऊँचे, 12,000 हिण्डोले हैं, जिनमें श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ एक साथ झूलने का आनंद लेते हैं।

कई हिण्डोले पहाड़ में , ऊपर से ढ़ापेल ।
सुख लेवें कई विध के , रूहें करें कई खेल ।। परि. 24/4

इस चबूतरे के तीन हिस्से हुए, मध्य में एक हिस्से में पानी का एक मोटा पाईप है, जो ऊपर टापूमहल की चाँदनी तक गया है। इसके चारों तरफ दूसरे हिस्से में 12,000 बगीचे हैं। पाईप से चारों तरफ बगीचों में, पिचकारी के समान 12,000 बारीक फव्वारे छूट रहे हैं। बगीचों के चारों तरफ तीसरे हिस्से में बैठक है, जिसमें सुंदर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। मध्य का मोटा पाईप, चबूतरे के किनार के थंभ तथा माणिक महल 11,980 भोम तक अलग–अलग गये हैं। 11,981 वे भोम में छज्जे निकले हैं, जिससे ये सब आपस में मिल गये हैं। इसके ऊपर के 20 भोमों में भी ये सब आपस में मिलते हुए आये हैं। इन 20 भोमों में कमर भर ऊँचे चबूतरे पर, बगीचें व स्तून व बैठकें उसी प्रकार शोभायमान हैं।

नक्शा नं. 88 माणिक पहाड़ की चाँदनी पर टापू महल, ताल व देहेलान

नीचे जो माणिक महल का भोम भर ऊँचा चबूतरा है, उसके ठीक ऊपर चाँदनी में भी उतना ही चौड़ा (400 कोस का) 12,000 हांस का भोम भर ऊँचा एक चबूतरा है। जिस पर थंभों की 4 हारें चारों तरफ घेर के आयी हैं। 4 थंभों के मध्य 3 देहलानें हैं। मध्य की देहेलान (थंभों की दो हारें) दो भोम ऊँची हैं जबकि दायें–बायें की देहेलानें एक ही भोम की ऊँची हैं। इस देहेलान के चबूतरे से बाहरी तरफ, प्रत्येक हांस के मध्य भाग में भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। भीतरी तरफ तो भोम भर गहरा ताल है, जो नीचे के बगीचों के ऊपर है। देहेलान के चबूतरे से, इस ताल के जल चबूतरे पर प्रत्येक हांस के मध्य में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकि जगह में कठेड़ा है। फिर जल चबूतरे से जल की जमीन तक घेरकर सीढ़ियाँ उतरी हैं। ताल के भीतरी तरफ 12,000 हांस का भोम भर ऊँचा चबूतरा है। जिस पर 20 भोम ऊँचा टापूमहल शोभायमान है। यह चबूतरा, नीचे के चबूतरे के ठीक ऊपर है। इस चबूतरे से भी ताल के जल चबूतरे पर, प्रत्येक हांस के मध्य में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। इस जल चबूतरे से भी जल की जमीन तक घेरकर सीढ़ियाँ उतरी हैं।

टापूमहल के चबूतरे पर चारों तरफ रौंस की जगह छोड़कर 12,000 महलों की एक हार है, जिसमें चारों दिशा में 4 बड़े दरवाजे हैं, जिनके दायें–बायें 2–2 चबूतरे हैं। इन महलों की बाहरी दीवालों में 2–2 दरवाजें व 1–1 झरोखें हैं। दायें–बायें संधि की तथा भीतर की दीवालों में 1–1 दरवाजे हैं। इन महलों के भीतरी तरफ थंभों की एक हार है। इनके भीतरी तरफ 12,000 बगीचे हैं। इनके भीतरी तरफ चबूतरे के तीसरे हिस्से में पानी का स्तून (पाईप) है, जो नीचे से चला आ रहा है। यह 20 भोम और ऊपर जाकर टापूमहल की चाँदनी में कुण्ड बनता है। इसी प्रकार ऊपराऊपर 20 भोम हैं। बीसों भोमों के महलों के झरोखे अलग–अलग दिखायी दे रहे हैं।

नक्शा नं. 89 टापू महल की चाँदनी

टापूमहल की 21 वीं चाँदनी में मध्य के तीसरे भाग में नीचे से आ रहा स्तून खुलकर कुण्ड बन गया है। चारों दिशा से कुण्ड के जल चबूतरे पर 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। कुण्ड के चारों तरफ बगीचे शोभायमान हैं। बगीचों के चारों तरफ गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। चाँदनी की किनार पर कमर भर ऊँची दीवाल पर सुंदर लाल कांगरी है। स्तून का पानी चाँदनी व सभी 20 भोमों में पानी पहुँचाकर नीचे चबूतरे में आता है। इस चबूतरे की दीवाल में 12,000 हांस के कोनों में 12,000 जालीद्वार हैं, जिनसे यह पानी ताल में आता है। इसी प्रकार देहलान के चबूतरे की दीवाल में भी 12,000 जालीद्वार हैं, जिनसे पानी निकलकर चबूतरे के बाहर एक भोम नीचे स्थित 12,000 कुण्डों में, एक भोम ऊपर से चादरों (धाराओं) के रूप में गिरता है।

नक्शा नं. 90 माणिक पहाड़ की चाँदनी

माणिक पहाड़ के 12,000 भोम ऊपर चाँदनी में सभी हवेलियों की जगह में फल, फूल व घास के बगीचे हैं। त्रिपोलियों की जगह में नहरें हैं। हवेलियों के कोनों की जगह में कुण्ड हैं। इन कुण्डों के चारों कोनों में एक भोम ऊँचे 4 थंभ हैं, जिनकी मेहराबों में चार हिण्डोले हैं। चाँदनी की किनार पर 12,000 गोल गुर्जों की चाँदनी हैं, जिनके ऊपर कमर भर गहरे कुण्ड हैं। 24,000 छोटे चौखूंटे गुर्जों एवं 8 बड़े चौखूंटे गुर्जों की चाँदनी पर बैठकें बनी हैं। इन समस्त गुर्जों व चाँदनी की बाहरी किनार पर कमर भर ऊँची लाल कांगरी की सुंदर शोभा है। देहलानों के चबूतरे के जालीद्वारों से चारों तरफ जिन कुण्डों में पानी गिरता है। उन कुण्डों से पानी, नहरों के द्वारा आगे आकर चाँदनी के इन कुण्डों व नहरों में होते हुए गुर्जों के कुण्डों में पहुँच जाता है। जहाँ से आगे चादरों के रूप में गिरता है।

नक्शा नं. 91,92 – माणिक पहाड़ के चारों तरफ बगीचे, नहरें तथा महानद

माणिक पहाड़ के चबूतरे से लगकर, 12,000 गुर्जों के सामने, भोम भर नीचे रौंस पर 12,000 कुण्ड हैं। इन कुण्डों के ऊपर, चबूतरे की दीवाल में 12,000 जालीद्वार हैं, जिनसे पानी निकलकर चादरों (धाराओं) के रूप में एक भोम नीचे इन कुण्डों में गिरता है। इन कुण्डों के सामने आड़ी–खड़ी 12,000 नहरों की 12,000 हारें तथा 12,000 तालों की 12,000 हारें हैं। इनके बीच–बीच में 12,000 बगीचों की 12,000 हारें हैं, जो 300 कोस के लं.–चौ. हैं। प्रत्येक बगीचे के चारों दिशा में नहरें व चारों कोनों में ताल हैं। इन बगीचों में 5 भोम ऊँचें वृक्ष हैं। प्रत्येक नहर 33 कोस की चौड़ी है, जिसके दायें–बायें 33–33 कोस की चौड़ी पाल है। इस पाल में मध्य के 11 कोस में फुलवाड़ी है, जिसके दायें–बायें 11–11 कोस की रौंसें हैं। प्रत्येक ताल 33 कोस का लं.–चौ. है, जिसके चारों तरफ 33–33 कोस की चौड़ी पाल है। इस पाल में मध्य के 11 कोस में चारों तरफ महल हैं, जिनके दायें–बायें 11–11 कोस में रौंसें हैं। इन महलों की ऊँचाई 5 भोम है। ताल दूजी भोम से ढ़क गया है। ऊपर की भोमों में ताल की जगह में कमर भर ऊँचा चबूतरा है।

इन सब बगीचों, नहरों, तालों को चारों तरफ से घेरकर 12,000 हांस का महानद शोभायमान है। इसकी चौड़ाई 3 हांस की है। इसमें से मध्य के एक हांस (लगभग 6,000 कोस) में महानद है, जिसके दायें–बायें 1–1 हांस की चौड़ी पाल है। पाल के पुनः 3–3 भाग हैं, मध्य के एक भाग में कमर भर ऊँची पाल है तथा दायें–बायें के 1–1 भाग में रौंसें हैं। पाल से प्रत्येक हांस के मध्य में, दोनों तरफ रौंस पर सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। महानद के दोनों तरफ की रौंस से, महानद के जल चबूतरे पर भी प्रत्येक हांस के मध्य में 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। फिर जल की जमीन तक सीढ़ियाँ उतरी हैं। महानद के दोनों तरफ की कमर भर ऊँची पाल (की दोनों किनार) पर थंभों की 2–2 हारें चारों तरफ घेरकर आयी हैं। इनकी छत महानद पर भी है। इनकी मेहराबों में तथा महानद के ऊपर की मेहराबों में भी हिण्डोले शोभायमान हैं। चार हिण्डोलों की ताली जल पर भी पड़ती है।

माणिक पहाड़ के चारों तरफ की सभी नहरों का पानी महानद की पाल के नीचे होकर महानद में समाता है, जिससे महानद एक विशाल रूप धारण कर लेता है। महानद की तरफ से 12,000 तालों की जो पहली हार है, उसके महल एक भोम ऊँचे हैं। इससे लगकर तालों की जो दूसरी हार है, उसके महल दो भोम ऊँचे हैं। इसके आगे तालों की जो तीसरी हार है, उसके महल तीन भोम ऊँचे हैं। इसके आगे तालों की जो चौथी हार है, उसके महल चार भोम ऊँचे हैं। इसके आगे तालों की जितनी भी हारें हैं, उनके महल पाँच भोम ऊँचे हैं। बगीचों के वृक्षों की ऊँचाई भी महलों के समान है। माणिक पहाड़ के चारों दिशा के सीढ़ियों के सामने 100 कोस की चौड़ी रौंसें निकली हैं, जो सीधे महानद की रौंस से जाकर मिल गयी हैं।

नक्शा नं. 93 माणिक पहाड़ के चारों तरफ ताल के महलों की चाँदनी, महाबिलंद हिण्डोले तथा झरनें

माणिक पहाड़ के चबूतरे की तरफ से पहली हार के जो 12,000 ताल के महल हैं, उनकी छठी चाँदनी से चारों कोनों के महल अलग–अलग 12,000 भोम तक गये हैं, अर्थात् माणिक पहाड़ के एक भोम नीचे तक आये हैं क्योंकि माणिक पहाड़ भोम भर ऊँचे चबूतरे पर है। इन एक–एक महल के अंदर बेशुमार मंदिर, कोठरी, बगीचे हैं। 12,000 भोम ऊपर इन चारों कोनों के महलों के बीच मेहराबें हैं, जिन पर एक छत (चाँदनी) है। इन चार मेहराबों में चार महाबिलंद हिण्डोले हैं, जो छठी चाँदनी पर लटक रहे हैं। ये हिण्डोले इतने बड़े हैं कि एक ही हिण्डोले में श्रीराजश्यामाजी व 12,000 सखियाँ एक साथ बैठकर झूलते हैं।

बड़े पहाड़ जो हिण्डोले , बारे हजार बैठत ।
एकै छप्पर खट के , हक हादी साथ हींचत ।। परि. 24/2

12,000 भोम ऊपर इन ताल के महलों की चाँदनी के मध्य में 33 कोस का लं.–चौ. ताल है। इसके चारों तरफ 22 कोस की चौड़ी पाल है, जिसके बाहरी व भीतरी तरफ कठेड़ा है। यहाँ से एक छज्जा निकलकर माणिक पहाड़ के गोल गुर्ज से मिल गया है, जिसके ऊपर मध्य के 33 कोस में नहर व दायें–बायें 22–22 कोस में पाल है। पाल के दोनों तरफ कठेड़ा है। माणिक पहाड़ के गुर्जों के कुण्डों का पानी, एक भोम ऊपर से चादरों (झरनों) के रूप में इन नहरों में गिरता है, फिर पानी आगे जाकर ताल में मिल जाता है। फिर आगे एक भोम नीचे अगली नहर में झरने के रूप में गिरता है। इस ताल के दायें–बायें भी छज्जे निकले हैं, जो दायें–बायें के ताल के महलों की चाँदनी से मिले हैं। इन पर भी नहरें हैं। यहाँ से ताल के चारों कोनों के महल पुनः एक भोम उठे हैं और ताल के ऊपर छत (चाँदनी) हो गयी है। इस चाँदनी पर मध्य में कमर भर ऊँचा चबूतरा है तथा चारों कोनों में चार गुम्मट शोभायमान हैं। चबूतरे पर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ रखी हैं। यहाँ से पुनः तीन तरफ छज्जे निकले हैं, एक छज्जा गुर्जो की तरफ तथा दो छज्जे दायें–बायें निकले हैं, जिनके दोनों किनार पर कठेड़ा है। इसी तरह से चारों तरफ पहली हार के ताल के महलों की शोभा है। इस पर चलते हुए माणिक पहाड़ की परिक्रमा कर आईये।

माणिक पहाड़ के चबूतरे की तरफ से ताल के महलों की जो दूसरी हार है, उसकी छठी चाँदनी से चारो कोनों के महल 12,000 से एक भोम कम ऊँचे गये हैं। ऊपर उसी प्रकार मेहाराबों में महाबिलंद हिण्डोले व चाँदनी में ताल है। यहाँ से तीन तरफ नहरों के छज्जे निकले हैं। दो छज्जे दायें–बायें के ताल के महलों से लगे हैं व एक छज्जा पहली हार के ताल के महलों से लगा है, जिसमें प्रथम हार के तालों से, एक भोम ऊपर से झरने के रूप में पानी गिरता है। यह पानी नहरों के द्वारा दूसरे हार के तालों में आता है। फिर झरनों के रूप में एक भोम नीचे अगली नहरों में गिरता है। तीसरी हार के ताल के महल 12,000 में 2 भोम कम ऊँचे हैं। इस प्रकार चारों तरफ ताल के महल 1–1 भोम कम ऊँची होती गयी हैं। 12,000 गुर्जों के कुण्डों का पानी 1–1 भोम नीचे गिरते हुए महानद से लगती हुयी अंतिम नहर में गिरता है। फिर महानद के पाल के नीचे होकर महानद में समा जाता है। इस प्रकार माणिक पहाड़ के चारों तरफ झरनों की अद्भुत शोभा दिखाई दे रही है।

कई पहाड़ झिरने झिरें , कई नेहरें ऊपर चली जाएँ।
कई उतरें ऊपर से चादरें , कई तालों बीच आए समाएँ ।। परि. 24/11

नक्शा नं. 94 – माणिक पहाड़ का खड़ा दृश्य

भोम भर ऊँचे चबूतरे पर 12,000 हांस का, 12,000 भोम ऊँचा माणिक पहाड़ शोभायमान है, जिसकी अपार तेजोमयी लाल किरणें निकलकर आकाश तक जाती दिख रही हैं। इसकी चाँदनी में बगीचों, नहरों, चेहेबच्चों की बेमिशाल शोभा है। चाँदनी के मध्य में देहेलान, ताल तथा 20 भोम ऊँचा टापूमहल शोभायमान है। माणिक पहाड़ के चारों तरफ 1–1 भोम कम होते हुए ताल के महल, मेहराबों में महाबिलंद हिण्डोले, तालों की चाँदनी में सिंहासन, कुर्सियाँ तथा चारों तरफ एक–एक भोम नीचे गिरते हुए 12,000 झरनों की

12,000 हारें इस पहाड़ की शोभा को अद्भुत स्वरूप प्रदान कर रही हैं। इन सबको घेरकर महानद है। इस पर भी हिण्डोलों की सुंदर शोभा है। प्यारे सुंदरसाथ जी, याद कीजिये, इन सुखों को, जिन्हें हम प्राण प्रियतम श्रीराजजी महाराज के साथ इन महलों, वनों, पहाड़ों में लेते थे।

ऐ सुख हमारे कहाँ गये , ऐ जो खेल होत दिन रात ।
हक के साथ हम सब रूहें , हँस हँस करती बात ।। परि. 24/13

नक्शा नं. 95 बड़ोवन, मधुवन, महावन तथा वन की नहरें

माणिक पहाड़ की हद (चौड़ाई) में, जवेरों के महलों को चारों तरफ से घेरकर तीन वन क्रमशः बड़ोवन, मधुवन, महावन शोभायमान हैं। जवेरों के महलों को घेरकर चारों तरफ सर्वप्रथम बड़ोवन हैं, जिनके वृक्ष एक भोम ऊँचे हैं, किंतु इनके एक ही भोम में 12,000 भोमें हैं। बड़ोवन को घेरकर चारों तरफ मधुवन हैं, जो बड़ोवन की दुगुनी चौड़ी जगह में है। मधुवन की ऊँचाई 2 भोम है किंतु 2 भोमों में ही 24,000 भोमें हैं। मधुवन को घेरकर, मधुवन की दुगुनी चौड़ी जगह में महावन है, जिनके वृक्ष चार भोम ऊँचे हैं किंतु इन चार भोमों में ही 48,000 भोमें हैं। बड़ोवन, मधुवन, महावन तथा माणिक पहाड़ को चारों तरफ से घेरकर वन की नहरें (महल) हैं, जो 5 भोम ऊँचे हैं किंतु 1–1 भोम में 12,000–12,000 भोमें होने से कुल 60,000 भोमें हो गयी हैं। इस प्रकार बड़ोवन, मधुवन, महावन तथा वन की नहरें चार सीढ़ियों के समान दिखायी दे रही हैं। इन सबकी डालियाँ आपस में मिली हुई हैं, जिससे बड़ोवन से वन की नहरों तक कहीं भी आ जा सकते हैं। बड़ोवन, मधुवन, महावन तथा वन की नहरों की शोभा एक ही समान है, केवल ऊँचाई का फर्क है।

इन वनों में 12–12 सौ कोस के लंबे–चौड़े बेशुमार चौक हैं। प्रत्येक चौक के चारों दिशा में नहरें तथा चारों कोनों में चेहेबच्चे हैं। ये नहरें 400 कोस की चौड़ी हैं। जिसमें से मध्य में 200 कोस में पानी है तथा दायें–बायें 100–100 कोस की पाल है। इस पाल के 3–3 भाग हैं। मध्य के एक भाग 33 कोस में फुलवाड़ी तथा दायें–बायें 33–33 कोस की रौंसें हैं। इसी प्रकार सभी नहरों की शोभा है। प्रत्येक चौक में, मध्य में 400 कोस का लंबा–चौड़ा कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके चारों दिशा से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। चबूतरे के मध्य में एक बहुत भारी (बड़ा, मोटा) पेड़ है जिसमें सर्वप्रथम एक भोम (400 कोस) तक थड़ ही सीधा चला गया है। थड़ में एक दरवाजा है, जिसके सामने थड़ के अंदर से, ऊपर की भोमों में जाने हेतु सीढ़ियाँ हैं। इसके ऊपर प्रत्येक भोम में माणिक पहाड़ की एक हवेली के समान ही बेशुमार महल, मंदिर, कोठरियाँ, बगीचे, नहरें, चेहेबच्चे आदि शोभायमान हैं किंतु ये सारी शोभा वृक्षों, फूलों, पत्तों की ही है। इसी प्रकार ऊपराऊपर हजारों भोम शोभायमान हैं।

बन छाया है मोहोल जो , इत मोहोल बने बन के ।
जानो सोभा सबसे अतंत है, सब सुख लेती रूहें ए ।। परि. 25/1
इन भोम भोम कई मंदिर , पेड़ डारी कई दीवाल ।
छाया बनी पात फूल की , कई बन मंदिर इन हाल ।। परि. 27/49

इन हजारों भोमों के अंदर बेशुमार महल, मंदिर, कोठरियाँ हैं किंतु यहाँ कोई भी जगह वीरान नहीं है। इन सभी महलों, मंदिरों में बेशुमार पशु–पक्षी, जानवर रहते हैं, जो दिन–रात 'पिया–पिया' करते रहते हैं, धनी के गुण गाते रहते हैं। श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ जब यहाँ आते हैं, तो बड़े प्रेम से उनका स्वागत करते हुए ये पशु–पक्षी इन्हें फूलहार पहनाते हैं, मेवा, मिठाई खिलाते हैं। अनेक प्रकार से सेवा करते हैं एवं अनेक प्रकार से नाच गाकर, खेल करतब दिखाकर हमें रिझाते हैं।

कई फौजे पसुअन की , कई फौजे जानवर ।
जिमी खाली कहुँ न पाईये , बसत अर्श लसकर ।। परि. 26/51
जिमी बन ए लस्कर , जिमी बस्ती न कहूँ वीरान ।
सब आए मुजरा करत हैं , आगूं अर्श सुभान ।। परि. 26/52

इन पेड़ों के नीचे चबूतरे के चारों तरफ बेशुमार बगीचें, नहरें, चेहेबच्चे शोभायमान हैं, जिनके वृक्षों की ऊँचाई एक भोम है। इस प्रकार वन के महलों में बेशुमार सुख हैं, जहाँ श्रीराजजी महाराज अपनी आत्माओं को लाकर बेशुमार सुख प्रदान करते हैं। **जहाँ राज रमत हैं , बन की जो मोहलात ।**

अत सुंदर सोभा देत है, सो क्यों कर कहों विख्यात ।। बीतक 69/75

नक्शा नं. 96 , 97 छोटी रांग : चार हार हवेली

वन की नहरों को चारों तरफ से घेरकर छोटी रांग (किला) शोभायमान है। जिसमें आड़ी–खड़ी नहरों के बीच 32 हांस में, 32 चौकों (हवेलियों) की 4 हारें हैं। प्रत्येक चौक के चारों दिशा में चार नहरें तथा चारों कोनों में चार चेहेबच्चे हैं। ये नहरें 1200 कोस की चौड़ी हैं, जिसमें से मध्य में 400 में पानी है तथा दायें–बायें 400–400 कोस की पाल है। पाल के पुनः तीन भाग हैं। मध्य के एक भाग (133 कोस) में कमर भर ऊँची पाल है, जिसके दायें–बायें 1–1 भाग में रौंसें हैं। चौक के मध्य तीसरे हिस्से में भोम भर ऊँचा एक चबूतरा है। चारों दिशा के मध्य में भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा है। कठेड़े के भीतरी तरफ 400 कोस की चौड़ी रौंस की जगह छोड़कर एक बड़ी हवेली है, जिसके अंदर 12,000 हवेलियों की 12,000 हारें हैं। इनकी ऊँचाई 5 भोम है किंतु 1–1 भोम में 12–12 हजार भोमें हैं, तो कुल 60,000 भोमें हुयीं। एक भोम 400 कोस का ऊँचा है। प्रत्येक दो हवेलियों के मध्य में त्रिपोलियाँ हैं। त्रिपोलियों की चौड़ाई 312 कोस की है, जिसमें 104–104 कोस की तीन गलियाँ हैं। एक हवेली भी 312 कोस की लंबी–चौड़ी है, जिसमें चारों दिशा के मध्य में 104 कोस की दरवाजे की मेहराब है तथा दायें–बायें की दीवाल के सामने गली में 104–104 कोस के लं.–चौ. कमर भर ऊँचे दो चबूतरे हैं, जिन पर 8 थंभ व 10 मेहराबें हैं। इस प्रकार प्रत्येक हवेली की चारों दिशा में चार दरवाजे व 8 चबूतरे हैं। सभी भोमों की शोभा इसी प्रकार है। इनकी सभी भोमों से चारों तरफ 400 कोस की रौंस तक छज्जे निकले हैं जिनकी किनार पर कठेड़े शोभायमान हैं।

<u>एक हवेली की शोभा</u> :– एक हवेली में सर्वप्रथम 6,000 मंदिरों की एक हार है, जिसमें चारों दिशा के मध्य में 1–1 मंदिर का चौड़े दरवाजे हैं। इनके भीतरी तरफ 6–6 हजार थंभों की दो हारें हैं। इनके भीतरी तरफ 6 हजार मंदिरों की दूसरी हार है। इनके भीतरी तरफ पुनः 6–6 हजार थंभों की दो हारें हैं। इनके भीतरी तरफ 12,000 महलों की 12,000 कतारें हैं। प्रत्येक दो महलों के बीच में त्रिपोलियाँ हैं। प्रत्येक महलों के अंदर 12,000 मंदिरों की 12,000 कतारें हैं। प्रत्येक दो मंदिरों के मध्य त्रिपोलियाँ हैं। प्रत्येक मंदिरों के अंदर 12,000 कोठरियों की 12,000 हारें हैं। इन महलों, मंदिरों व कोठरियों में बेशुमार सुख सामग्री सेज्या, सिंहासन, हिण्डोले आदि शोभायमान हैं। प्रत्येक बड़ी हवेली के चारों तरफ आठ बगीचें हैं। चार बगीचे चारों दिशा में हैं तथा चार बगीचे चारों कोनों में हैं, जिनमें बेशुमार वृक्ष, नहरें, चेहेबच्चे आदि शोभायमान हैं। चारों दिशा के बगीचों के तीसरे हिस्से में, भोम भर की सीढ़ियों के सामने चाँदनी चौक व लाल–हरे वृक्ष रंगमहल के समान शोभायमान हैं। इन बगीचों के वृक्षों की ऊँचाई, हवेलियों के बराबर है। चारों हार हवेलियों की चाँदनी व वृक्षों की चाँदनी मिल जाने से एक ही चाँदनी रंगबिरंगी चित्रकारी से युक्त दिख रही है। जिससे पूरे परमधाम के चारों ओर परिक्रमा लगा सकते हैं।

जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ यहाँ आते हैं, तो बगीचों में अनेक प्रकार से खेल रामतें, हांस–विलास करने के बाद, हवेलियों की ऊपर के भोमों के छज्जों में बैठकर मीठी बातें करते हैं। तथा चारों तरफ के हरियाली पूर्ण सुंदर दृश्यों का आनंद लेते हैं। यहाँ अनेक प्रकार के पशु–पक्षी धनी के दर्शन को आते हैं, अनेक प्रकार के फूलहार, मेवा मिठाई लाते हैं। अनेक प्रकार से खेल–कूदकर सखियों को हँसाते हैं। फिर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ चाँदनी में जाकर, चाँदनी रात में नृत्य का आनंद लेते हैं। फिर रात के नौ बजे रंगमहल की तरफ प्रस्थान करते हैं।

नक्शा नं. 98 – बड़ी रांग की महाहवेलियाँ

एक सागर की चारों दिशा एवं चारों कोनों में भोम भर ऊँचे चबूतरे पर आठ महाहवेलियाँ शोभायमान हैं। उनमें से एक महाहवेली का वर्णन इस प्रकार है। भोम भर ऊँचे चबूतरे की किनार से 1200 कोस की चौड़ी

रौंस की जगह छोड़कर 12,000 हवेलियों की 12,000 हारें हैं। प्रत्येक हवेली 1200 कोस की लंबी–चौड़ी है। प्रत्येक दो हवेलियों के मध्य में 1200 कोस के चौड़े त्रिपोलियाँ हैं, जिनमें 400–400 कोस की चौड़ी तीन गलियाँ हैं। इन हवेलियों की ऊँचाई 12,000 भोम की है किंतु एक–एक भोम में 12–12 हजार भोमें हैं, तो कुल 14 करोड़ 40 लाख भोम हुए। ये प्रत्येक भोम 1–1 कोस के ऊँचे हैं। इन प्रत्येक भोमों से 1200 कोस के रौंस तक छज्जे निकले हैं। प्रत्येक हवेलियों व त्रिपोलियों के सामने चबूतरे से भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। 12,000 हवेलियों के सामने, चबूतरे से भोम भर नीचे 12,000 बगीचे हैं, जो 1200 कोस के चौड़े एवं 4 लाख कोस के लंबे हैं। प्रत्येक बगीचों में सीढ़ियों के सामने रंगमहल के समान ही चाँदनी चौक तथा लाल–हरे वृक्ष शोभायमान हैं। इसी प्रकार 12,000 त्रिपोलियों के सामने, चबूतरे से भोम भर नीचे 1200 कोस की चौड़ी व 4 लाख कोस के लंबी 12,000 रौंसें हैं (वैसे तो 12,000 हवेलियों के मध्य 11,999 त्रिपोलिये होते हैं किंतु 12,000 हवेलियों के दायें–बायें आधे–आधे त्रिपोलियें अर्थात् 1 थंभ की हारें व डेढ़ गलियाँ हैं, जिनके सामने दो आधी रौसें 600 कोस की चौड़ी व 4 लाख कोस की लंबी हैं। यहाँ आधी–आधी दो त्रिपोलियों को एक गिना गया है तथा उसी प्रकार आधी–आधी दो रौंसों को एक गिना गया है) इसी प्रकार प्रत्येक महाहवेली के दो दिशा में बगीचें व रौंसें हैं तथा दो दिशा में बड़े त्रिपोलिये हैं। किंतु सागर के चारों कोनों की जो महाहवेलियाँ हैं, उनके तीन दिशा में बड़े त्रिपोलिये हैं, केवल एक ही दिशा में (बाहर की तरफ) बगीचें व रौंस हैं। सभी महाहवेलियाँ इन बड़े त्रिपोलियों के माध्यम से आपस में जुड़ी हुयी हैं। बगीचों के आगे भीतरी तरफ सागर है तथा छोटी रांग की तरफ महानद है। बड़े त्रिपोलियों के सामने सागर की तरफ, भोम भर नीचे बहुत बड़ा रेती का मैदान है। बड़े त्रिपोलियों के बाहरी तरफ गोल गुर्ज हैं, जिनके सामने छोटी रांग की तरफ महानद निकली है। जिसमें सागर से गुप्त रूप से पानी आ–जा रहा है। इसी प्रकार 80 महाहवेलियाँ अनेक रंगों की जगमगाहट से युक्त आकाश को छूती दिखायी दे रही हैं।

सागर किनारे मोहोल जो , सो जाए लगे आसमान ।
ए मोहोल जुदी जुदी जिनसों, इत सुख चाहिए सागर समान।। परि. 25/9

नक्शा नं. 99 एक हवेली की शोभा

एक महाहवेली में जो 12,000 हवेलियों की 12,000 हारें हैं, उनमें से एक हवेली की शोभा इस प्रकार है। एक हवेली 1200 कोस की लंबी–चौड़ी है। जिसके चारों दिशा के मध्य में 400 कोस की चौड़ी दरवाजे की मेहराब है तथा दायें–बायें दीवाल के सामने गली में 400–400 कोस के लं.–चौ. दो कमर भर ऊँचे चबूतरे हैं। जिन पर 8 थंभ व 10 मेहराबें शोभायमान हैं। बाहरी व भीतरी तरफ पहली हार जो 12,000 हवेलियों की है, उनके रौंस की तरफ के 24,000 चबूतरे, चौखूंटे गुर्जों रूप में ऊपर जाते दिख रहे हैं। उनके बीच–बीच में 12,000 दरवाजों की मेहराबें भी शोभायमान हैं। प्रत्येक हवेली के अंदर की शोभा, छोटी रांग की हवेलियों के ही समान है। सर्वप्रथम 6,000 मंदिरों की एक हार है। चारों दिशा के मध्य में 1–1 मंदिर का चौड़ा दरवाजा है। इनके भीतरी तरफ 6–6 हजार थंभों की दो हारें हैं। इनके भीतरी तरफ 6,000 मंदिरों की दूसरी हार है। इनके भीतरी तरफ पुनः 6–6 हजार थंभों की दो हारे हैं। इनके भीतरी तरफ 12,000 महलों की 12,000 कतारें हैं। एक महल के अंदर 12,000 मंदिरों की 12,000 कतारें हैं। एक मंदिर के अंदर 12,000 कोठरियों की 12,000 कतारें हैं।

नक्शा नं. 100 मध्य के त्रिपोलियों के मध्य की हवेली

एक महाहवेली में एक दिशा में 12,000 हवेलियाँ हैं। 6–6 हजार हवेलियाँ दोनों तरफ छोड़कर मध्य में जो त्रिपोलिया है, ऐसी आड़ी–खड़ी दोनों तरफ के त्रिपोलियों की मध्य में जहाँ चौकड़ी पड़ी है। वहाँ मध्य के 400 कोस के लं.–चौ. चौक में एक छोटी हवेली है। इसमें सर्वप्रथम महलों की एक हार है, जिसके चारों दिशा के मध्य में एक बड़ा दरवाजा है। इनके भीतरी तरफ थंभों की एक हार है। थंभों के भीतरी

तरफ बगीचों की एक हार है। फिर मध्य में कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसकी किनार पर पुनः थंभों की एक हार है। इनकी मेहराबों में सुंदर हिण्डोले हैं। चबूतरे की चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा शोभायमान है। चबूतरे के मध्य में एक पानी का स्तून (पाईप) है, जो चाँदनी के टापूमहल की चाँदनी तक गया है। चबूतरे के ऊपर, स्तून के चारों तरफ सुंदर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ रखी हैं।

नक्शा नं. 101–एक महाहवेली की चाँदनी पर टापूमहल, ताल व देहेलान

माणिक पहाड़ की चाँदनी के समान ही, प्रत्येक महाहवेलियों की चाँदनी पर भी टापूमहल, ताल व देहेलान शोभायमान है। फर्क सिर्फ इतना है कि माणिक पहाड़ की चाँदनी में ये सब गोलाई में थे और यहाँ चौरस हैं। एक महाहवेली की चाँदनी के मध्य तीसरे हिस्से में एक भोम भर ऊँचा चौरस चबूतरा है, जिसके तीन भाग हैं। मध्य के एक भाग में 20 भोम ऊँचा टापूमहल है। इसके चारों तरफ दूसरे भाग में भोम भर गहरा ताल है। ताल के चारों तरफ तीसरे भाग में देहेलान शोभायमान है, जिसमें थंभों की 4 हारें (3 देहेलान) चारों तरफ घेरकर आयी हैं। इनमें से मध्य के दो थंभों की हारें (मध्य की देहेलान) दो भोम ऊँची हैं। दायें–बायें के थंभों की 1–1 हारें (दायें–बायें की देहेलानें) 1–1 भोम ऊँची हैं। देहेलान के चबूतरे से बाहर की तरफ जगह–जगह भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। भीतरी तरफ ताल के जल चबूतरे पर भी 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। टापूमहल के चबूतरे से भी जल चबूतरे पर 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं। दोनों जल चबूतरों से जल की जमीन तक भी घेरकर सीढ़ियाँ उतरी हैं। टापूमहल के चबूतरे पर चारों तरफ रौंस की जगह छोड़कर 48,000 महलों की एक हार है, जिसके चारों दिशा के मध्य में बड़े दरवाजे हैं, जिनके दायें–बायें 1–1 चबूतरे हैं। इन चबूतरों पर 8 थंभ व 10 मेहराबें शोभित हो रही हैं। इन महलों के भीतरी तरफ बगीचों की एक हार है जिसमें नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारे शोभायमान हैं। बगीचों के भीतरी तरफ एक कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसकी किनार पर पुनः थंभों की एक हार है। चारों दिशा के मध्य से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। चबूतरे के मध्य में एक पानी का स्तून है, जो नीचे से चला आ रहा है तथा 20 भोम और ऊपर जाकर टापूमहल की चाँदनी में खुलता है।

नक्शा नं. 102– टापूमहल की चाँदनी

टापूमहल की 21 वीं चाँदनी में मध्य तीसरे भाग में, एक कमर भर ऊँचा चबूतरा है। जिसके चारों दिशा से 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। चबूतरे के मध्य में नीचे का स्तून खुलकर कुण्ड बन गया है। चारों दिशा के मध्य से कुण्ड के जल चबूतरे पर 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। चबूतरे पर सुंदर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। चबूतरे के चारों तरफ चाँदनी के किनार तक बेशुमार बगीचे, नहरें व चेहेबच्चे हैं। चाँदनी की किनार पर चारों तरफ कमर भर ऊँची लाल कांगरी जगमगा रही है। चारों दिशा में (गुर्जों पर) 2–2 गुम्मट व मध्य में 1–1 दरवाजों की कमानें शोभित हो रही हैं।

नक्शा नं. 104,105– एक महाहवेली की चाँदनी

एक महाहवेली की चाँदनी में मध्य तीसरे हिस्से में जो टापूमहल, ताल व देहेलान हैं, इनके चारों तरफ चाँदनी में बेशुमार बगीचे, नहरें व चेहेबच्चे शोभायमान हैं, जिनमें कई प्रकार के मेवों के, फूलों के तथा घास के बगीचे हैं। बड़े त्रिपोलियों की चाँदनी पर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ शोभायमान हैं। चाँदनी की बाहरी व भीतरी किनार पर भोम भर ऊँची दीवाल है, जो घूमने–फिरने के वास्ते चौड़ी है। इस दीवाल के ऊपर रौंस बन गयी है जिससे चाँदनी पर जगह–जगह भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। दोनों

दीवालों से लगकर बाहरी तरफ (चौखूंटे गुर्जों पर) 24–24 हजार गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताकाएँ शोभा ले रही हैं तथा उनके बीच–बीच में 12–12 हजार दरवाजों की सुंदर कमानें शोभा ले रही हैं। इन कमानों के ऊपर कंगूरों व कांगरी की सुंदर शोभा दिखाई दे रही है। कंगूरों के ऊपर भी कलश, ध्वजा, पताका शोभित हो रहे हैं। दीवालों के बाहरी किनार पर भी इसी प्रकार सुंदर लाल कांगरी व कंगूरे हैं, जो बिजली के बल्बों से भी कोट गुना अधिक झिलमिल करते हुए सुशोभित हैं। ऐसी शोभा प्रत्येक महाहवेलियों की चाँदनी की है।

नक्शा नं. 103 एक सागर के चारों तरफ का दृश्य तथा सागरों में टापूमहल

एक सागर के चारों तरफ सर्वप्रथम 400 कोस की चौड़ी जलरौंस है, जहाँ हाथ लगता जल है। जल रौंस से जल चबूतरे पर, प्रत्येक बगीचे व रौंस के सामने 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। जल रौंस के बाहरी तरफ, सागर की एक दिशा में 12,000 बगीचे तथा 12,000 रौंसे शोभायमान हैं। प्रत्येक बगीचे के मध्य से एक–एक छोटी रौंस निकलकर चाँदनी चौक से मिल गयी हैं। इस प्रकार चारों दिशा में कुल 48,000 बगीचे व 48,000 रौंसें हैं। इन बगीचों में रंगबिरंगे वृक्ष दोरीबंध (कतारबद्ध) रूप से शोभायमान हैं, जिनकी भोमें महाहवेलियों की भोमों से मिलती हुई ऊपर गयी हैं। इन वृक्षों की प्रत्येक भोम की डालियों ने जल चबूतरे तक छाया प्रदान की है, जिनकी किनार पर प्रत्येक भोम में कठेड़ा शोभायमान है, जिससे ये सागर के ऊपर, झरोखों के समान दिखायी देते हैं। यहाँ श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ बैठकर सागर के सुंदर दृश्य तथा लहरों की मधुर गर्जना का आनंद लेते हैं। **फिरता चारों तरफ चबूतरा , जहाँ हाथ लगत सागर।**

छज्जे मोहोल आये तिन पर , तहाँ बैठक कठेड़े ऊपर ।। बड़ी वृत्त 118/5
जब बैठत तरफ दरियाव के , सागर लेहेरी देखत नूर।
सुख रूप नैना लेत हैं , सो क्यूँ कर कहूँ जहूर ।। बड़ी वृत्त 118/8

सागर के चारों कोनों में नूरमयी रेती का मैदान है, जिनकी तेजोमयी किरणें थंभ रूप में निकलकर आकाश तक जाती दिख रही हैं। यहाँ पश्चिम की चौगान के समान ही अनेक प्रकार से दौड़ना, खेलना व सवारी की लीला होती है। इन बगीचों, रौंसों व रेती के मैदान के आगे चारों तरफ भोम भर ऊँचा चबूतरा है, जिस पर चारों दिशा व चारों कोनों में कुल आठ महाहवेलियाँ हैं। चारों दिशा की महाहवेलियों के 48,000 दरवाजों की मेहराबें तथा 96,000 चौरस गुर्ज आकाश की तरफ जाते दिखाई दे रहे हैं, जिनके ऊपर चाँदनी में 96,000 गुम्मटों व 48,000 दरवाजों की कमानों, कंगूरों, कलश, कांगरियों की अद्भुत शोभा दिखाई दे रही है।

इन नूर रांग की रोसनी , क्यों कर कहूँ जुबां इन मुख ।
द्वार द्वारी कलस कंगूरे , ए लें हक हुकमें मोमिन सुख ।। परि. 43/42

सागर के छोटी रांग की तरफ की जो महाहवेली है। उसके दायें–बायें के गोल गुर्जों के सामने महानद निकली है। हम यदि छोटी रांग की तरफ मुख करके खड़े हों तो बायें तरफ के महानद में सागर से गुप्त रूप से घड़नालों के द्वारा पानी आता है, जो पूरे परमधाम में कई जगह घूमकर, दायें तरफ के महानद के द्वारा वापस सागरों में गुप्त घड़नालों के द्वारा समा जाता है।

सागर से नहरें आवत , पानी जुदा–जुदा फैलात ।
कई विध मोहलों होए के , फेर सागरों में समात ।। परि. 23/11

टापूमहल :– एक सागर के मध्य तीसरे हिस्से में 12,000 टापूमहलों की 12,000 कतारें हैं। कुल 14 करोड़ 40 लाख टापूमहल हैं। प्रत्येक दो टापूमहलों के मध्य उतनी ही जगह में जल (सागर) है। एक टापू 600 कोस का लंबा–चौड़ा है, जिसके मध्य में तीन चौथाई हिस्से (450 कोस) में भोम भर ऊँचा चौरस चबूतरा है। इसके चारों दिशा के मध्य से भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर सुंदर कठेड़ा शोभायमान है। कठेड़े की भीतरी तरफ 100 कोस की चौड़ी रौंस की जगह छोड़कर 250 कोस की

लंबी–चौड़ी एक हवेली है। जिसके चारों दिशा के मध्य में 84 कोस की दरवाजे की मेहराब है तथा दायें–बायें 83–83 कोस के लंबे–चौड़े कमरभर ऊँचें दो चबूतरे हैं। इन चबूतरों पर 8 थंभ व 10 मेहराबें हैं। जो चौरस गुर्ज के रूप में ऊपर जाते दिखाई दे रहे हैं। इस हवेली की शोभा बड़ी रांग की हवेलियों के समान ही है। बड़ी रांग के समान इनकी ऊपराऊपर 14 करोड़ 40 लाख भोमें हैं। इनकी प्रत्येक भोमों से चारों तरफ 100 कोस की रौंस तक छज्जे निकले हैं, जिन पर सुंदर बैठकें बनी हैं, जहाँ बैठकर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ चारों तरफ के सुंदर दृश्य को निहारते हुए मीठी बातें करते हैं।

टापूमहल के चबूतरे की चारों दिशा व चारों कोनों में 8 बगीचे हैं। दिशा के चारों बगीचों में सीढ़ियों के सामने 1–1 चाँदनी चौक व लाल–हरे वृक्ष उसी प्रकार शोभायमान हैं। इन सब बगीचों को चारों तरफ से घेरकर सागर की जल रौंस है। चाँदनी चौक से एक रौंस, दिशा के बगीचों के मध्य से होते हुए आकर इस जल रौंस से मिल गयी है। जल रौंस से सागर के जल चबूतरे पर 3–3 सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा शोभायमान है।

टापूमहल की चाँदनी :– चाँदनी के मध्य तीसरे हिस्से में कमर भर ऊँचा चबूतरा है, जिसके चारों दिशा के मध्य से सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। चबूतरे पर सुंदर गिलम, सिंहासन व कुर्सियाँ रखी हुयी हैं। चबूतरे के चारों तरफ बेशुमार बगीचे, नहरें, व चेहेबच्चे हैं। चाँदनी की किनार पर चारों तरफ भोम भर ऊँची दीवाल है, जो परिक्रमा के वास्ते चौड़ी है, इस दीवाल के ऊपर रौंस बन गयी है, जिससे चाँदनी में जगह–जगह भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में कठेड़ा है। इस दीवाल से लगकर चारों दिशा में 4 दरवाजों की कमानें तथा 8 गुम्मट बड़ी रांग के समान ही शोभायमान हैं। इस प्रकार सागर के मध्य आकाश को छूते हुए इन बेशुमार टापू महलों की अद्भुत शोभा दिखाई दे रही है।

महामत कहे सुनो मोमिनो , बीच टापू जल गिर्दवाए ।
ए अति ऊँचे मोहल सुंदर , देखो अपनी रूह जगाए ।। परि. 25/12

सागर के किनारे से टापूमहल में जाने हेतु अनेक प्रकार के जल के जहाज, स्टीमर आदि दिखाई दे रहे हैं। साथ ही अनेक प्रकार के जल के बड़े–बड़े जीव मछलियाँ, दरियाई घोड़े, मगरमच्छ, साँप आदि भी सखियों को अपनी पीठ पर बैठाकर ले जाते हैं। सखियाँ इन जहाजों या जीवों पर सवार होकर कभी टापूमहलों के चारों तरफ घूमती हैं, कभी टापूमहलों के बीच–बीच में से गुजरती हैं। इस प्रकार सागरों में सवारी करने में बहुत ही आनंद आता है।

आगे सैर विध विध के , जब करत ऊपर सागर ।
कई विध के रस पूरन , सब पैरत हैं जानवर ।। परि. 29/68

सागर के किनारे अनेक प्रकार के जल के जीव, इश्क की मस्ती में डूबे दिन–रात धनी के गुणगान, 'पिया–पिया','धनी–धनी' करते रहते हैं। अनेक प्रकार से नाच–गाकर खेल–करतब दिखाकर धनी को रिझाते हैं। सभी मिलकर एक साथ इस प्रकार नाचते हैं, इस प्रकार एक स्वर में गाते हैं कि सखियाँ आनंदित हो जाती हैं।

जीव छोटे बड़े जल के , अपने अपने ख्याल ।
खेलें बोलें दौड़ें कूदें , खावंद को करें खुसाल ।। परि. 28/25
अनेक जानवर जल के , सो केते लेऊँ नाम ।
जल किनारे रटत हैं , पिऊ जस आठों जाम ।। परि. 28/26

नक्शा नं. 106 एक जिमी की शोभा

एक जिमी एक सागर के बराबर लंबी–चौड़ी जगह में है। सागरों के समान ही इसके भी चारों दिशा में 48,000 बगीचे, 48,000 रौंसें तथा चारों कोनों में रेती के मैदान हैं। इन सबके आगे भोम भर ऊँचे चबूतरे पर चारों दिशा व चारों कोनों में कुल आठ महाहवेलियाँ हैं।

एक जिमी की सारी शोभा, रांग की एक महाहवेली के समान ही है। उसी प्रकार 12,000 हवेलियों की 12,000 हारें हैं, जिनकी 14 करोड़ 40 लाख भोमें हैं। चारों दिशा की 48,000 हवेलियों के बाहरी तरफ के 96,000 चबूतरे, चौरस गुर्जों के रूप में ऊपर जाते दिखाई दे रहे हैं। इनके बीच–बीच में 48,000 दरवाजे की कमानें भी शोभायमान हैं। चारों दिशा के मध्य के त्रिपोलियों की जहाँ चौकड़ी पड़ी है, वहाँ चौक में

उसी प्रकार छोटी हवेली है। जिसके मध्य में एक पानी का स्तून (पाईप) है, जो उसी प्रकार टापू महल की चाँदनी तक गया है। जिमी की चाँदनी के मध्य तीसरे हिस्से में, महाहवेली की चाँदनी के समान ही टापूमहल, ताल व देहेलान शोभायमान हैं। देहेलान के चारों तरफ बेशुमार बगीचें, नहरें, चेहेबच्चे सुशोभित हो रहे हैं। चाँदनी की किनार पर चारों तरफ भोम भर ऊँची दीवाल है, जो घूमने–फिरने के लिए चौड़ी है। इस दीवाल के ऊपर रौंस बन गयी है, जिससे चाँदनी पर जगह–जगह भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं। इस दीवाल से लगकर चारों दिशा में 96,000 गुम्मट तथा 48,000 दरवाजों की कमानें शोभायमान हैं। दीवाल के बाहरी किनार पर सुंदर कांगरी व कंगूरों की शोभा है।

जिमी की सारी शोभा वृक्षों की है। वृक्षों के थड़ थंभ के रूप में हैं। डालियों, फूल, पत्तों आदि ने मेहराबों, दीवालों व छतों का रूप धारण कर लिया है। जो रंगबिरंगे नंगो की चित्रकारी व नक्शकारी से युक्त दिख रहे हैं।

इन भोम भोम कै मंदिर , पेड़ डारी कै दीवाल ।
छाया बनी पात फूल की , कै बन मंदिर इन हाल ।। परि.26/49
इक पेड़ दरखत का , कई दरखत तिन पर ।
तिन पर कई मंदिर रचे , कई रेहेत अंदर जानवर ।। परि. 27/52

इन वनों में अनेकों प्रकार के, स्वाद के मेवे हैं। बेशुमार रंगों व खुशबुओं के फूल शोभायमान हैं। इन वृक्षों के मंदिरों में अनेकों जाति व अनेकों रंगों के बेशुमार पशु–पक्षी रहते हैं जो दिन–रात धनी के गुणगान करते रहते हैं। ऐसा लगता है कि जैसे पूरा शहर बसा हो। ये पशु पक्षी उस जिमी के रंग के अनुसार रंग के होते हैं।

एक वृक्ष को बरनन , ऐसे कै वृक्ष तिन बन माहिं ।
तिन पर विस्तार अति बड़ा , सेहेर बसत जानों ताहिं ।। परि. 26/52
कई रंग जिमी केती कहूँ , और कई रंग नूर दरखत ।
सोई जिमी रंग पशु पंखियों, कर तुही तुही जिकर करत।। परि . 43/31

नक्शा नं. 107 बड़ी रांग की चाँदनी पर गुम्मटों, कमानों व कांगरियों की शोभा

पूरे परमधाम को चारों तरफ से घेरकर 32 हांस में बड़ी रांग (किला) शोभायमान है, जिसके अंतर्गत 80 दीवाल (महाहवेलियाँ), 8 सागर व 8 जिमी आते हैं। प्रत्येक हांस की संधि में बाहरी व भीतरी तरफ गोल गुर्ज शोभायमान हैं। इन गुर्जों के भीतर बड़े त्रिपोलिये हैं। जिनके माध्यम से सभी महाहवेलियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं। त्रिपोलियों की चाँदनी के द्वारा सभी (80) महाहवेलियों की चाँदनी भी आपस में मिली हुयी हैं। एक सागर आठ महाहवेलियों के मध्य में स्थित है। उसी प्रकार एक जिमी भी आठ महाहवेलियों के मध्य में है। सागर के मध्य तीसरे भाग में बेशुमार टापूमहल हैं। इन सबकी चाँदनी पर बेशुमार गुम्मट ही गुम्मट दिखाई दे रहे हैं। बेशुमार कलश, कंगूरे, कांगरी, ध्वजा, पताका आदि शोभायमान हो रहे हैं, जो बिजली के बल्बों से भी कोट गुना अधिक जगमगाते हुए बड़ी रांग की आकृति को प्रदर्शित कर रहे हैं। इनके मध्य चाँदनी में बेशुमार बगीचें, नहरें, चेहेबच्चें, देहेलान, ताल, टापूमहल आदि शोभायमान हो रहे हैं। 8 सागरों के टापूमहलों की चाँदनी तथा 8 जिमी की चाँदनी, महाहवेलियों की चाँदनी के बीच–बीच में अलग से दिखायी दे रही हैं। इन पर भी बेशुमार गुम्मट, कलश, ध्वजा आदि शोभित हो रहे हैं।

जब रंगमहल से सुखपालों में बैठकर श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ सागरों में आते हैं। तब सुखपालों से उतरते ही सखियाँ चारों तरफ खेलने के लिए दौड़ पड़ती हैं। कुछ सखियाँ बगीचों, नहरों, चेहेबच्चों के मध्य खेल रही हैं। कुछ सखियाँ महल, मंदिर, गलियों में खेल रहीं हैं, कुछ सखियाँ सागर किनारे रम रही हैं। खेलते–खेलते जब ज्यादा जोश में, उमंग में आ जाती हैं, तो सखियाँ दौड़कर आती हैं और श्रीराजश्यामाजी का हाथ पकड़कर, खींचकर रमने हेतु ले जाती हैं, तब खेल में आनंद और बढ़ जाता है।

टोले जुदे जुदे खेलहीं , रास रमती चढ़ती जोर ।

तहाँ श्यामाश्याम को ल्यावहीं, तब खेल रचे चढ़त है जोर।।बड़ी वृत्त 131/18

इसके पश्चात् श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ महाहवेलियों की चाँदनी में या छज्जों पर विराजमान होकर हांस विलास करते हैं। सागरों में भी अनेकों रंगों व जाति के बेशुमार पशु–पक्षी रहते हैं, जिनके मन में श्रीराजश्यामाजी व सखियों के दर्शन के लिए हमेशा उमंग भरा रहता है। ये पशु–पक्षी श्रीराजश्यामाजी व सखियों के लिए अनेक प्रकार के फल–मेवे , फूलों के हार आदि भेंट में लाते हैं। अनेक प्रकार से वाणी बोलकर, खेल–करतब दिखाकर धनी को रिझाते हैं। जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ आपस में हंस–हंसकर बातें करते हैं, तो देख–देखकर पशु–पक्षी भी बहुत हर्षित होते हैं।

हक हादी रूहें आप में , मीठी बातें करत जब ।
देख खेल खिलौने रीझत , ए अति सुख पावत तब ।। बड़ी वृत्त 116/19

इनमें से कुछ पशु–पक्षी उसी सागर के रहने वाले हैं तथा कुछ दूसरे सागरों से आये हैं। इन सबका रंग उनके सागरों के रंगों के अनुसार होता है, जिससे पता चल जाता है कि ये पशु–पक्षी कहाँ के हैं। ये छोटे बड़े सभी आकार के पशु–पक्षी, सखियों के साथ बड़े प्रेम से खेलते हैं। शेर, बाघ, हाथी, चीते आदि पशु यहाँ के समान हिंसक नहीं होते हैं, ये तो सखियों के प्रेम के प्यासे हैं, प्रेम के ही स्वरूप हैं, श्रीराजश्यामाजी व सखियों की प्रेममयी नजर ही इनकी खुराक है। सभी पशु–पक्षी आपस में भी मिलजुलकर बड़े प्रेमपूर्वक रहते हैं।

हक की मेहर नजर के , उछरंग जाके अंग ।
जुदे कबूं ना होए सकें , जहाँ रहें तहाँ संग ।। बड़ी वृत्त 131/13

इसके पश्चात् सागर में अनेक प्रकार से जल क्रीड़ा करने के बाद, जल के जीवों या जहाजों में सवार होकर टापूमहल जाते हैं। फिर खेलते रमते हुए टापूमहल की चाँदनी पर विराजमान होते हैं। तब यहाँ चाँदनी रात में नृत्य का आनंद लेते हैं। इस समय की शोभा अनुपम होती है। फिर अनेक प्रकार के फल–मेवे आरोग कर रंगमहल वापस जाते हैं।

शुक्ल पक्ष की सैर

पड़वे को धनी नूर सागर पधारे जी रे ।
दूजे को धनी नीर सागर पधारे जी रे ।।
तीजे को धनी क्षीर सागर पधारे जी रे ।
चौथे को धनी दधी सागर पधारे जी रे ।।
पांचम को धनी घृत सागर पधारे जी रे ।
छट्ठी को धनी मधु सागर पधारे जी रे ।।
सातम को धनी रस सागर पधारे जी रे ।
आठम को धनी सब रस सागर में खेले जी रे ।।
नवमे को धनी चार हार हवेली पधारे जी रे ।
दशम को धनी वन की नहरों में खेले जी रे।।
ग्यारस को धनी माणिक पहाड़ पधारे जी रे ।

बारस को धनी जवेरों की नहरों में खेले जी रे ।।
तेरस को धनी चौबीस हांस महल पधारे जी रे ।
चौदश को धनी हौज के टापू में खेले जी रे ।।
पूनम को धनी निजधाम चाँदनी पधारे जी रे ।
बारे हजार श्यामा संगे खेले जी रे ।।

कृष्ण पक्ष की सैर

पड़वे को पाट के घाट पधारे जी रे ।
दूजे को धनी बट पुल में खेले जी रे ।।
तीजे को धनी कुंज वन पधारे जी रे ।
चौथे को धनी फूलबाग में खेले जी रे ।।
पांचम को धनी पश्चिम चौगान पधारे जी रे ।
छट्ठी को धनी लाल चबूतरा ताड़वन खेले जी रे ।।
सातम को धनी बड़ोवन में पधारे जी रे ।
आठम को धनी मधुवन महावन खेले जी रे ।।
नवमे को धनी पुखराज तरहटी पधारे जी रे ।
दशम को धनी पुखराज चाँदनी में खेले जी रे।।
ग्यारस को धनी पुखराज ताल पधारे जी रे ।
बारस को धनी बंगलन में खेले जी रे ।।
तेरस को धनी अधबीच के कुण्ड पधारे जी रे ।
चौदश को धनी ढ़पों चबूतरा मूल कुण्ड में खेले जी रे ।।
अमावस को धनी केल के पुल पधारे जी रे ।
बारे हजार श्यामाजी संग खेले जी रे ।।